

रिमझिम-3

तीसरी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक



यह किताब .... की है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जनवरी 2006 माघ 1927

PD 340T MB

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006

रु 30.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन ऑफसेट, बी-3, सैक्टर 65, नोएडा 201 301 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, हांस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलूर 560 085

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप
पनिहटी
कोलकाता 700 114

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	: *पी.राजाकुमार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: *शिव कुमार*
मुख्य संपादक	: *श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार अधिकारी	: *गौतम गांगुली*
संपादक	: *मरियम बारा*
सहायक उत्पादन अधिकारी	: *अतुल सक्सेना*

सज्जा
निधि वाधवा

आवरण
तापस गुहा

चित्रांकन
अनिल चैत्या वांगड़
निज एनीमेशन एंड डिजाइन
वी. मनीषा
संजीत कुमार पासवान
तापस गुहा
निधि वाधवा
राजेंद्र धोड़पकर
सुजीत कुमार

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् प्राथमिक पाठ्यपुस्तक सलाहकार समूह की

अध्यक्ष प्रोफ़ेसर अनीता रामपाल और हिंदी पाठ्यपुस्तक समिति की मुख्य सलाहकार, डॉ. मुकुल प्रियदर्शिनी की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

20 दिसंबर 2005
नई दिल्ली

बड़ों से दो बातें

बच्चों के हाथ में जैसे ही कोई नई किताब आती है, वे झट से उसे उलटना-पलटना शुरू कर देते हैं। उनमें एक स्वाभाविक उतावलापन होता है – चित्र निहारने का, कविता और कहानियों के बारे में जानने का या स्वयं उन्हें पढ़ डालने का। इस पाठ्यपुस्तक ने उनकी इस स्वाभाविक प्रवृत्ति का भरपूर फ़ायदा उठाने की कोशिश की है। किताब के लिए ऐसी कविताओं और कहानियों को चुना गया है, जिनमें बच्चों की बातचीत, उनकी आदतें, उनके नखरे, ज़िद, उनके सवाल साफ़-साफ़ झलकते हैं। इसलिए बच्चे ऐसी कविताओं या कहानियों से विचार और भावनाओं के स्तर पर एक जुड़ाव महसूस करेंगे।



- कक्षा दो तक बच्चा काफी हद तक **पढ़ना** सीख लेता है, पर कई स्तरों पर भाषा का विकास अभी भी हो रहा होता है। पढ़ने में मुश्किलें अभी भी आती ही हैं। मुश्किल आने पर बच्चा उससे कैसे जूझा; वह कौन-सा तरीका उपयोग में लाया; यह निश्चित करता है कि बच्चा पढ़ने में कितना कौशल प्राप्त कर पाया है। पढ़ने के बढ़ते अनुभव के साथ-साथ इन मुश्किलों का सामना करने का तरीका भी बदल जाता है। बच्चे पढ़ते समय लिखी गई बात की तुलना बार-बार उन बातों से करते हैं जो वे पहले से जानते हैं (पूर्व-ज्ञान)। पठन सामग्री को बच्चा तभी समझ पाता है, जब पूर्व ज्ञान से उस सामग्री का संबंध बनता है। बच्चों को जितना ज़्यादा पढ़ने को मिलेगा, पढ़ने में उनका आत्मविश्वास और रुझान उतना ही बढ़ेगा। इस बात को दृष्टिगत रखते हुए कुछ रचनाएँ केवल पढ़ने और उनमें इत्मीनान से डूबने के लिए ही दी गई हैं। ये रचनाएँ कहीं न कहीं किसी और रचना से जुड़ी हैं – कहीं विषय-वस्तु के स्तर पर तो कहीं विधा के स्तर पर। इस तरह कहीं पर बच्चे एक विषय की समझ को बढ़ाकर उसे

और सुदृढ़ कर पाएँगे तो कहीं और नई जानकारी इकट्ठा कर पाएँगे। इन्हें पढ़ने में बच्चों को रस तो मिलेगा ही, उनमें पढ़ने के प्रति रुचि, आदत तथा ललक भी जगेगी।



- पाठों के अंत में **अभ्यास प्रश्न** दिए गए हैं। इन अभ्यासों को विषय सामग्री के विविध पहलुओं की जटिलता के स्तर को ध्यान में रखते हुए दिया गया है। इनमें से कई प्रश्नों का उद्देश्य सूचना प्राप्त करना या बच्चों की जानकारी मापना नहीं बल्कि उन्हें बोलने और चर्चा करने का अवसर देना है। ऐसे अभ्यासों को धैर्यपूर्वक करवाएँ। किताब में दिए गए ऐसे प्रश्न केवल उदाहरण के रूप में है। आप ऐसे अन्य प्रश्न अपनी कल्पना से भी जोड़ सकती हैं। अभ्यास प्रश्नों के ज़रिए पाठ से जुड़ी भाषा की बारीकियों की ओर भी बच्चों का ध्यान खींचने का प्रयास किया गया है। अभ्यासों के अंतर्गत बच्चों को कई चीज़ें बनाने को दी गई है। इनसे स्वयं बनाने का आनंद तो बच्चों को मिलेगा ही, साथ ही निर्देश पढ़कर समझने की क्षमता का भी विकास होगा। किताब में अनेक गतिविधियाँ दी गई हैं। आप अनेक तरीकों से उनका इस्तेमाल कर सकती हैं।
- अभ्यास सिर्फ यह आँकने के लिए नहीं होते कि कहानी, कविता या पाठ बच्चों को कितना याद है। अभ्यास उन्हें पाठों से **भावनात्मक रूप से जुड़ने का मौका** भी देते हैं। जब तक बच्चे किसी पाठ से भावनात्मक रूप से नहीं जुड़ेंगे, उसे अपने अनुभव से नहीं जोड़ सकेंगे तब तक उनकी पाठ की 'समझ' पूरी नहीं होगी। पूरी 'समझ' बनने पर ही बच्चे तथ्यपरक प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य प्रश्नों के उत्तर भी दे सकेंगे।



- **कल्पना** करना या **अभिव्यक्ति** का अर्थ सिर्फ कहानी या कविता लिखना ही नहीं होता है। जब हम दूसरों के नज़रिए से घटना को देखते हैं, कहानी के अलग-अलग मोड़ों पर अनुमान लगाते हैं, कहानी खत्म होने के बाद भी कहानी सुनाते हैं, कहानी में घटित घटनाओं की तस्वीर अपने मन में बनाते हैं तो ये सभी हम कल्पना और अभिव्यक्ति की सहायता से करते हैं।



- बच्चों को अभिव्यक्ति का भरपूर मौका मिले, इसके लिए उन्हें सिर्फ़ पाठों की घटनाओं तक सीमित न रखें। बच्चों को नई-नई जगहों से, **नए-नए स्रोतों से जानकारी** इकट्ठी करने दें, उसके बारे में लिखने और बात करने दें। ऐसा करने से बच्चे उन ज़रूरतों से जुड़ी भाषा का इस्तेमाल करना सीखेंगे। नई जानकारियाँ एकत्रित करना, उनका विश्लेषण और उन पर तर्क करना बच्चों को अन्य विषयों की परिधि में ले जाते हैं।



- कल्पना के अलावा बच्चे भाषा का उपयोग **तर्क** करने, गौर से देखी गई चीज़ों पर बात करने और उनका **विश्लेषण** करने के लिए करते हैं।



बच्चों में ये कौशल जितने विकसित होंगे, वे उतने ही स्पष्ट, सटीक और तार्किक ढंग से भाषा का इस्तेमाल कर सकेंगे। उनकी अभिव्यक्ति उतनी ही प्रभावशाली होगी।

- बच्चे भले ही भाषा के नियमों और व्याकरण की शब्दावली की बात न कर सकें पर इन नियमों को वे घर और अपने आसपास भाषा सुनते-सुनते सहज रूप से सीख जाते हैं। सहज रूप से भाषा के नियम सीखने की यह प्रक्रिया स्कूल में भी जारी रहनी चाहिए। इसलिए इस किताब में व्याकरण की बात अलग से न करके पाठों के संदर्भ में की गई है।



यहाँ बच्चे 'बहुवचन' शब्द नहीं जानते पर उनका सार्थक प्रयोग करना बखूबी जानते हैं। भाषा केवल व्याकरण तक सीमित नहीं होती, एक बात को कहने के कई तरीके हो सकते हैं और यही खूबी भाषा को अधिक समृद्ध बनाती है। इसके भी भरपूर अवसर बच्चों को किताब की परिधि में और उसके बाहर दिए जाने चाहिए।

- **कार्टून** बच्चों को गुदगुदा कर किताब की ओर आकर्षित करते हैं। कार्टून देखने में बच्चों को आनंद तो आता ही है साथ ही अनजाने में वे भाषा भी सीखते हैं। दूसरी किताबों में बने कार्टूनों पर बच्चों से चर्चा करें। बच्चों से स्वयं भी कार्टून बनाने को कहें।
- किताब में अनेक **चित्र** दिए गए हैं। भाषा सीखने में चित्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चित्र बच्चों को आकर्षित तो करते ही हैं, सृजनशीलता और विश्लेषण को भी प्रोत्साहित करते हैं। किताब में दिए गए चित्र विविध शैलियों में हैं। चित्रों की शैली एवं बारीकियों की ओर बच्चों का ध्यान दिलवाएँ और चित्रों पर बच्चों से चर्चा करें।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, प्राइमरी पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

अनीता रामपाल, *प्रोफ़ेसर,* केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय।

मुख्य सलाहकार

मुकुल प्रियदर्शिनी, *प्राध्यापिका,* लेडी श्रीराम कॉलेज, नई दिल्ली।

कार्य समिति

अक्षय कुमार दीक्षित, *शिक्षक,* नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली।

उषा द्विवेदी, *मुख्य अध्यापिका,* केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

कृष्ण कुमार, *निदेशक,* एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

मंजुला माथुर, *प्रवाचक,* सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

मालविका राय, *शिक्षिका,* हैरीटेज़ स्कूल, डी–II, वसंत कुंज, नई दिल्ली।

सोनिका कौशिक, *प्रवक्ता,* जीसस एंड मेरी कॉलेज, नई दिल्ली।

सहयोग समिति

आरती गौनियाल, *सहायक शिक्षिका,* सर्वोदय विद्यालय, कैलाश एन्कलेव, सरस्वती विहार, नई दिल्ली।

योगिता शर्मा, *सहायक शिक्षिका,* नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, मधु विहार, नई दिल्ली।

रीता भगत, *शिक्षिका,* केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर 4, आर.के. पुरम, नई दिल्ली।

श्रीप्रसाद, *बाल साहित्यकार,* ब्रजभूमि, एन. 9/87, डी 77, जानकीनगर, ब्रजडीहा, वाराणसी।

सदस्य समन्वयक

लता पाण्डे, *प्रवाचक,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

आभार

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए हम प्रोफ़ेसर कृष्ण कांत वशिष्ठ, *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने हर संभव सहयोग दिया।

परिषद उन समस्त रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; निदेशक, चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; निदेशक, नेशनल काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नालॉजी कम्यूनिकेशन, नई दिल्ली; प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; प्रकाशक, नवनीत पब्लिकेशंस इंडिया लिमिटेड, दादर, मुंबई; प्रकाशक, राजपाल एंड संस, दिल्ली; मुख्य संपादक, रत्नासागर प्रकाशन, दिल्ली; प्रकाशक, सफ़दर हाशमी मेमोरियल ट्रस्ट, नई दिल्ली; निदेशक, संस्था प्रथम, दिल्ली; प्रकाशक, एकलव्य, भोपाल; श्रीमती पूनम सेवक, बरेली के हम आभारी हैं। नेशनल मिशन फॉर मैन्यूस्क्रिप्ट्स, नई दिल्ली द्वारा सहयोग प्रदान किए जाने के लिए हम आभार व्यक्त करते हैं।

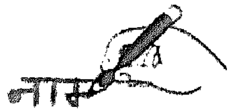
निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली एवं संग्रहालयाध्यक्ष, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के प्रति भी हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, जिन्होंने अपनी संस्था के पुस्तकालय के उपयोग की हमें सहर्ष अनुमति दी।

मुख्य अध्यापक, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, कापसहेड़ा, समालखा एवं बिजवासिन ने हमें अपने विद्यालयों में बच्चों तथा शिक्षकों से किताब के संबंध में बातें करने का अवसर दिया, इसके लिए हम आभार व्यक्त करते हैं।

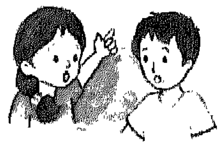
पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए ज्योति गोयल, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; अरविंद शर्मा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; रेखा सिन्हा, *प्रूफ़ रीडर*; राधा, *कॉपी एडीटर*; सुशीला शर्मा एवं निर्मल मेहता, *सहायक कार्यक्रम समन्वयक*; शाकम्बर दत्त, *इंचार्ज*, कंप्यूटर कक्ष, ओमप्रकाश ध्यानी, अशोक एवं मनोहर लाल, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., आर.सी.दास, *फोटोग्राफर*, सी.आई.ई.टी. के भी हम आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं, इसके लिए हम आभारी हैं।

किताब में आए चिह्न

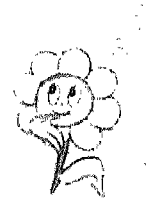
तुम्हें किताब में जगह-जगह ये चिह्न दिखाई देंगे। इनका मतलब यहाँ दिया गया है।



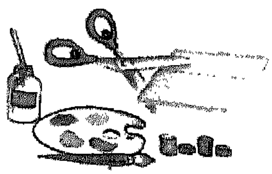
लिखो



बातचीत के लिए



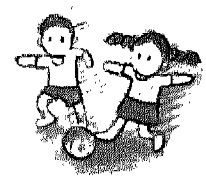
तुम्हारी कल्पना से



बनाओ



करो



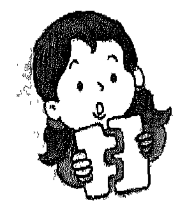
खेल



खोजो



शिक्षकों के लिए



मिलाओ



सिर्फ पढ़ने के लिए



ढूँढो और लिखो

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता**,

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में** व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

कहाँ क्या है



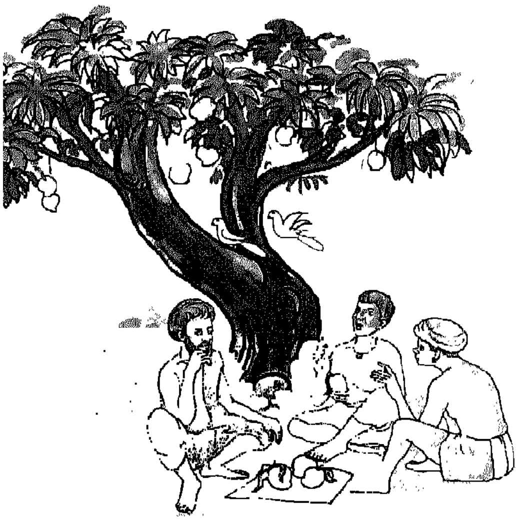




---

* तारांकित रचनाएँ केवल पढ़ने के लिए दी गई हैं।







1. कक्कू

नाम है उसका कक्कू।
कक्कू माने कोयल होता
लेकिन यह तो दिनभर रोता
इसीलिए हम इसे चिढ़ाते
कहते इसको सक्कू
नाम है उसका कक्कू।





कोयल, माने मिसरी जैसी
मीठी जिसकी बोली
यह तो जाता भड़क, करो जब
इससे तनिक ठिठोली
इसीलिए तो कभी-कभी हम
कहते इसको भक्कू
नाम है उसका कक्कू।



कक्कू वह जो गाना गाए
बात-बात में जो चिढ़ जाए
रहता मुँह जो सदा फुलाए
गाना जिसको ज़रा न आए
ऐसे झगड़ालू को अब से
क्यों न कहें हम झक्कू
नाम है उसका कक्कू।



रमेशचंद्र शाह

नाम ही नाम



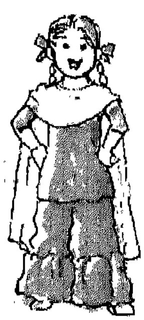
- तुम अपना नाम लिखो और बताओ कि तुम्हारे नाम का क्या मतलब है?

तुम्हारे कितने नाम

तुम्हें लोग और किन-किन नामों से बुलाते हैं?

		
[illegible]	[illegible]	[illegible]
....	....	....
....	....	....

- सोचो और लिखो कि किसी-किसी को नीचे दिए गए नामों से क्यों बुलाया जाता होगा?

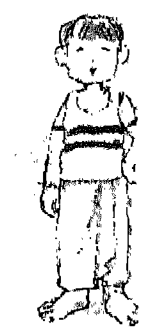


गप्पू ....

भोली ....

छुटकी ....

गोलू ....



- अब बताओ तुम्हारा कौन-सा दोस्त, कौन-सी सहेली



भक्कू है ....

झक्कू है ....

गप्पू है ....



अब कविता का समय

कक्कू वह जो सदा हँसाए

रोना उसे ज़रा न ....

चिड़िया के संग गाना ....

संग मोर के ....

इसीलिए तो कभी-कभी हम

कहते उसको .... ।



कक्कू क्या है?

कक्कू कोयल जैसा क्यों नहीं है? लिखो।

....

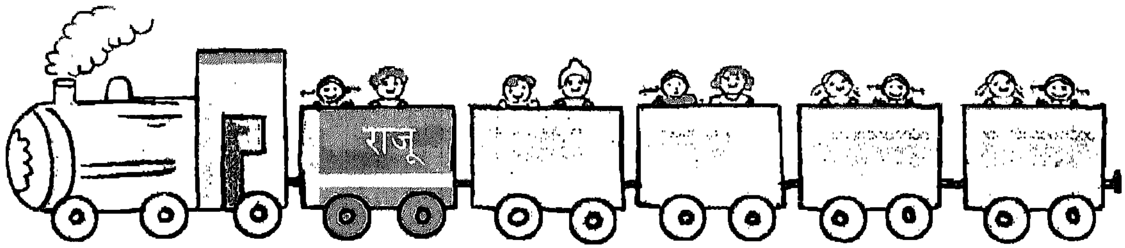
....

....



नामों की रेल

पाँच-पाँच बच्चों की टोली बना लो। अब अपनी-अपनी टोलियों के बच्चों के नाम रेल के डिब्बों में लिखो।



वर्णमाला याद है न? चलो, अब इन नामों को वर्णमाला के हिसाब से क्रम में लगाते हैं।

....

चिढ़ाना

क्या तुम्हें भी कोई चिढ़ाता है? तब तुम्हें कैसा लगता है?कक्षा में चर्चा करो।



गेंद का मन



राजेन्द्र धोड़पकर

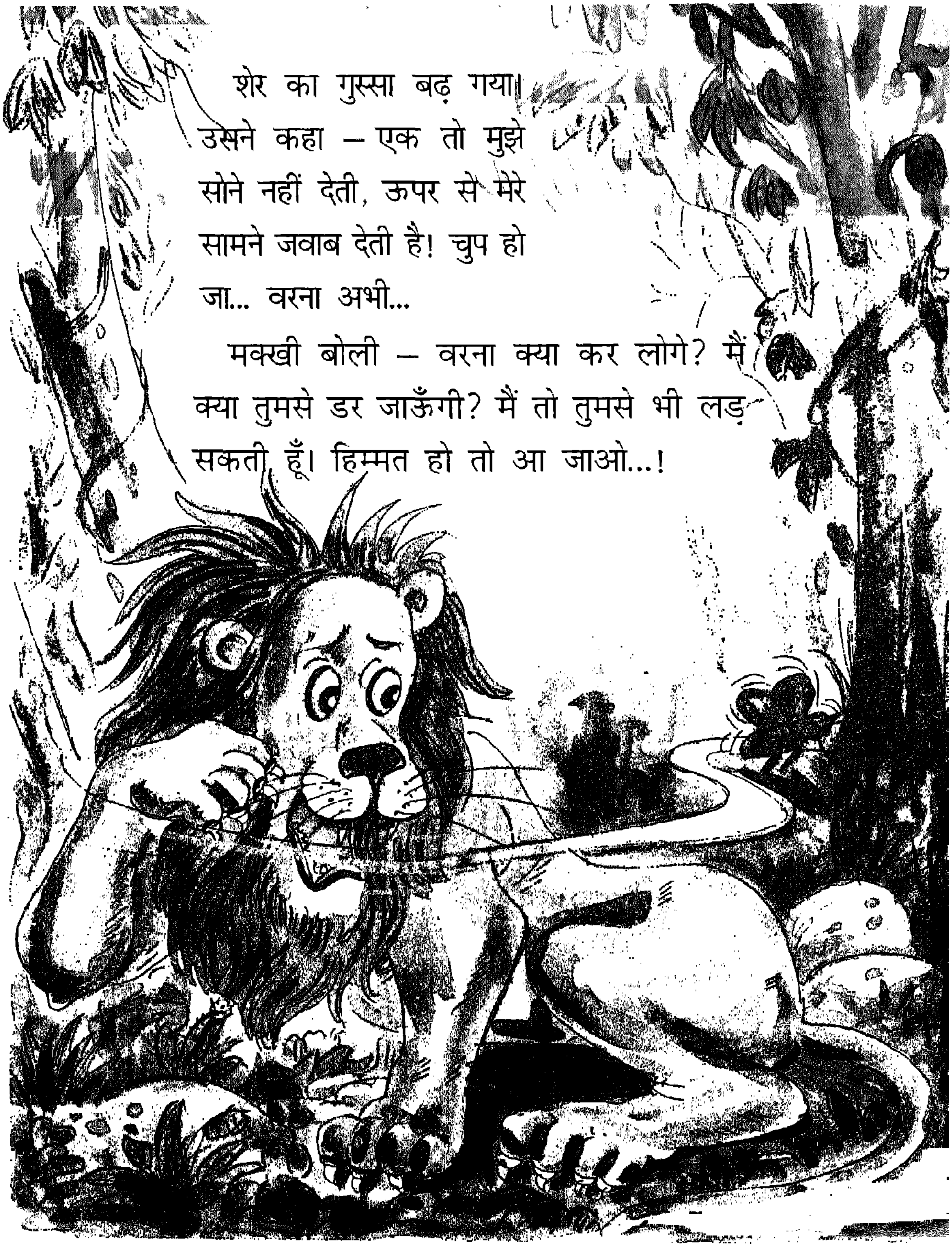
2. शेखीबाज़ मक्खी

एक था जंगल। उस जंगल में एक शेर भोजन करके आराम कर रहा था। इतने में एक मक्खी उड़ती-उड़ती वहाँ आ पहुँची। शेर ने दो-तीन दिनों से स्नान नहीं किया था। इसलिए मक्खी शेर के कान के एकदम पास **भिन-भिन-भिन** करने लगी। शेर को बहुत मुश्किल से नींद आई थी। उसने पंजा उठाया। मक्खी उड़ गई ... लेकिन फिर से शेर के कान के पास **भिन-भिन** शुरू हो गई। अब शेर को गुस्सा आया।



वह दहाड़ा—अरे मक्खी, दूर हट। वरना तुझे अभी जान से मार डालूँगा।

मक्खी ने धीरे से कहा— छि... छि... ! जंगल के राजा के मुँह से ऐसी भाषा कहीं शोभा देती है?


शेर का गुस्सा बढ़ गया। उसने कहा – एक तो मुझे सोने नहीं देती, ऊपर से मेरे सामने जवाब देती है! चुप हो जा... वरना अभी...
मक्खी बोली – वरना क्या कर लोगे? मैं क्या तुमसे डर जाऊँगी? मैं तो तुमसे भी लड़ सकती हूँ। हिम्मत हो तो आ जाओ...!

शेर आग बबूला हो उठा। उसने कान के पास पंजा मारा। मक्खी तो उड़ गई पर कान ज़रा छिल गया। मक्खी उड़कर शेर की नाक पर बैठी तो उसने मक्खी को फिर पंजा मारा। मक्खी उड़ गई। अबकी बार शेर की नाक छिल गई।

मक्खी कभी शेर के माथे पर बैठती, कभी गाल पर, तो कभी गर्दन पर।

शेर पंजा मारता जाता और खुद को घायल करता जाता... मक्खी तो फट से उड़ जाती।

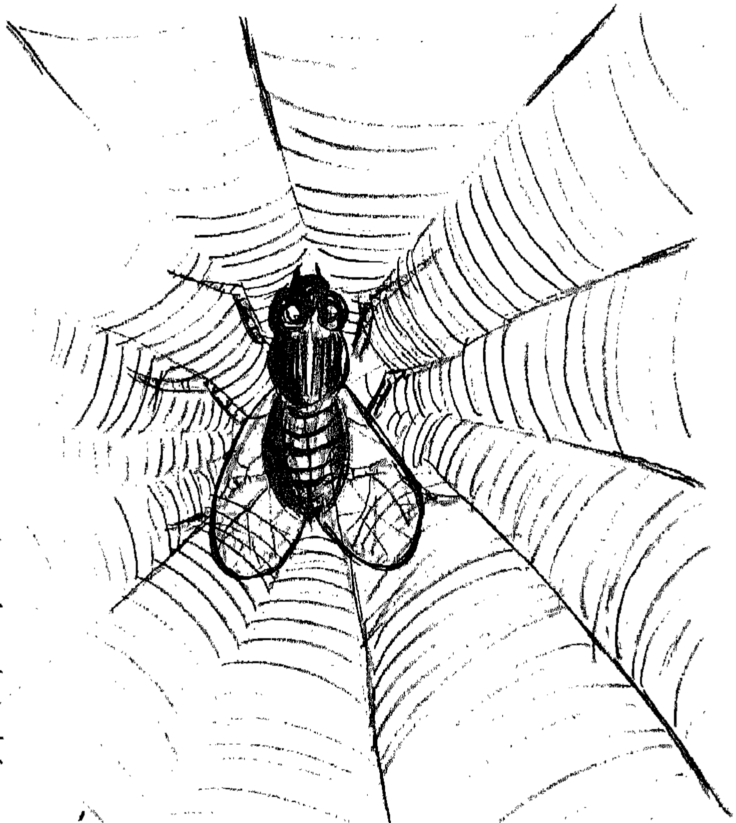
अंत में शेर ऊब गया, थक गया। वह बोला – मक्खी बहन, अब मुझे छोड़ो। मैं हारा और तुम जीतीं, बस।

मक्खी घमंड में चूर होकर उड़ती-उड़ती आगे बढ़ी। सामने एक हाथी मिला। मक्खी ने कहा – अरे हाथी... मुझे प्रणाम कर... मैंने जंगल के राजा शेर को हराया है। इसलिए जंगल में अब मेरा राज चलेगा। हाथी ने सोचा, इस पागल मक्खी से बहस करने में समय कौन बर्बाद करे।

हाथी ने सूँड़ ऊपर उठाकर मक्खी को प्रणाम किया और आगे बढ़ गया। सामने से आ रही लोमड़ी ने यह सब देखा। लोमड़ी मंद-मंद मुस्कराने लगी। इतने में मक्खी ने लोमड़ी से कहा – अरे ओ लोमड़ी, चल मुझे प्रणाम कर! मैंने जंगल के राजा शेर और विशालकाय हाथी को भी हरा दिया है।

लोमड़ी ने उसे प्रणाम किया। फिर धीरे से बोली –

धन्य हो मक्खी रानी, धन्य हो! धन्य है आपका जीवन और धन्य हैं आपके माता-पिता। लेकिन मक्खी रानी, उधर वह मकड़ी दिखाई दे रही है न, वह आपको गाली दे रही थी। उसकी ज़रा खबर लो न!



यह सुनकर मक्खी गुस्से से लाल हो उठी।

मक्खी बोली – उस मकड़ी को तो मैं चुटकी बजाते खत्म कर देती हूँ।

यह कहते हुए मक्खी मकड़ी की तरफ झपटी और मकड़ी के जाले में फँस गई। मक्खी जाले से छूटने की ज्यों-ज्यों कोशिश करती गई त्यों-त्यों और भी अधिक फँसती गई... अंत में वह थक गई, हार गई। यह देखकर लोमड़ी मंद-मंद मुस्कराती हुई वहाँ से चलती बनी।



योगेश जोशी

कैसी लगी कहानी?

कक्षा में साथियों के साथ बातचीत करो।

- तुम्हें कहानी में कौन सबसे अच्छा लगा? क्यों?
- मक्खी मकड़ी के जाल में फँस गई थी। फिर क्या हुआ होगा? कहानी आगे बढ़ाओ।

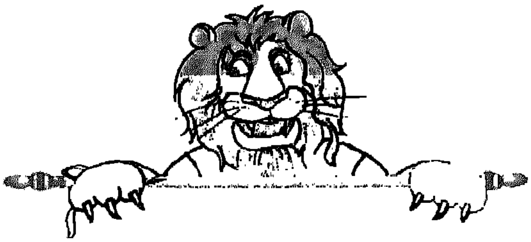
कहानी का नाम

- अगर कहानी का नाम मक्खी को ध्यान में न रखकर लोमड़ी और शेर को ध्यान में रखकर लिखा जाता तो उसके क्या-क्या नाम हो सकते थे?
- अब तुम कहानी के लिए एक और नया शीर्षक सोचो। यह शीर्षक कहानी के किसी पात्र पर नहीं होना चाहिए। (कहानी की किसी घटना के बारे में शीर्षक हो सकता है।)

शेर की जगह तुम...

- मक्खी ने जब शेर को जगाया तो वह आग बबूला हो गया। तुम्हें जब कोई गहरी नींद से जगाता है तो तुम क्या करते हो?
- मक्खी उड़ाते-उड़ाते शेर ऊब गया था। तुम क्या करते-करते ऊब जाते हो?
- मान लो तुम शेर हो। मक्खी ने तुम्हारे साथ जो कुछ भी किया वह लोमड़ी को बताओ।

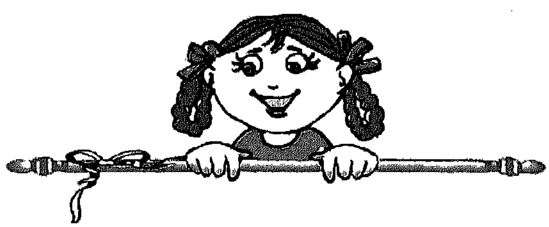
- शेर तो भोजन करके आराम कर रहा था। तुम खाना खा कर क्या करते हो?
  - ✧ अक्सर ....
  - ✧ कभी-कभी ....
- शेर ने भोजन में क्या खाया होगा? तुम क्या-क्या खाते हो?



....

....

....



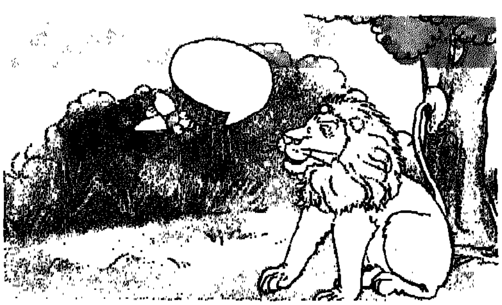
....

....

....

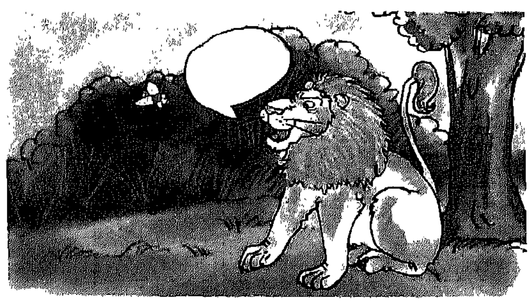
किसने क्या कहा

नीचे कहानी से जुड़ी तस्वीरें गई हैं। उसमें कुछ न कुछ बोला जा रहा है। सोचो और लिखो कौन क्या बोल रहा है?



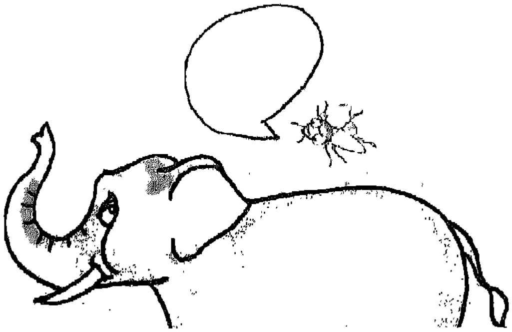
....

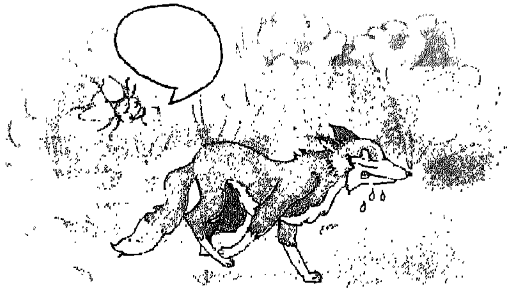
....



....

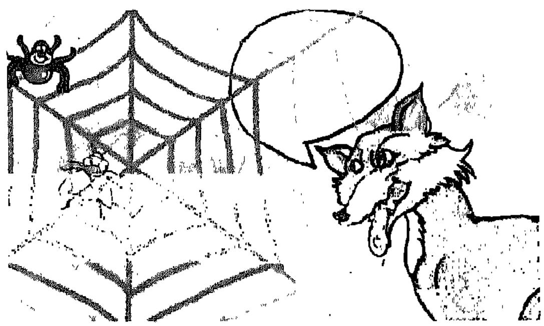
....





....

....



....

....

कौन क्या?

कहानी के हिसाब से बताओ।

घमंडी .... डरपोक ....

चतुर .... सबसे चतुर ....

समझदार .... आलसी ....

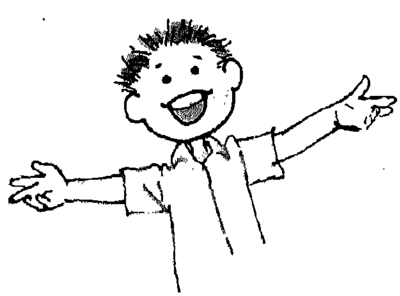
चुटकी बजाते ही

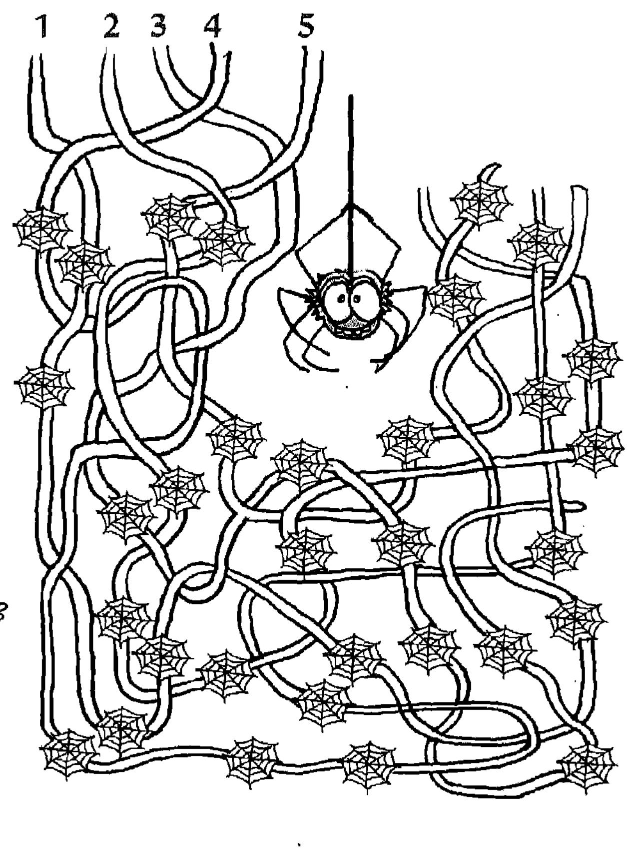
चुटकी बजाने का मतलब होता है **'बहुत जल्दी कर लेना।'**

- तुम कौन-कौन से काम चुटकी बजाते ही कर लेते हो? बताओ।
- अब तुम अपनी एक टोली बनाओ। तुममें से एक लीडर बनेगा। वह बाकी बच्चों को करने के लिए काम देगा जिसे चुटकी बजाते ही करना होगा। जैसे - बाहर से पाँच पत्तियाँ लाओ और उनके नाम बताओ या शेखीबाज़ मक्खी के पात्रों के नाम बताओ। जो सबसे जल्दी कर ले वह लीडर बने।

रास्ता ढूँढ़ो

यह मकड़ी उस रास्ते से जाना चाहती है, जिस पर चलकर सबसे ज़्यादा जाले मिलें। अंदर जाने के लिए **1, 2, 3, 4** और **5** में से कौन-सा रास्ता होगा?





भाषा की बात

- इन वाक्यों को अपने ढंग से लिखकर बताओ।
  - ✧ शेर आग-बबूला हो उठा।
  - ✧ उसकी ज़रा खबर लो न।
  - ✧ उस मकड़ी को तो मैं चुटकी बजाते ही खत्म कर देती हूँ।
  - ✧ जंगल के राजा के मुँह से ऐसी भाषा कहीं शोभा देती है!

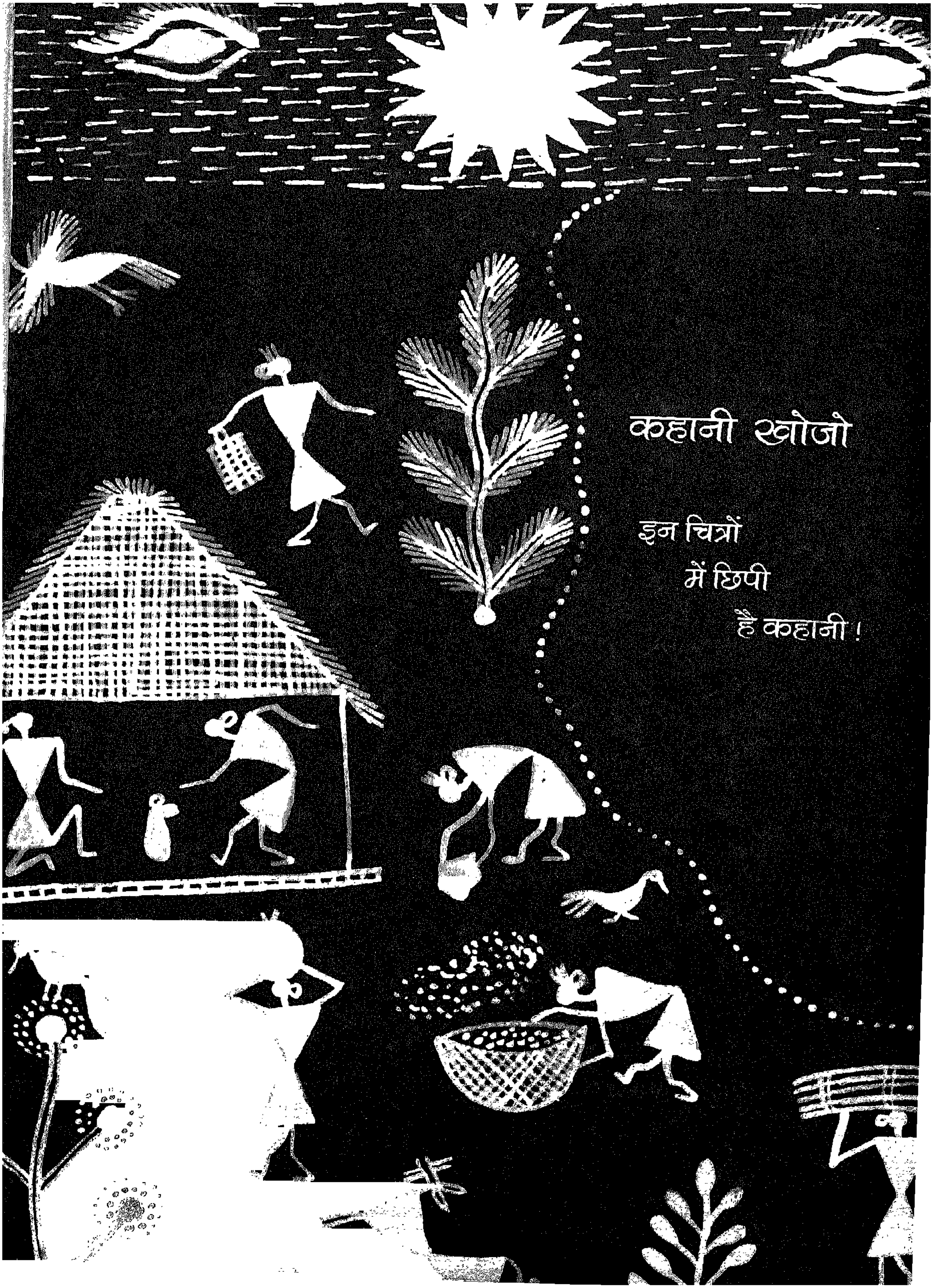
उड़ते-मँडराते

- इनके पास तुमने अक्सर किन-किन को उड़ते-मँडराते देखा है?
  - ✧ जलते बल्ब के आसपास ....
  - ✧ खेतों में ....
  - ✧ इकट्ठे पानी के ऊपर ....
  - ✧ फूलों पर ....
  - ✧ कचरे के ढेर पर ....
  - ✧ हलवाई की मिठाइयों पर ....

कौन है शेखीबाज़?

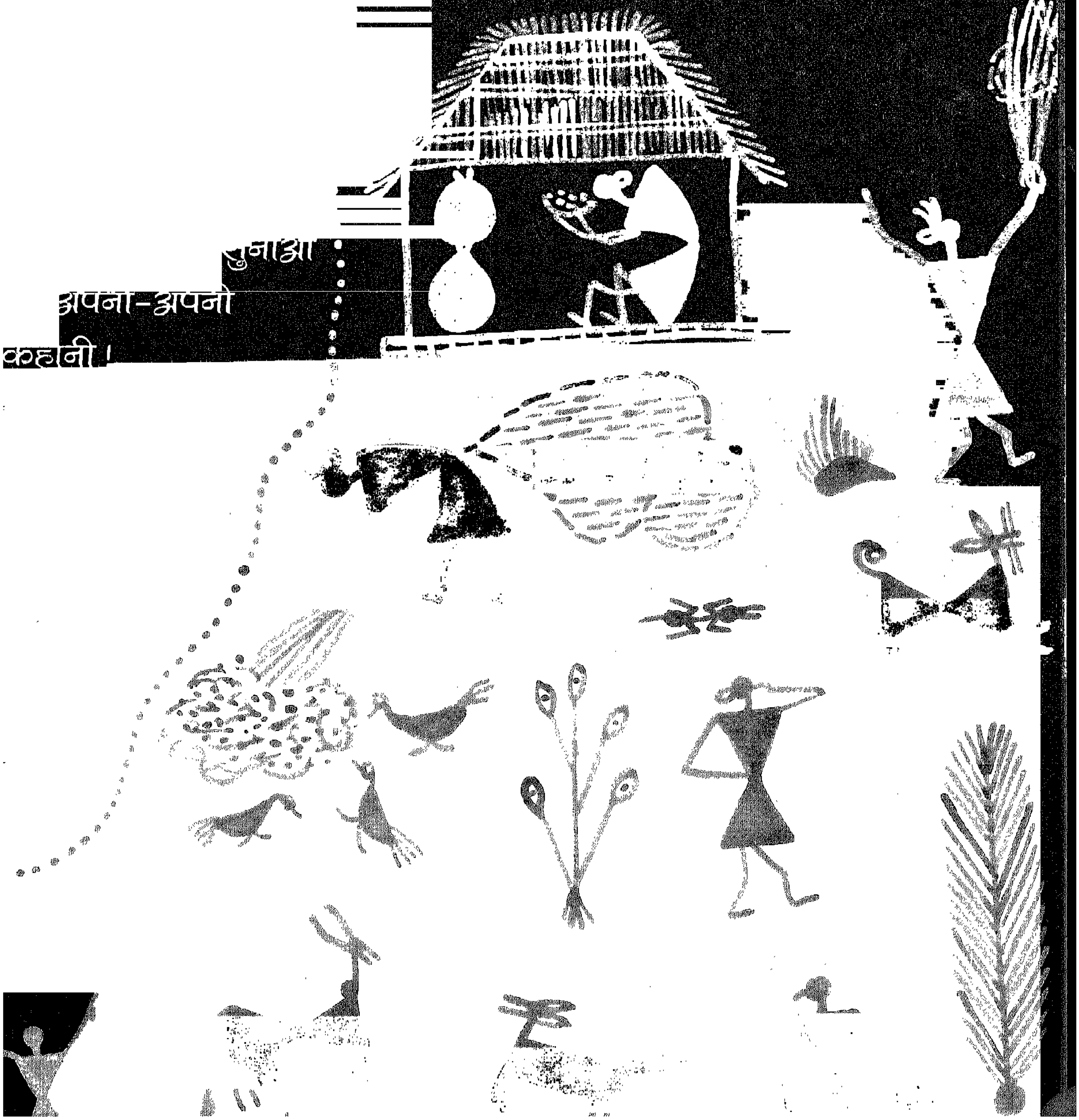
क्या तुम किसी शेखीबाज़ को जानते हो? कौन है वह? वह किस चीज़ के बारे में शेखी बघारता है?




कहानी खोजो
इन चित्रों
में छिपी
है कहानी !

...नों को बताएँ कि यह चित्र महाराष्ट्र की वरली
... में है। चित्र की बारीकियों पर ध्यान दिलाते हुए
...नों से चर्चा करें।

सुनाओ अपनी-अपनी कहानी।



3. चाँद वाली अम्मा

तुम शरारत तो करती ही होगी? कौन-कौन सी शरारत करती हो?
इन चीज़ों का इस्तेमाल तुम कोई शरारत करने के लिए कैसे करोगी?

झाड़ू पंख कागज़ गुब्बारा

बहुत समय पहले की बात है। एक बूढ़ी अम्मा थी। बिल्कुल अकेली! उसका अपना कोई न था। घर का कामकाज उसे खुद ही करना पड़ता। सुबह उठकर कुएँ से पानी लाना, खाना बनाना आदि। उसके साथ एक परेशानी थी। वह रोज़ सुबह उठकर जब घर में झाड़ू लगाती तब तक



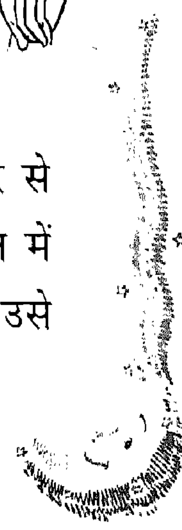
तो सब ठीक रहता पर जैसे ही वह आँगन में जाती और झाड़ू लगाने के लिए झुकती, तभी आसमान आकर उसकी कमर से टकराता।

अम्मा उसे घूरकर देखती तो वह थोड़ा हट जाता। फिर वह जैसे ही दुबारा झुकती, आसमान फिर अपनी हरकत दोहराता।

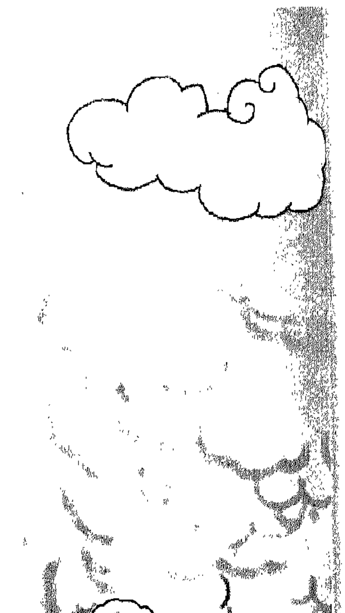
एक दिन, दो दिन, तीन दिन। लगातार यही क्रम चलता रहा। अम्मा झाड़ू लगाए और आसमान उसे तंग करे।



एक दिन कुएँ पर पानी भरने को लेकर अम्मा का किसी और से झगड़ा हो गया। अम्मा ज़रा गुस्से में थी। वह झाड़ू उठाकर आँगन में गई और जैसे ही झुकी, आसमान ने अपनी आदत के अनुसार उसे फिर छेड़ा।



अम्मा ने आव देखा न ताव और कसकर एक झाड़ू आसमान को दे मारी। आसमान झट हट गया। पर वह भी अपनी आदत से मजबूर था। दूसरी बार फिर अम्मा के झुकते ही टक्कर मारने लगा। अम्मा ने फिर पूरी ताकत से उस पर वार किया।









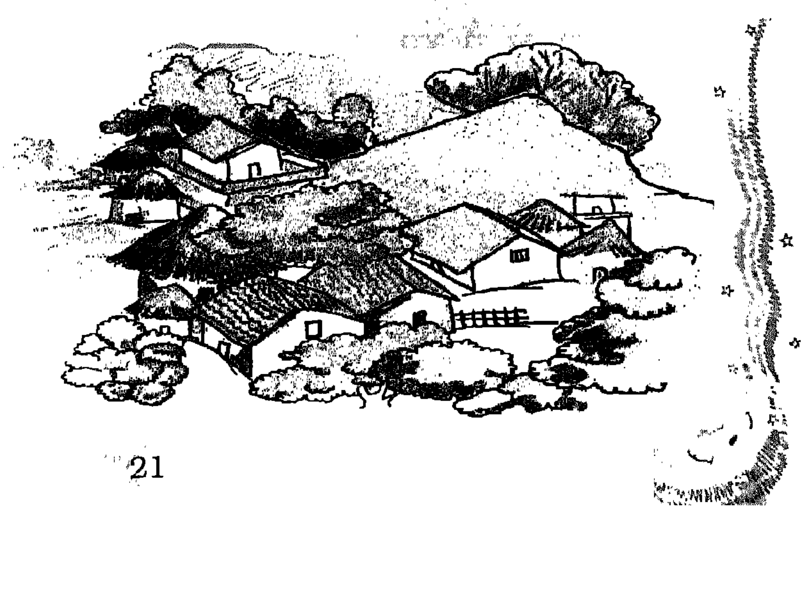
आसमान को शरारत सूझी। इस बार उसने झाड़ू पकड़ ली। उधर अम्मा भी झाड़ू पकड़े थी। रस्साकशी शुरू हो गई। झाड़ू का ऊपर वाला हिस्सा आसमान पकड़े हुए था तो नीचे वाला अम्मा, दोनों छोड़ने को तैयार नहीं थे। अम्मा चिल्लाई – छोड़ मेरा झाड़ू ! मेरे पास एक यही झाड़ू है।

तब भी आसमान ने नहीं छोड़ा। बूढ़ी अम्मा कब तक रस्साकशी करती ...... थक गई।

आसमान ने झाड़ू खींचना नहीं छोड़ा। अब वह झाड़ू के साथ ऊपर उठने लगा। उसके साथ-साथ झाड़ू पकड़े हए अम्मा भी ऊपर जाने लगी। वह चिल्लाई –

मुझे नीचे छोड़ दे!

आसमान ने कहा – अम्मा, अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा। ले चलूँगा ऊपर। वहीं झाड़ू लगाना।





अम्मा अब झाड़ू नहीं छोड़ सकती थी, क्योंकि वह बहुत ऊपर पहुँच चुकी थी। तभी उसे वहाँ चाँद दिख गया। झट अम्मा ने पैर बढ़ाया और चाँद पर चढ़ गई, पर झाड़ू नहीं छोड़ी। आसमान को फिर शरारत सूझी। उसने सोचा – अम्मा तो चाँद पर चढ़ गई है। यदि चाँद उसकी मदद करेगा तो मैं हार जाऊँगा। इसे यहीं रहने दूँ।

ऐसा सोचकर उसने झाड़ू छोड़ दिया। अम्मा झाड़ू सहित चाँद पर रह गई। वह इतनी थक गई थी कि झाड़ू पकड़े-पकड़े ही चाँद पर बैठ गई। आसमान ऊपर चला गया। उस दिन से आज तक बूढ़ी अम्मा झाड़ू पकड़े चाँद पर बैठी है।

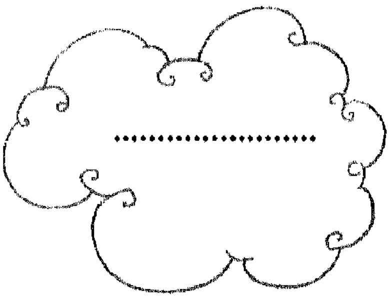
तारा निगम

तुम्हारी कल्पना से

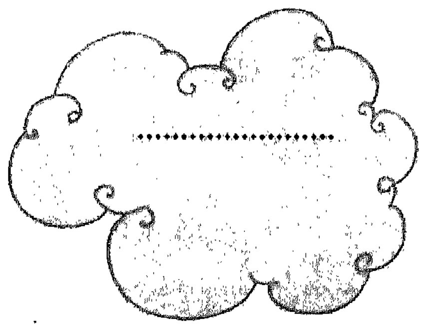
- बूढ़ी अम्मा चाँद पर क्यों चढ़ गई होगीं?
- चाँद वाली अम्मा झाड़ू क्यों नहीं छोड़ना चाहती थीं?
- चित्रों को देखकर बताओ कि अम्मा के साथ कौन-कौन रहता होगा?
- आसमान बार-बार आकर अम्मा की कमर से क्यों टकराता था? तुम्हें क्या लगता है?

रूठना-मनांना

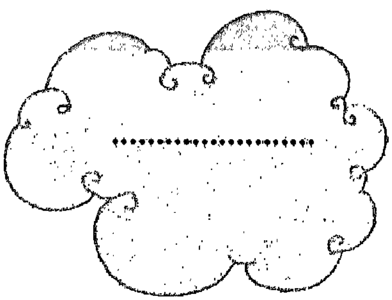
जब बूढ़ी अम्मा उड़ी जा रही थी तो उन्होंने आसमान को हर तरह से मनाने की कोशिश की। बताओ, उन्होंने क्या-क्या कहा होगा?



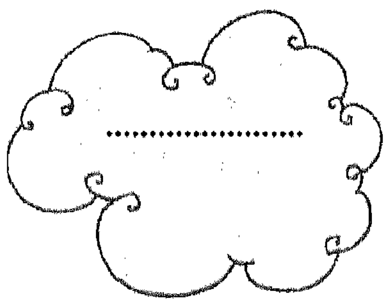
घबराकर



गिड़गिड़ाकर



गुस्से से



तरकीब सूझने पर



घूरना

- **अम्मा उसे घूरकर देखती तो आसमान थोड़ा हट जाता।**

  कब-कब ऐसा होता है जब तुम्हें कोई घूरकर देखता है।

  जैसे : मेरा दोस्त मुझे घूरकर देखता है जब मैं उसका मज़ाक उड़ाता हूँ।

  मेरे पिता ....

  मेरे शिक्षक ....

  मेरी बहन/मेरा भाई ....

दम लगा के हईशा

रस्साकशी के खेल में दो टोलियों के बीच में खूब खींचातानी होती है। कुछ और खेलों के नाम लिखो जिनमें दो टोलियाँ खेलती हों।

....

साफ़-सफ़ाई

- घर की सफ़ाई करने के लिए किन-किन चीज़ों का इस्तेमाल होता है?
- किन-किन मौकों पर तुम्हारे घर का सारा सामान हटाकर खूब ज़ोर-शोर से सफ़ाई होती है?
- ये मौके खास क्यों हैं?
- सफ़ाई के काम से जुड़े हुए शब्द सोचो और लिखो। जैसे - झाड़ना।

....

- बूढ़ी अम्मा अकेली रहती थीं। उन्हें घर का सारा काम अकेले ही करना पड़ता होगा। उन कामों की सूची बनाओ जो उन्हें सुबह से शाम तक करने पड़ते होंगे। **यह भी बताओ कि तुम्हारे घर में ये काम कौन-कौन करता है?**

बूढ़ी अम्मा के काम	मेरे घर में कौन करता है
....	....
....	....
....	....
....	....

- **तुम कौन-से काम करते हो? अपने कामों के बारे में बताओ।**

घर के काम	घर से बाहर के काम
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

कितने नाम, कितने काम?

- इस कहानी में नाम वाले और काम वाले कई शब्द आए हैं। उन्हें छाँटकर नीचे तालिका में लिखो।

....	....
....	....
....	....
....	....

तुम्हारी शरारत

- अपनी किसी शरारत के बारे में लिखो।

अरे, आसमान की शरारत तो कुछ भी नहीं! मैंने तो एक बार ....

....

....

....

....

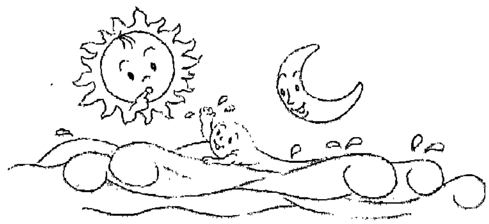
....

तुम्हें चाँद में क्या दिखाई देता है? बनाओ।



सूरज और चाँद ऊपर क्यों गए?

बहुत समय पहले सूरज और चाँद ज़मीन पर रहते थे। पानी उनका अच्छा दोस्त था और वे अक्सर उससे मिलने आते थे। लेकिन पानी कभी उनके घर नहीं जाता था।



एक दिन सूरज ने पानी से पूछा – तुम कभी हमसे मिलने क्यों नहीं आते?

पानी बोला – मेरे बहुत सारे दोस्त हैं। यदि मैं तुम्हारे घर आऊँ तो वे भी मेरे साथ आएँगे। उन सबके लिए तुम्हारे घर में जगह नहीं होगी। सूरज ने कहा – मैं एक बहुत बड़ा नया घर बनाऊँगा।

सूरज ने सचमुच एक नया घर बनाया जो बहुत बड़ा था। उसने पानी को इस नए घर में बुलाया। पानी तरह-तरह की मछलियों और उनके साथ रहने वाले दूसरे जानवरों के साथ सूरज के घर पहुँचा।

पानी ने बाहर खड़े होकर पूछा – मैं अपने दोस्तों के साथ अंदर आ जाऊँ?

सूरज ने कहा – हाँ, हाँ, आ जाओ।

पानी अंदर आया और कुछ ही देर में सूरज के घर में घुटनों तक पानी भर गया। देखते ही देखते पानी सिर तक पहुँच गया। मछलियाँ और पानी के तमाम जानवर सूरज के घर में इधर-उधर घूमने लगे। अंत में पानी इतना ऊँचा हो गया कि सूरज और चाँद को छत पर जाकर बैठना पड़ा लेकिन थोड़ी ही देर में पानी छत पर आ पहुँचा। अब सूरज और चाँद क्या करते? कहाँ बैठते? वे भागकर आसमान पर पहुँचे। आसमान उन्हें इतना पसंद आया कि वे वहीं रहने लगे।

4. मन करता है

मन करता है सूरज बनकर
आसमान में दौड़ लगाऊँ।
मन करता है चंदा बनकर
सब तारों पर अकड़ दिखाऊँ।

मन करता है बाबा बनकर
घर में सब पर धौंस जमाऊँ।
मन करता है पापा बनकर
मैं भी अपनी मूँछ बढ़ाऊँ।
मन करता है तितली बनकर
दूर-दूर उड़ता जाऊँ।
मन करता है कोयल बनकर
मीठे-मीठे बोल सुनाऊँ।



मन करता है चिड़िया बनकर
चीं-चीं चूँ-चूँ शोर मचाऊँ।

मन करता है चर्खी लेकर
पीली-लाल पतंग उड़ाऊँ।

सुरेंद्र विक्रम



तुम्हारी बात

- तुम पर कौन-कौन धौंस जमाता है? क्यों?
  - ✧ घर में
  - ✧ स्कूल में
- **मन करता है चिड़िया बनकर**
  चीं-चीं चूँ-चूँ शोर मचाऊँ
  तुम्हारा मन कब-कब चिड़िया बन जाने को करता है?
- कौन किस पर अकड़ जमाता होगा?
  - ✧ आसमान में
  - ✧ खेल में
  - ✧ जंगल में
  - ✧ स्कूल में
  - ✧ नदी में
  - ✧ रंगों में

मूँछ

- तुमने तरह-तरह की मूँछें देखी होंगी।
  यहाँ तुम्हारे लिए एक मूँछ बनी है। कुछ मूँछें तुम भी बनाओ और सभी मूँछों को अपने मन से नाम दो।



....

पता करो

- तुम्हारे घर और स्कूल में किसका क्या करने का मन करता है? लिखो और अपनी सूची अपने साथियों से मिलाकर देखो।

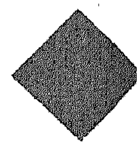
नाम	मन करता है

चलो, पतंग बनाएँ

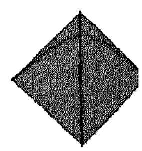
सामान – *तुम्हें चाहिए कोई पतला कागज़, झाड़ू की तीलियाँ, गोंद, टेप, कैंची।*

तरीका –

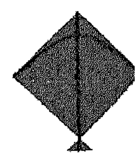
- कागज़ को चौकोर काटो।



- उसमें गोंद या टेप से दो तीलियाँ चिपका लो, जैसा चित्र में दिखाया गया है।



- तीली के निचले हिस्से में पूँछ के लिए एक तिकोना टुकड़ा काटकर चिपका दो।



- पतंग तैयार है।

सोचो और बताओ

- सूरज आसमान में दौड़ क्यों लगाता होगा?
- चिड़ियाँ शोर क्यों मचाती होंगी?
- चंदा तारों पर क्यों अकड़ता होगा?
- दादा घर में कैसे धौंस जमाते होंगे?

शोर

एक मिनट के लिए आँखें बंद करके बिल्कुल चुपचाप बैठ जाओ। ध्यान से आसपास की आवाज़ें सुनो।

- अब आँखें खोलो। क्या याद है, तुमने किस-किसकी आवाज़ सुनी थी? नीचे उनके नाम लिखो।

....

....

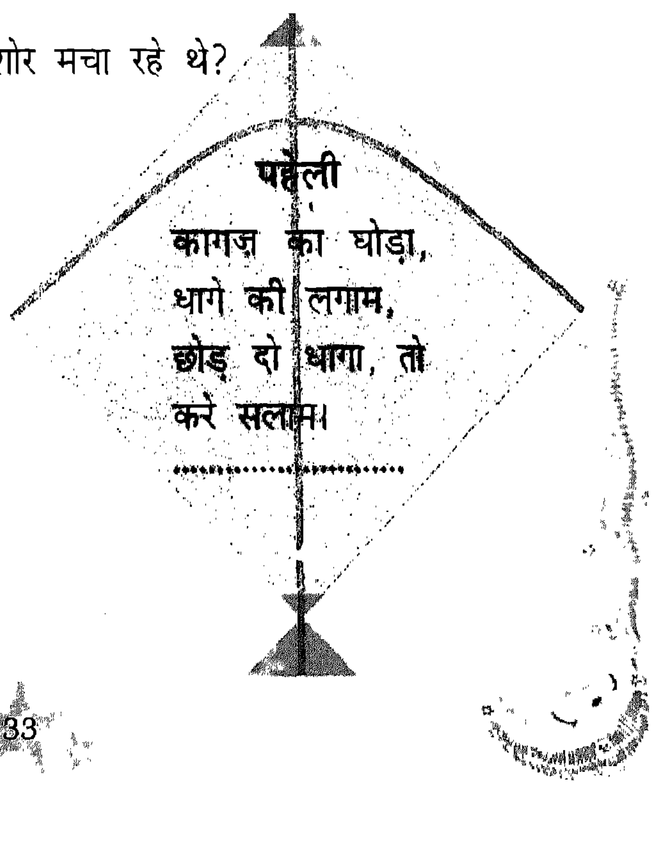
- इनमें से कौन-कौन बहुत शोर मचा रहे थे?

....

....

....

....



5. बहादुर बित्तो

एक किसान था। उसकी बीवी का नाम था – बित्तो। एक दिन किसान ने बित्तो से कहा – सुबह जब मैं खेत में हल चला रहा था तो एक शेर ने आकर कहा – किसान-किसान! अपना बैल मुझे दे दे वरना मैं तुझे खा जाऊँगा।

बित्तो ने उससे पूछा – तूने क्या जवाब दिया?

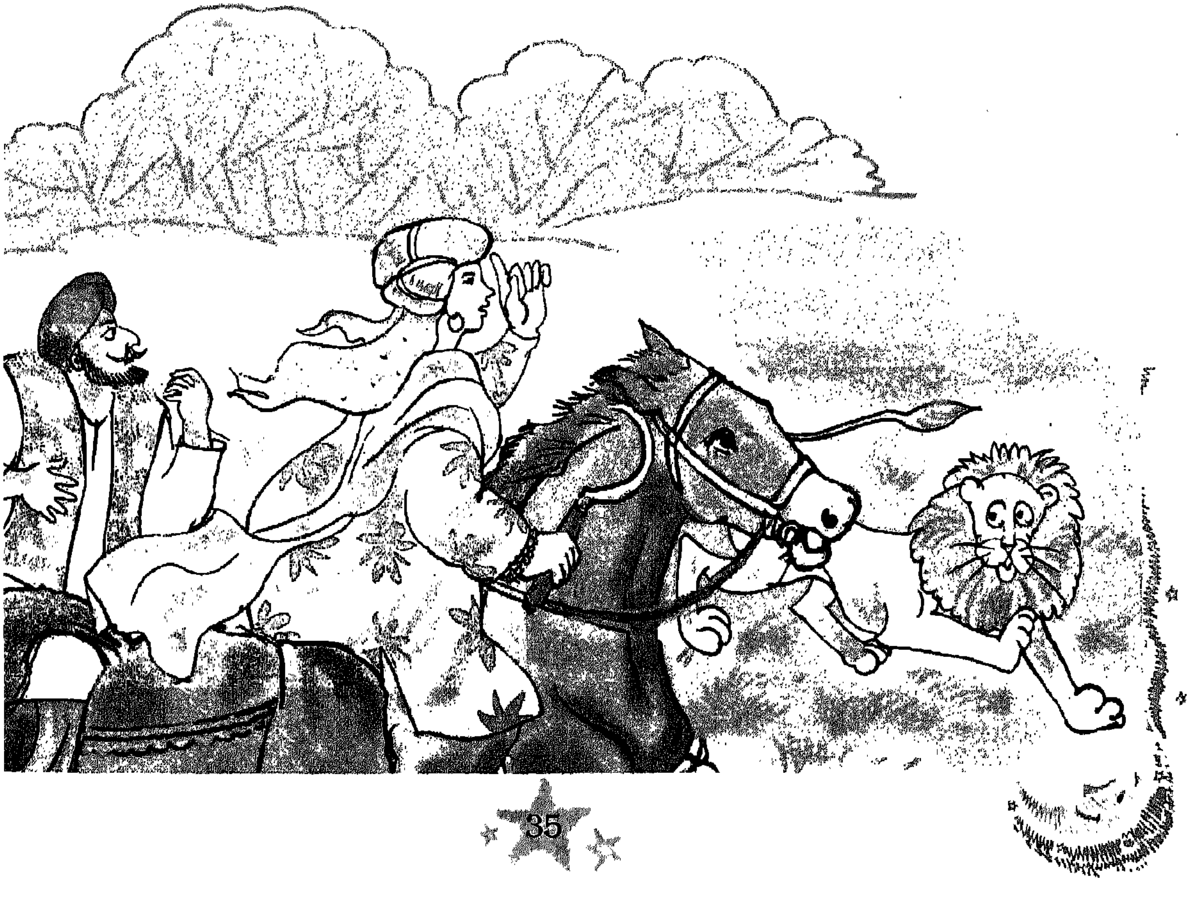


किसान ने कहा – मैंने कहा, तू यहीं रुक, मैं घर जाकर अपनी गाय ले आता हूँ। अगर तू बैल खा लेगा तो हम लोग भूखों मर जाएँगे।

यह सुनकर बित्तो को बहुत गुस्सा आया। उसने किसान को फटकारा– घर की गाय शेर को खिलाते तुझे शर्म नहीं आती? अगर गाय चली गई तो घर में न दूध, न लस्सी। बच्चे रोटी किस चीज़ के साथ खाएँगे?

बित्तो को एक तरकीब सूझी। उसने कहा – तुम फ़ौरन खेत में जाकर शेर से कहो कि मेरी बित्तो तुम्हारे खाने के लिए एक घोड़ा लेकर आ रही है।

किसान डरता-डरता शेर के पास गया। उसने कहा – शेर राजा! हमारी गाय तो बड़ी मरियल है। उससे तुम्हारा क्या बनेगा! मेरी बीवी अभी तुम्हारे लिए एक मोटा-ताज़ा घोड़ा लेकर आ रही है।



बित्तो ने सिर पर एक बड़ा-सा पग्गड़ बाँधा और हाथ में दराँती लेकर घोड़े पर सवार हो गई। घोड़ा दौड़ाती वह खेत पर पहुँची और ज़ोर से चिल्लाई – अरे किसान! तू तो कहता था कि तूने चार शेरों को फाँस कर रखा है। यहाँ तो सिर्फ़ एक ही है। बाकी कहाँ गए? फिर वह घोड़े से उतरकर शेर की तरफ़ बढ़ी और कहने लगी – अच्छा, कोई बात नहीं, नाश्ते में एक ही शेर काफ़ी है।

इतना सुनना था कि शेर डर के मारे काँपने लगा और भाग खड़ा हुआ।

यह देखकर बित्तो बोली – देखा, इसे कहते हैं हिम्मत! तुम तो इतने डरपोक हो कि घर की गाय शेर के हवाले कर रहे थे।

उधर मारे भूख के शेर की आँतें छटपटा रही थीं। एक भेड़िए ने पूछा – महाराज, क्या मामला है? आप आज बहुत उदास दिखाई दे रहे हैं!

शेर ने कहा – कुछ न पूछो, आज मुश्किल से जान बची है। आज एक ऐसी राक्षसी से पाला पड़ गया जो रोज़ सुबह चार शेरों का नाश्ता करती है।

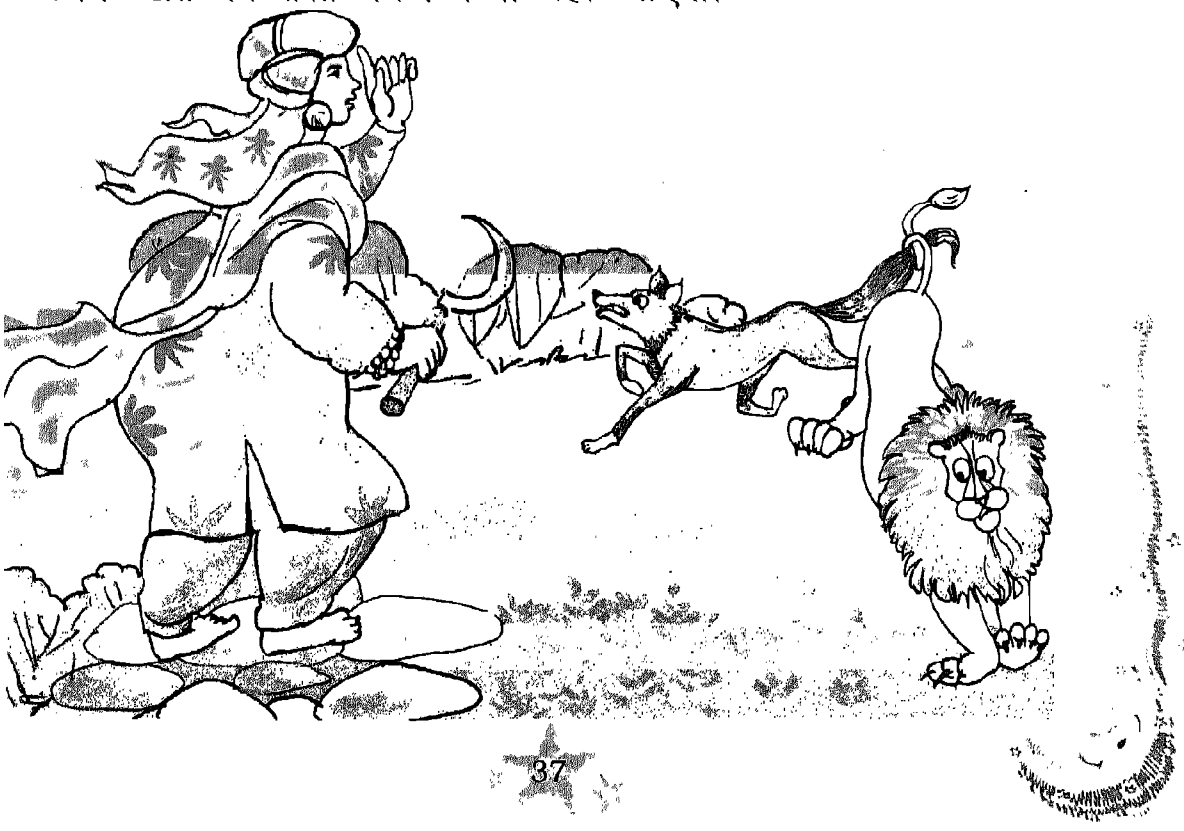
यह सुनकर भेड़िया बहुत हँसा। वह सुबह झाड़ी में छिपकर सारा तमाशा देख रहा था। उसने कहा – भोले बादशाह! वह तो बित्तो थी, जिसे आपने राक्षसी समझ लिया था। आप इस बार फिर कोशिश करके देखिए। अगर बैल आपके हाथ न आए तो मेरा नाम भेड़िया नहीं।

बहुत कहने-सुनने पर शेर किसान के खेत में जाने के लिए तैयार हो गया। लेकिन उसने भेड़िए से कहा – तुम अपनी पूँछ मेरी पूँछ से बाँध लो।

दोनों जने पूँछ बाँधकर चल पड़े। उन्हें देखते ही किसान के होश-हवास गुम हो गए। वह डर से थर-थर काँपने लगा। लेकिन बित्तो बिल्कुल नहीं घबराई। भेड़िए के पास जाकर उसने कहा – क्यों रे भेड़िए, तू तो अभी वादा करके गया था कि तू अपनी पूँछ से चार शेर बाँधकर लाएगा! लेकिन तू तो सिर्फ़ एक ही शेर लाया है! वह भी मरियल-सा! भला इसे खाकर मेरी भूख मिट सकती है? खैर, इस वक्त यही सही। इतना कहकर बित्तो आगे बढ़ी।

शेर के होश-हवास उड़ गए। उसने समझा कि भेड़िए ने उसके साथ धोखा किया है। वह फ़ौरन वहाँ से भागा। भेड़िया बहुत चीखा-चिल्लाया, लेकिन शेर ने एक न सुनी। तेज़ी से भागता चला गया।

किसान और बित्तो आराम से रहने लगे। उन्हें मालूम था कि अब शेर उनके खेत की तरफ़ फिर कभी नहीं आएगा।



कहानी में ढूँढ़ो

- शेर किसान से क्या लेने गया था?
- शेर ने बित्तो को राक्षसी क्यों समझ लिया?
- बैल की जान कैसे बच गई?

तुम्हारी ज़बानी

नीचे कुछ शब्दों के नीचे रेखा खिंची हुई है। उन्हें ध्यान में रखते हुए नीचे लिखे वाक्यों को अपने शब्दों में लिखो।

- बित्तो घोड़े पर सवार हो गई।
- तुम घर की गाय को शेर के हवाले कर रहे थे।
- आज एक राक्षसी से पाला पड़ गया।
- अगर बैल आपके हाथ न आए तो मेरा नाम भेड़िया नहीं।
- शेर को देखते ही किसान के होश-हवास गुम हो गए।

बेचारा भेड़िया!

- शेर तो डर कर भाग गया। सोचो तो भेड़िए का क्या हुआ होगा?
- शेर किसान के पास कितनी बार गया था? कहानी देखे बिना बताओ।

खाली जगह में क्या आएगा?

- मेरी छत पर <u>मोर</u> आया।
- मेरी छत पर <u>मोरनी</u> आई।

मोर-मोरनी की तरह नीचे लिखे शब्दों के भी रूप बदलो।

औरत –	....	घोड़ा –	....
शेर –	....	मछुआरा –	....
बच्चा –	....	राजा –	....

मैं नहीं जाऊँगा!

शेर ने बित्तो को राक्षसी समझ लिया। वह खेत में नहीं जाना चाहता था पर भेड़िए के समझाने पर वह राज़ी हो गया। सोचो, शेर और भेड़िए के बीच क्या बातचीत हुई होगी?

शेर – भेड़िए, तुम क्यों हँस रहे हो?

भेड़िया – महाराज, वह तो ....

शेर – नहीं नहीं। वह सचमुच राक्षसी थी।

भेड़िया – मैंने अपनी आँखों से देखा है महाराज। वह ....

....

शेर – ....

भेड़िया – ....

शेर – ठीक है ....।

बोलो, तुम क्या सोचती हो!

- भेड़िए ने शेर को **भोले महाराज** क्यों कहा? क्या शेर सचमुच भोला था?
- शेर ने भेड़िए की पूँछ के साथ अपनी पूँछ क्यों बाँध ली?
- क्या शेर फिर कभी बित्तो के खेत की तरफ़ गया होगा? हाँ, तो क्यों? नहीं, तो क्यों?
- बित्तो की हिम्मत तुम्हें कैसी लगी? अगर तुम बित्तो की जगह होतीं तो शेर से कैसे निपटतीं?

राज का राज़

शेर जंगल पर राज करता था।

मेरा राज़ किसी से न कहना।

राज और राज़ को बोलकर देखो।

दोनों के बोलने में फ़र्क है न?

- कहानी में से ऐसे ही **ज़** पर लगे नुक्ते वाले शब्द ढूँढ़ो।

  ....

- अब अपने मन से सोचकर **ज़** पर लगे नुक्ते वाले पाँच शब्द लिखो।

  ....

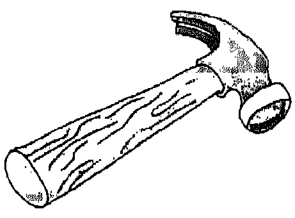
अगर ऐसा होता तो

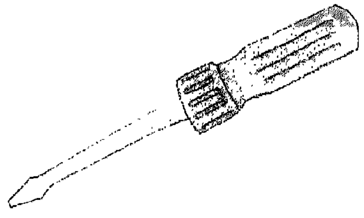
- अगर तुम शेर की जगह होतीं तो क्या करतीं?
- अगर तुम बित्तो की जगह होतीं तो शेर से कैसे निपटतीं?

पहचानो तो

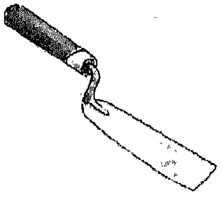
- कहानी में तुमने दराँती का चित्र देखा। नीचे ऐसे ही कुछ और औज़ारों के चित्र दिए गए हैं। उन्हें पहचानो और बॉक्स में दिए शब्दों में से सही शब्द ढूँढ़कर लिखो।

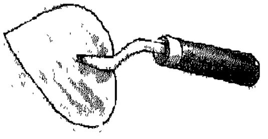
पेचकस खुरपी करनी हथौड़ी आरी



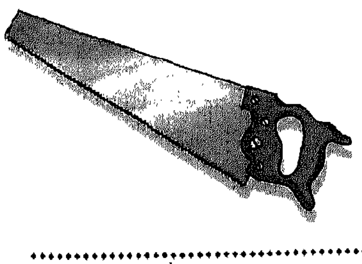


....





....



....



वरना ...

- शेर ने किसान से कहा – अपना बैल मुझे दे दो <u>वरना</u> मैं तुझे खा जाऊँगा। **वरना** शब्द का इस्तेमाल करते हुए तुम भी तीन वाक्य बनाओ।

....

....

....

हम किसी से कम नहीं

- कई जगहों पर गाँवों में औरतें खेतों में भी काम करती हैं। तुम्हारे आसपास की औरतें और लड़कियाँ क्या-क्या काम करती हैं?

शेर और घोड़ा

शेर और घोड़े में कई अंतर होते हैं।

ध्यान से सोचकर नीचे लिखो।

	शेर	घोड़ा
खाना	....	....
घर	....	....
रंग	....	....
आदतें	....	....

- **नीचे दिए गए शब्दों को सही तालिका में लिखो।**

किसान, बोतल, लता, कक्कू, केला, कलम, राजू, रानू, चूहा, नीना, शेर, जूता, चारपाई, पगड़ी, खरगोश, करेला, छलनी, बित्तो, घोड़ा, गौरैया, बाल्टी, पीपल, कोयल, नीम, किताब, दराँती

जानवर	चीज़ें	नाम

मूस की मज़दूरी



बहुत समय पहले की बात है। उस समय आदमी के पास धान नहीं था। सबसे पहले आदमी ने धान का पौधा एक पोखरी के बीच में देखा। धान की बालियाँ झूम-झूमकर जैसे आदमी को बुला रही थीं। पर गहरे पानी के कारण धान तक पहुँचना कठिन था।

आदमी सोचता हुआ खड़ा ही था कि वहीं पर एक मूस दिखलाई पड़ा। आदमी ने मूस को पास बुलाया और कहा –

मूस भाई, पोखरी के बीच में देखो उन धान की प्यारी बालियों को, झूम-झूम कर वे मुझे बुला रही हैं लेकिन पानी गहरा है। यदि तुम उन्हें हमारे लिए ला दो, तो हम तुम्हें मेहनताने का हिस्सा दे देंगे।

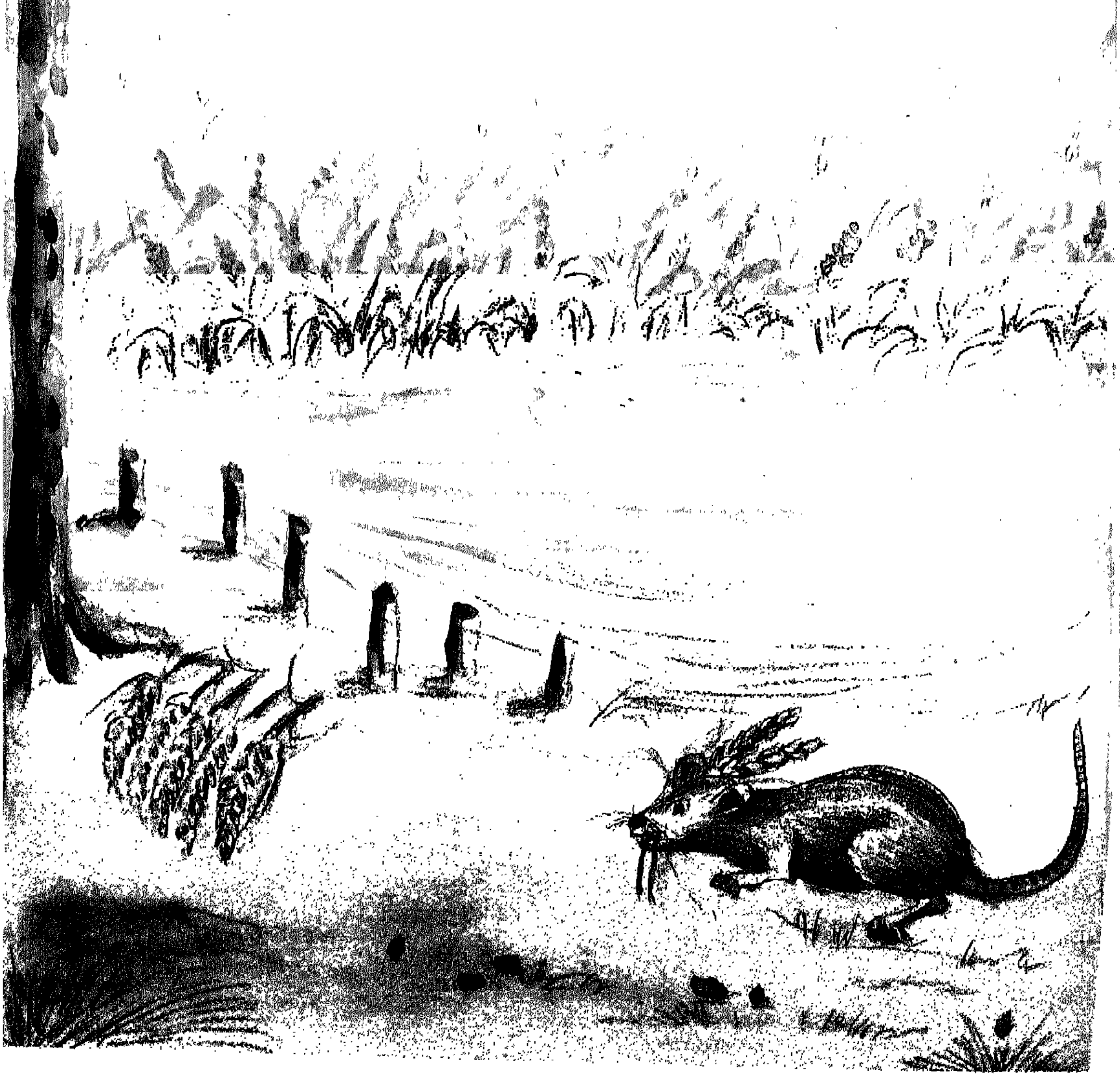
मूस को भला क्या एतराज़ था! वह सरसर तैर गया और बालियों को दाँतों से कुतर-कुतर कर किनारे पर लाने लगा। थोड़ी-ही देर में किनारे पर धान की बालियों का ढेर बन गया।

तब आदमी ने प्रसन्न होकर कहा – मूस भाई, अब इसमें से अपनी मज़दूरी का हिस्सा तुम स्वयँ ले लो।

पर मूस ने कहा – भाई मेरे, मैं ठहरा छोटा जीव। मेरा सिर भी है छोटा। अपना हिस्सा इस छोटे से सिर पर ढोकर कैसे ले जाऊँगा? इसलिए अच्छा तो यह होगा कि तुम यह पूरा धान अपने घर ले जाओ और मैं तुम्हारे घर पर ही आकर अपने हिस्से का थोड़ा धान खा लिया करूँगा।

आदमी ने ऐसा ही किया और तभी से मूस आदमी के घर धान खाता चला आ रहा है।

रामनंदन



6. हमसे सब कहते

नहीं सूर्य से कहता कोई
धूप यहाँ पर मत फैलाओ,
कोई नहीं चाँद से कहता
उठा चाँदनी को ले जाओ।

कोई नहीं हवा से कहता
खबरदार जो अंदर आई,
बादल से कहता कब कोई
क्यों जलधार यहाँ बरसाई?





फिर क्यों हमसे भैया कहते
यहाँ न आओ, भागो जाओ,
अम्मा कहती हैं, घर-भर में
खेल-खिलौने मत फैलाओ।

पापा कहते बाहर खेलो,
खबरदार जो अंदर आए,
हम पर ही सबका बस चलता
जो चाहे वह डाँट बताए।

निरंकार देव सेवक



नया शीर्षक

अगर तुम्हें इस कविता का नाम बदलने को कहें, तो तुम इसे क्या नाम दोगे?

करो — मत करो

पाठशाला में और घर में तुम्हें क्या-क्या करने के लिए कहा जाता है और क्या-क्या करने के लिए मना किया जाता है। नीचे वाली तालिका में लिखो।

करो	मत करो
....	....
....	....
....	....

ज़रा सोचो

- सूरज चाँद की रोशनी को भगा देता है।
- बादल सूरज की रोशनी को भगा देता है।
- हवा बादल को भगा देती है। बताओ, कौन किससे ज़्यादा ताकतवर है?

तुम्हारी बात

अम्मा, पापा, भैया, दीदी सभी बड़ों का बच्चों पर बस चलता है।

- तुम्हारा किस-किस पर बस चलता है?

  ....

- तुम्हारे घर में तुम्हें कौन-कौन टोकता रहता है?

  ....

- किन-किन बातों पर तुम्हें अक्सर टोका जाता है?

  ....



कौन सी चीज़ कहाँ

शालू को बहुत-सी चीज़ों के नाम आते हैं। उसने नामों को लिख-लिखकर पट्टी भर ली। वे नाम मैंने नीचे लिख दिए हैं।

शालू की सूची

शक्कर, कबड्डी, पपीता, मार-कुटाई, लोमड़ी, गुलाब, जामुन, शेर, ककड़ी, शतरंज, बल्ला, मगर, लड्डू, गाय, बेर, पेड़ा, बकरी, गिल्ली, कबूतर, पतंग, मसाला, लट्टू, तोता, शहतूत, चटनी

अब शालू यह सोच रही है कि किस नाम को किस खाने में लिखना है। क्या तुम उसकी मदद कर सकती हो?

अक्षर	जानवर या पक्षी	खाने-पीने का सामान	खेल का नाम या सामान
ब	बकरी	बेर	बल्ला
म	मगर	....	....
क	....	....	कंकड़
ल	....	....	लट्टू
प	....	....	....
ग	....	....	गिल्ली
श	....	....	....

ऐसे ही खेल तुम और अक्षरों के साथ खेल सकते हो। अलग तरह के खाने भी बना सकते हो - जैसे 'ट' से शुरू होने वाली गोल या लाल चीज़।

अब हरेक खाने के नाम वर्णमाला के हिसाब से क्रम से लगाओ -

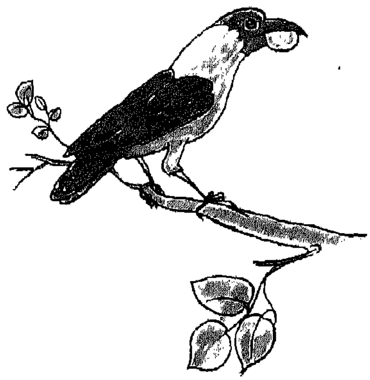
जानवर या पक्षी	
खाने पीने का सामान	
खेल का नाम या सामान	

'हमसे सब कहते' कविता में जिन लोगों, चीज़ों और जगहों के नाम आए हैं, उन्हें नीचे दी गई तालिका में लिखो।

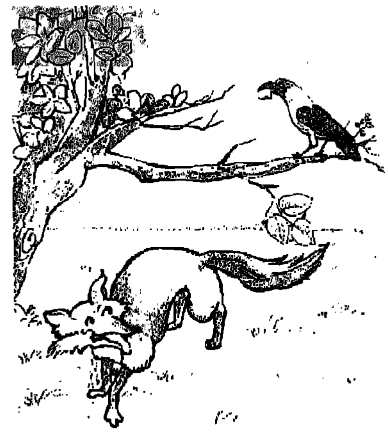
लोग	चीज़	जगह
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

यह कहानी तुमने कई बार सुनी होगी।

• कौआ और लोमड़ी



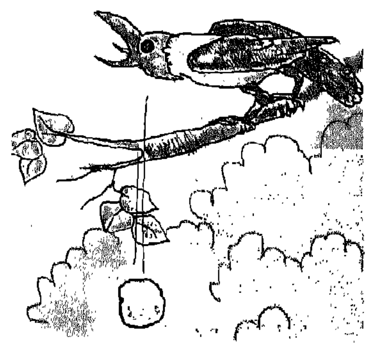
एक बार एक कौए को एक रोटी मिली।



लोमड़ी ने सोचा क्यों न मैं इस कौए को मूर्ख बनाकर रोटी ले लूँ।

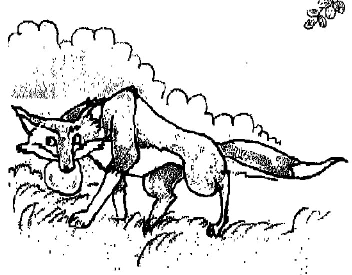


लोमड़ी बोली - कौए भाई तुम इतना अच्छा गाते हो! मुझे भी एक गाना सुनाओ।



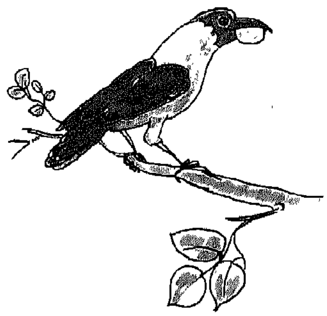
कौए ने जैसे ही गाने के लिए मुँह खोला, रोटी नीचे गिर गई।





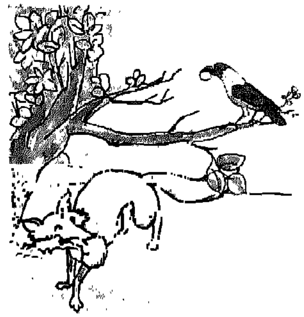
लोमड़ी रोटी लेकर चली गई।

आओ, अब इन्ही चित्रों से एक नई कहानी बनाएँ।



....

....



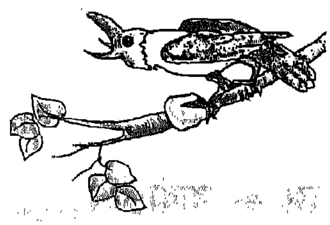
....

....



....

....



....

....



....

....



....

....

7. टिपटिपवा

एक थी बुढ़िया। उसका एक पोता था। पोता रोज़ रात में सोने से पहले दादी से कहानी सुनता। दादी रोज़ उसे तरह-तरह की कहानियाँ सुनाती।

एक दिन मूसलाधार बारिश हुई। ऐसी बारिश पहले कभी नहीं हुई थी। सारा गाँव बारिश से परेशान था। बुढ़िया की झोंपड़ी में पानी जगह-जगह से टपक रहा था – टिपटिप-टिपटिप। इस बात से बेखबर पोता दादी की गोद में लेटा कहानी सुनने के लिए मचल रहा था। बुढ़िया खीझकर बोली – अरे बचवा, का कहानी सुनाएँ? ई टिपटिपवा से जान बचे तब न!

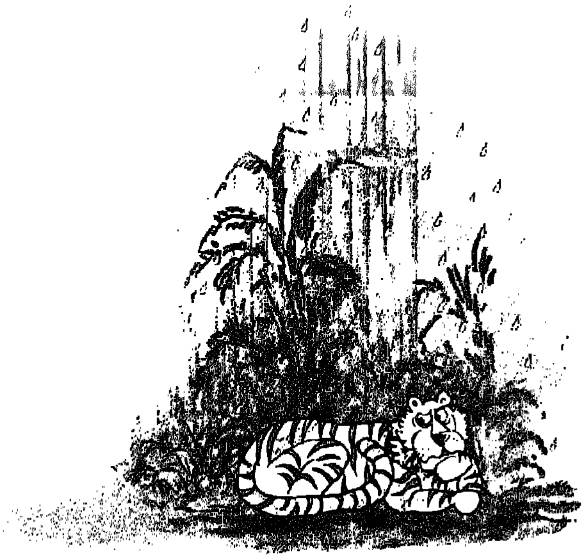


पोता उठकर बैठ गया। उसने पूछा – दादी, ये टिपटिपवा कौन है? टिपटिपवा क्या शेर-बाघ से भी बड़ा होता है?

दादी छत से टपकते हुए पानी की तरफ़ देखकर बोली – हाँ बचवा, न शेरवा के डर, न बघवा के डर। डर त डर, टिपटिपवा के डर।

संयोग से मुसीबत का मारा एक बाघ बारिश से बचने के लिए झोंपड़ी के पीछे बैठा था। बेचारा बाघ बारिश से घबराया हुआ था। बुढ़िया की बात सुनते ही वह और डर गया।

अब यह टिपटिपवा कौन-सी बला है? ज़रूर यह कोई बड़ा जानवर है। तभी तो बुढ़िया शेर-बाघ से ज़्यादा टिपटिपवा से डरती है। इससे पहले कि बाहर आकर वह मुझ पर हमला करे, मुझे ही यहाँ से भाग जाना चाहिए।



बाघ ने ऐसा सोचा और झटपट वहाँ से दुम दबाकर भाग चला।



उसी गाँव में एक धोबी रहता था। वह भी बारिश से परेशान था। आज सुबह से उसका गधा गायब था। सारा दिन वह बारिश में भीगता रहा और जगह-जगह गधे को ढूँढ़ता रहा लेकिन वह कहीं नहीं मिला।

धोबी की पत्नी बोली – जाकर गाँव के पंडित जी से क्यों नहीं पूछते? वे बड़े ज्ञानी हैं। आगे-पीछे, सबके हाल की उन्हें खबर रहती है।

पत्नी की बात धोबी को जँच गई। अपना मोटा लट्ठ उठाकर वह पंडित जी के घर की तरफ़ चल पड़ा। उसने देखा कि पंडित जी घर में जमा बारिश का पानी उलीच-उलीचकर फेंक रहे थे ।



धोबी ने बेसब्री से पूछा– महाराज, मेरा गधा सुबह से नहीं मिल रहा है। ज़रा पोथी बाँचकर बताइए तो वह कहाँ है?

सुबह से पानी उलीचते-उलीचते पंडित जी थक गए थे। धोबी की बात सुनी तो झुँझला पड़े और बोले – मेरी पोथी में तेरे गधे का पता - ठिकाना लिखा है क्या, जो आ गया पूछने? अरे, जाकर ढूँढ़ उसे किसी गढ़ई-पोखर में।

और पंडित जी लगे फिर पानी उलीचने। धोबी वहाँ से चल दिया। चलते-चलते वह एक तालाब के पास पहुँचा। तालाब के किनारे ऊँची-ऊँची घास उग रही थी। धोबी घास में गधे को ढूँढ़ने लगा। किस्मत का मारा बेचारा बाघ टिपटिपवा के डर से वहीं घास में छिपा बैठा था। धोबी को लगा कि बाघ ही उसका गधा है। उसने आव देखा न ताव और लगा बाघ पर मोटा लट्ठ बरसाने। बेचारा बाघ इस अचानक हमले से एकदम घबरा गया।

बाघ ने मन ही मन सोचा – लगता है यही टिपटिपवा है। आखिर इसने मुझे ढूँढ़ ही लिया। अब अपनी जान बचानी है तो यह जो कहे, चुपचाप करते जाओ।

आज तूने बहुत परेशान किया है। मार-मारकर मैं तेरा कचूमर निकाल दूँगा – ऐसा कहकर धोबी ने बाघ का कान पकड़ा और उसे



खींचता हुआ घर की तरफ़ चल दिया। बाघ बिना चूँ-चपड़ किए भीगी बिल्ली बना धोबी के पीछे-पीछे चल दिया। घर पहुँचकर धोबी ने बाघ को खूँटे से बाँध दिया और सो गया।

सुबह जब गाँव वालों ने धोबी के घर के बाहर खूँटे से एक बाघ को बँधे देखा तो उनकी आँखें खुली की खुली रह गईं।

गिरिजा रानी अस्थाना

कौन-किससे परेशान?

इस कहानी में लगता है सभी परेशान थे। बताओ कौन-किससे परेशान था?

.... – ....

.... – ....

.... – ....

.... – ....

मतलब बताओ

नीचे कहानी में से कुछ वाक्य दिए गए हैं। इन्हें अपने शब्दों में लिखो।

- टिपटिपवा कौन-सी **बला** है?

  ....

- पत्नी की बात धोबी को **जँच** गई।

  ....

- बाघ **बिना चूँ-चपड़ किए भीगी बिल्ली** बना धोबी के पीछे-पीछे चल दिया।

  ....

- ज़रा **पोथी बाँच कर** बताइए वह कहाँ है?

  ....

याद करो तो

पोता दादी की गोद में कहानी सुनने के लिए मचल रहा था। तुम किन-किन चीज़ों के लिए मचलते हो?

मैं ....

....

....

....

कौन है टिपटिपवा!

हाँ बचवा, न शेरवा के डर, न बघवा के डर। डर त डर, टिपटिपवा के डर।

- तुम्हारे घर की बोली में इस बात को कैसे कहेंगे?

....

....

....

- कहानी में टिपटिपवा कौन था? तुम किस-किस को टिपटिपवा कहोगे?

....

....

बारिश

यह कहानी एक ऐसे दिन की है जब मूसलाधार बारिश हो रही थी। अगर मूसलाधार बारिश की बजाए बूँदा-बाँदी होती, तो क्या होता?

यदि उस रात बूँदा-बाँदी होती तो

....

....

....

....

....

तरह तरह की आवाज़ें

पानी के टपकने की टिपटिप-टिपटिप आवाज़ आ रही थी।

सोचो और लिखो ये आवाज़ें कब सुनाई पड़ती हैं।

खर्र-खर्र	भिन-भिन	ठक-ठक ....
चर्र-चर्र	भक-भक	तड़-तड़ ....

खूँटा

धोबी ने बाघ को खूँटे से बाँध दिया। सोचो और बताओ, खूँटे से क्या-क्या बाँधा जाता है?

....

....

....

....

....

....



एक से ज़्यादा

एक कहानी	–	सभी कहानियाँ
एक तितली	–	कई ....
एक	–	दस ....
एक चूड़ी	–	ढेरों ....
एक खिड़की	–	चार ....

8. बंदर-बाँट

स्थान : खुली जगह या कोई बड़ा कमरा।

पात्र : एक बंदर और दो बिल्लियाँ। सात-आठ बरस का लड़का बंदर और पाँच-छह बरस की लड़कियाँ बिल्ली बन सकती हैं।

बंदर के लिए पोशाक : पीला चूड़ीदार पाजामा, कुर्ता और दुपट्टा, जो कमर में पूँछ-सी निकालकर बाँधा जा सकता है। मुँह पर लगाने के लिए बंदर का चेहरा जिसमें आँखों और मुँह की जगह छेद हों।

बिल्लियों के लिए पोशाक : काली सफ़ेद सलवारें, कमीज़ें, दुपट्टे जो कमर में पूँछ-सी निकालकर बाँधे जा सकते हैं। मुँह पर लगाने के लिए काली-सफ़ेद बिल्लियों के चेहरे जिनमें आँखों और मुँह की जगह बड़े छेद हों जिनसे देखा-बोला जा सके।

सामान : एक मेज़, एक बड़ा मेज़पोश या बड़ी चादर, डबलरोटी का एक टुकड़ा, एक छोटी तराज़ू।

(पहला दृश्य—कोई कमरा)

(कमरे के बीच में एक मेज़ है जिस पर मेज़पोश पड़ा है जो कि आगे से ढका है, मेज़ पर एक रोटी का टुकड़ा है। मेज़ के नीचे एक तराज़ू रखा है, पर दिखाई नहीं देता)

(म्याऊँ-म्याऊँ की आवाज़ होती है और दाहिनी तरफ़ से काली बिल्ली और बाईं तरफ़ से सफ़ेद बिल्ली प्रवेश करती है।)

काली बिल्ली : बिल्ली बहन, नमस्ते!

सफ़ेद बिल्ली : नमस्ते बहन, नमस्ते!

काली बिल्ली : अच्छी तो हो?

सफ़ेद बिल्ली : अच्छी क्या हूँ, भूखी हूँ!

काली बिल्ली : मैं भी भूखी हूँ।

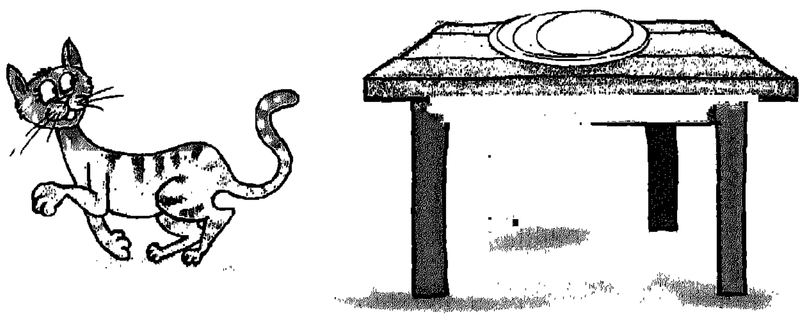
सफ़ेद बिल्ली : खाने को कुछ ढूँढ़ रही हूँ।

काली बिल्ली : उस खोज में मैं भी निकली हूँ।

सफ़ेद बिल्ली : मुझे महक रोटी की आती।

काली बिल्ली : हाँ, मेरी भी नाक बताती, पास कहीं है।

सफ़ेद बिल्ली : रखी मेज़ पर है वो रोटी।
लपकूँ? कोई आ न जाए तो...



काली बिल्ली : तू डर, मैं तो लेने चली...

(काली बिल्ली लपकती है और रोटी लेकर भागने लगती है)

सफ़ेद बिल्ली : ठहर, कहाँ भागी जाती है रोटी लेकर,
रोटी मेरी।

काली बिल्ली : रोटी तेरी! कैसे तेरी? रोटी मेरी।

सफ़ेद बिल्ली : मैं न दिखाती तो तू जाती?

काली बिल्ली : अच्छा, क्या मैं खुद न देखती?
क्या मेरी दो आँखें नहीं हैं?



डरती थी उस तक जाने में!
जा डरपोक कहीं की, जा भग, रोटी मेरी।

सफ़ेद बिल्ली	:	रोटी, कहे दे रही, मेरी। मैं ले जाने तुझे न दूँगी।
काली बिल्ली	:	देख, राह से मेरी हट जा। ले जाऊँगी, तुझे न दूँगी।
सफ़ेद बिल्ली	:	देखूँ, कैसे ले जाती है! जो पहले देखे हक उसका है रोटी पर!
काली बिल्ली	:	पहले दौड़े, दौड़ के ले ले पहले उसका हक रोटी पर। रोटी पर पहला हक मेरा।
सफ़ेद बिल्ली	:	मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।
काली बिल्ली	:	मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।



(दोनों झगड़ती हैं, 'रोटी मेरी', 'रोटी मेरी' कहकर एक-दूसरे पर गुर्राती हैं)

(बंदर का प्रवेश)

बंदर : क्यों तुम दोनों झगड़ रही हो? तुम कहती हो रोटी मेरी। (*सफ़ेद बिल्ली से*) तुम कहती हो रोटी मेरी। (*काली बिल्ली से*) रोटी किसकी? मैं इसका फ़ैसला करूँगा। चलो कचहरी, मेरे पीछे-पीछे आओ।

(बंदर दोनों से छीनकर रोटी अपने हाथ में लेकर चलता है, दोनों बिल्लियाँ पीछे-पीछे जाती हैं)

(दूसरा दृश्य—बंदर की कचहरी)

(बंदर मेज़ पर बैठा है। रोटी का टुकड़ा सामने रखा है। दोनों बिल्लियाँ मेज़ के सामने इधर-उधर खड़ी हैं।)

बंदर (*सफ़ेद बिल्ली से*) : बोलो, तुमको क्या कहना है?

सफ़ेद बिल्ली : श्रीमान, पहले मैंने ही रोटी देखी थी, इससे रोटी पर पूरा हक मेरा बनता है।

बंदर (*काली बिल्ली से*) : बोलो, तुमको क्या कहना है?

काली बिल्ली : श्रीमान, पहले मैं झपटी थी रोटी लेने, इससे रोटी पर मेरा हक पूरा बनता है।

बंदर (*सफ़ेद बिल्ली से*) : एक आँख से देखी थी, या दो आँखों से?

सफ़ेद बिल्ली : दो आँखों से, दोनों आँखों से।

बंदर (*काली बिल्ली से*) : एक टाँग से झपटी थी या दोनों टाँगों से?

काली बिल्ली : दो टाँगों से, दोनों टाँगों से।

बंदर : तुम दोनों का था गवाह भी?

दोनों बिल्लियाँ : कहीं न कोई।
कोई न कहीं ।

बंदर : बात बराबर। बात बराबर। मेरा फ़ैसला है कि रोटी तोड़-तोड़कर तुम्हें बराबर दे दी जाए। मेरे पास धरम-काँटा है।

(*बंदर मेज़ के नीचे से तराजू निकालकर लाता है। दो हिस्सों में तोड़कर दोनों पलड़ों पर रखता है और उठाता है। एक पलड़ा नीचे रहता है, दूसरा ऊपर*)



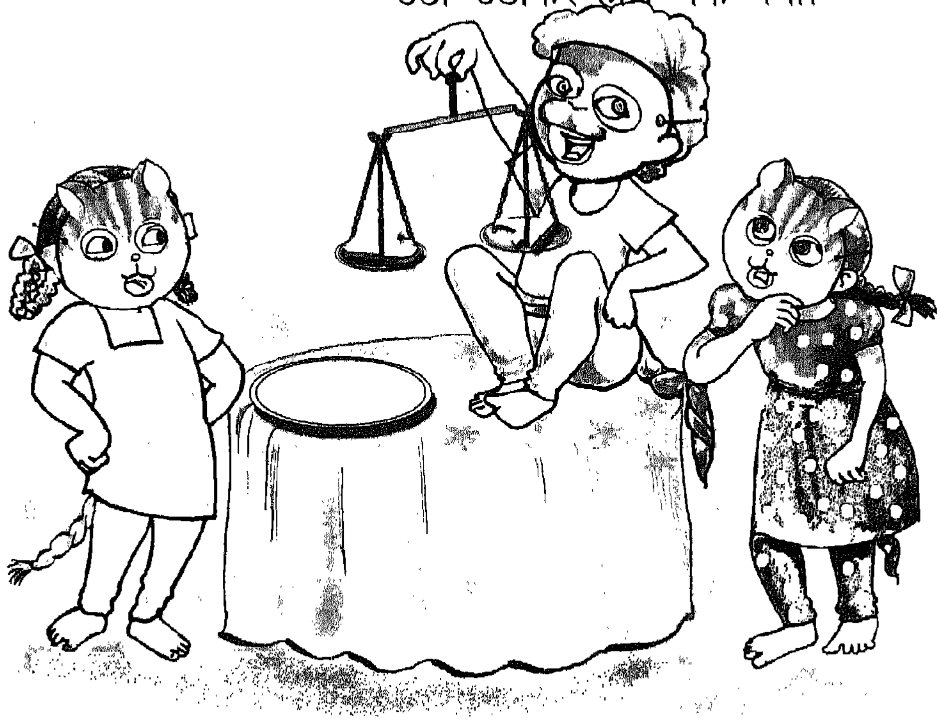
बंदर : यह टुकड़ा कुछ भारी निकला। इसमें से थोड़ा खाकर हल्का कर दूँ।

(*फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा ऊपर है और दूसरा नीचे*)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला। अब इसको थोड़ा खाकर हल्का कर दूँ।

(*फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा नीचे हो गया और दूसरा ऊपर*)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला। टुकड़े भी कितने खोटे हैं, एक-दूसरे को छोटा दिखलाने में ही लगे हुए हैं। मुँह थक गया बराबर करते-करते और तराजू उठा-उठाकर हाथ थक गया।



(बिल्लियों को बंदर की चालाकी का पता चल गया। हाथ मलती हुई बड़ी उदासी से एक-दूसरे को देखते हुए)

सफ़ेद बिल्ली : आप थक गए, अब न उठाएँ और तराजू।

काली बिल्ली : बचा-खुचा जो उसको दे दें, हम आपस में बाँट खाएँगी।

बंदर : नहीं, नहीं, तुम फिर झगड़ोगी। मैं झगड़े की जड़ को ही काटे देता हूँ। बचा-खुचा भी खा लेता हूँ।



(इतना कहकर बची-खुची रोटी भी बंदर खा जाता है और तराजू लेकर भाग जाता है)

दोनों बिल्लियाँ : आपस में झगड़ा कर बैठीं, बुद्धि अपनी खोटी।
अब पछताने से क्या होता, बंदर हड़पा रोटी।

हरिवंशराय बच्चन

लड़ाई-झगड़ा

- दोनों बिल्लियों के बीच झगड़े की जड़ क्या थी?
  - ✧ उनके झगड़े का हल कैसे निकाला गया?
- तुम किस-किस के साथ अक्सर झगड़ते हो?
  - ✧ झगड़ते समय तुम क्या-क्या करते हो?
  - ✧ जब तुम किसी से झगड़ते हो तो तुम्हारा फ़ैसला कौन करवाता है?

लेह में लोग एक-दूसरे से मिलने पर एक-दूसरे को जूले कहते हैं। मिलने पर दोनों बिल्लियाँ एक-दूसरे को नमस्ते कहती हैं।

- तुम इन लोगों से मिलने पर क्या कहती हो?
  - ✧ तुम्हारी सहेली/दोस्त
  - ✧ तुम्हारे शिक्षक
  - ✧ तुम्हारी दादी/नानी
  - ✧ तुम्हारे बड़े भाई/बहन
- अब पता लगाओ तुम्हारे साथी कक्षा में कितने अलग-अलग तरीकों से नमस्ते कहते हैं?

तुम्हें क्या लगता है

- अगर बंदर बीच में नहीं आता तो तुम्हारी राय में रोटी किस बिल्ली को मिलनी चाहिए थी?

- बंदर ने बिल्लियों से यह सवाल क्यों पूछा होगा कि उन्होंने रोटी
    - ✧ एक आँख से देखी थी या दोनों आँखों से?
    - ✧ एक टाँग से झपटी थी या दोनों टाँगों से?

बंदर-बाँट

- कहानी का शीर्षक बंदर-बाँट क्यों है?
- तुम नाटक को क्या नाम देना चाहोगी?
- जो शीर्षक तुमने दिया, उसे सोचने का कारण बताओ।

नाप-तोल

- बंदर ने रोटी बराबर बाँटने के लिए तराज़ू का इस्तेमाल किया। तराज़ू का इस्तेमाल चीज़ों को तोलने के लिए करते हैं। नीचे दी गई चीज़ों में से किन चीज़ों को तोलकर खरीदा जाता है?



- तोलते वक्त एक पलड़े में तोली जाने वाली चीज़ रखी जाती है और दूसरे में तोलने के लिए बाट। बाट किस धातु या चीज़ का बना होता है?

- बाट तोली जाने वाली चीज़ का वज़न बताता है। वज़न किलोग्राम या ग्राम में बताया जाता है। पता करो बाज़ार में कितने किलोग्राम या ग्राम के बट्टे मिलते हैं। (फलवाले, सब्ज़ीवाले या परचून की दुकान से पता कर सकते हो।)

  ....



नाक क्या सूँघती है!

बिल्लियों को रोटी की महक आ रही थी।

- तुम्हें किन-किन चीज़ों के पकने की महक अच्छी लगती है?
- और किन-किन चीज़ों की महक आती है जो खाने से जुड़ी नहीं हैं। जैसे— साबुन की सुगंध, जूते की पॉलिश की गंध आदि।

  ....



आगे-पीछे

मुझे महक रोटी की आती।

इस वाक्य को इस तरह भी लिख सकते हैं-

मुझे रोटी की महक आती।

तुम भी इसी तरह नीचे दिए वाक्यों के शब्दों को आगे-पीछे करके लिखो-

- उसी खोज में मैं भी निकली।

  मैं भी ....

- रखी मेज़ पर है वो रोटी।

  वो रोटी ....

- डरती थी उस तक जाने में।

....

- मैं ले जाने तुझे न दूँगी।

....

- जो पहले देखे हक उसका है रोटी पर।

....

एक और बँटवारा

अगले दिन दोनों बिल्लियों को एक तरबूज़ मिला। दोनों सोचने लगीं, इस तरबूज़ को कैसे बाँटा जाए कि तभी फिर से बंदर आ गया। आगे क्या हुआ होगा?

....

....

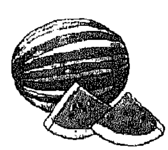
....

....

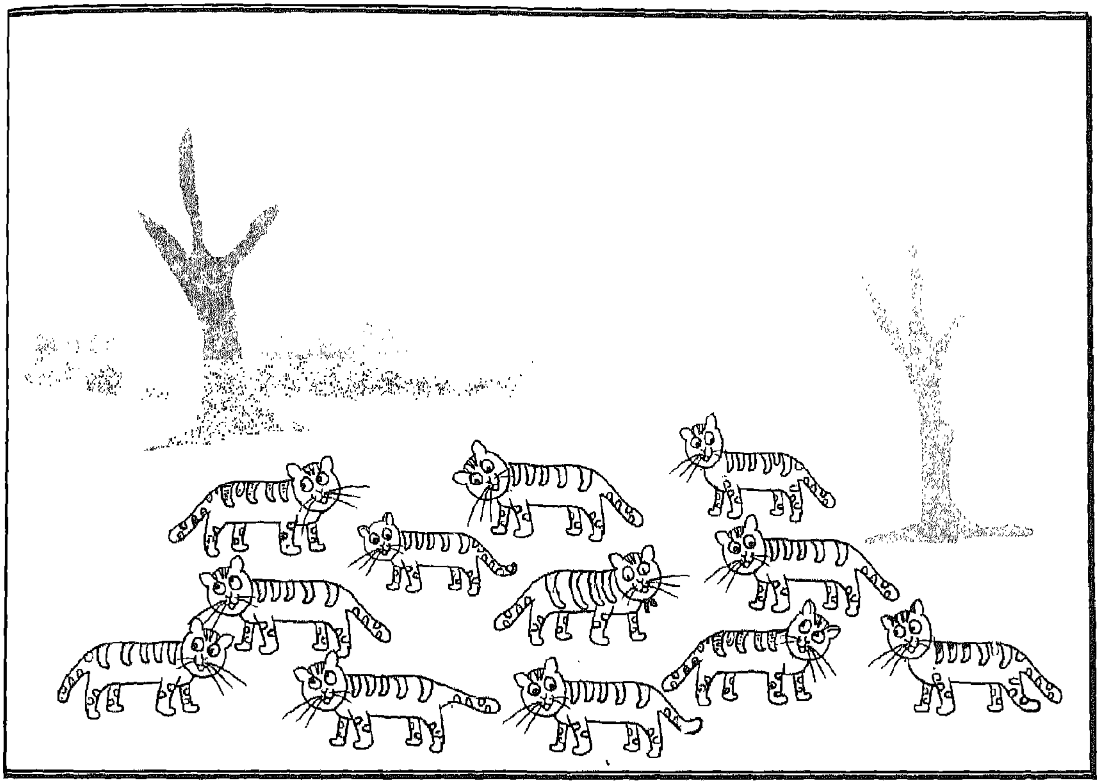
....

....

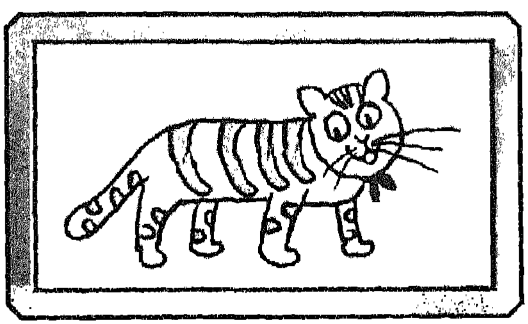








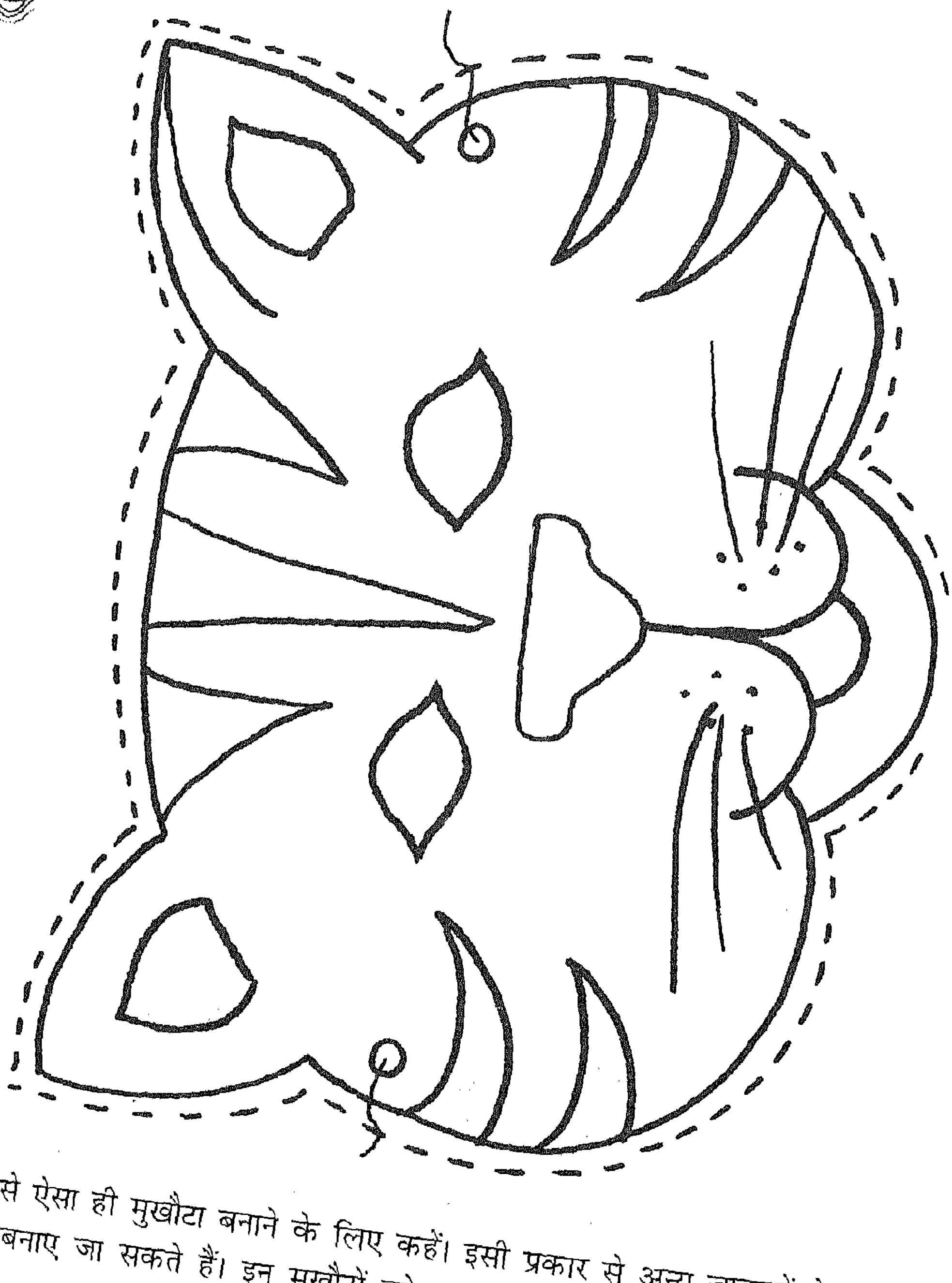
कट्टो बिल्ली बगीचे में अपने भाई-बहनों के साथ खेल रही थी। इतने में बंदर ने उसकी तस्वीर खींच ली। तस्वीर देखकर बताओ इनमें से कट्टो बिल्ली कौन-सी है?



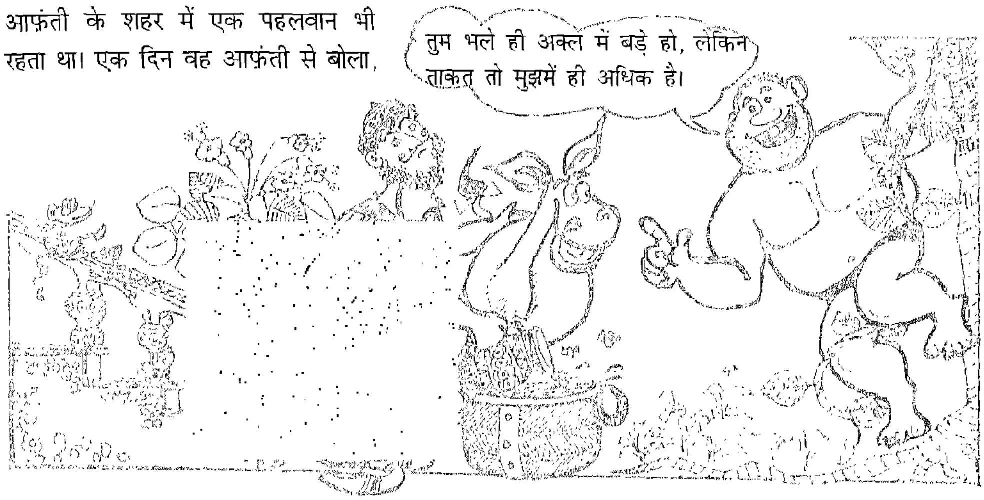
कट्टो बिल्ली की तस्वीर

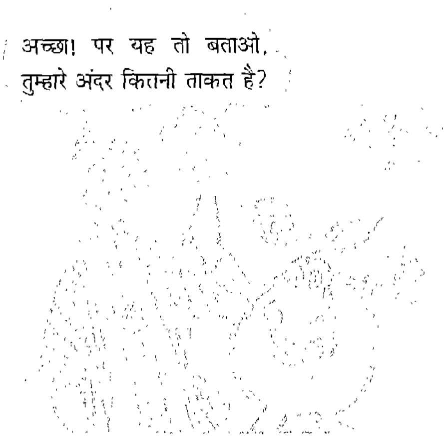


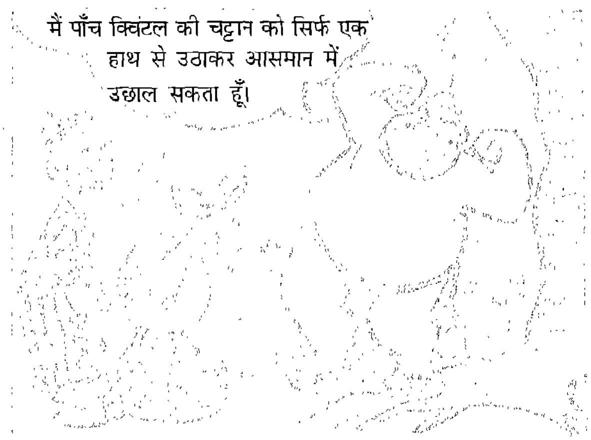


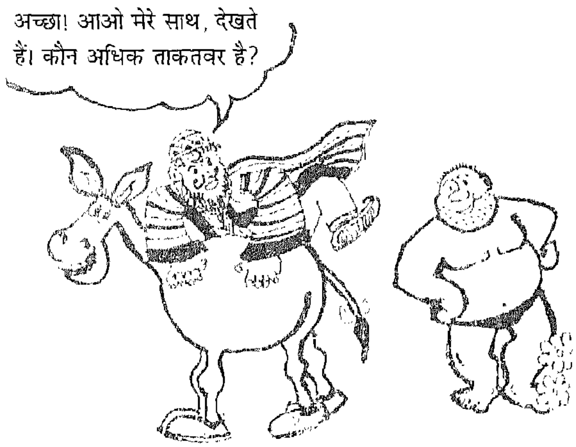


बच्चों से ऐसा ही मुखौटा बनाने के लिए कहें। इसी प्रकार से अन्य जानवरों के मुखौटे बनाए जा सकते हैं। इन मुखौटों को पहनाकर उनसे अभिनय करवाएँ।

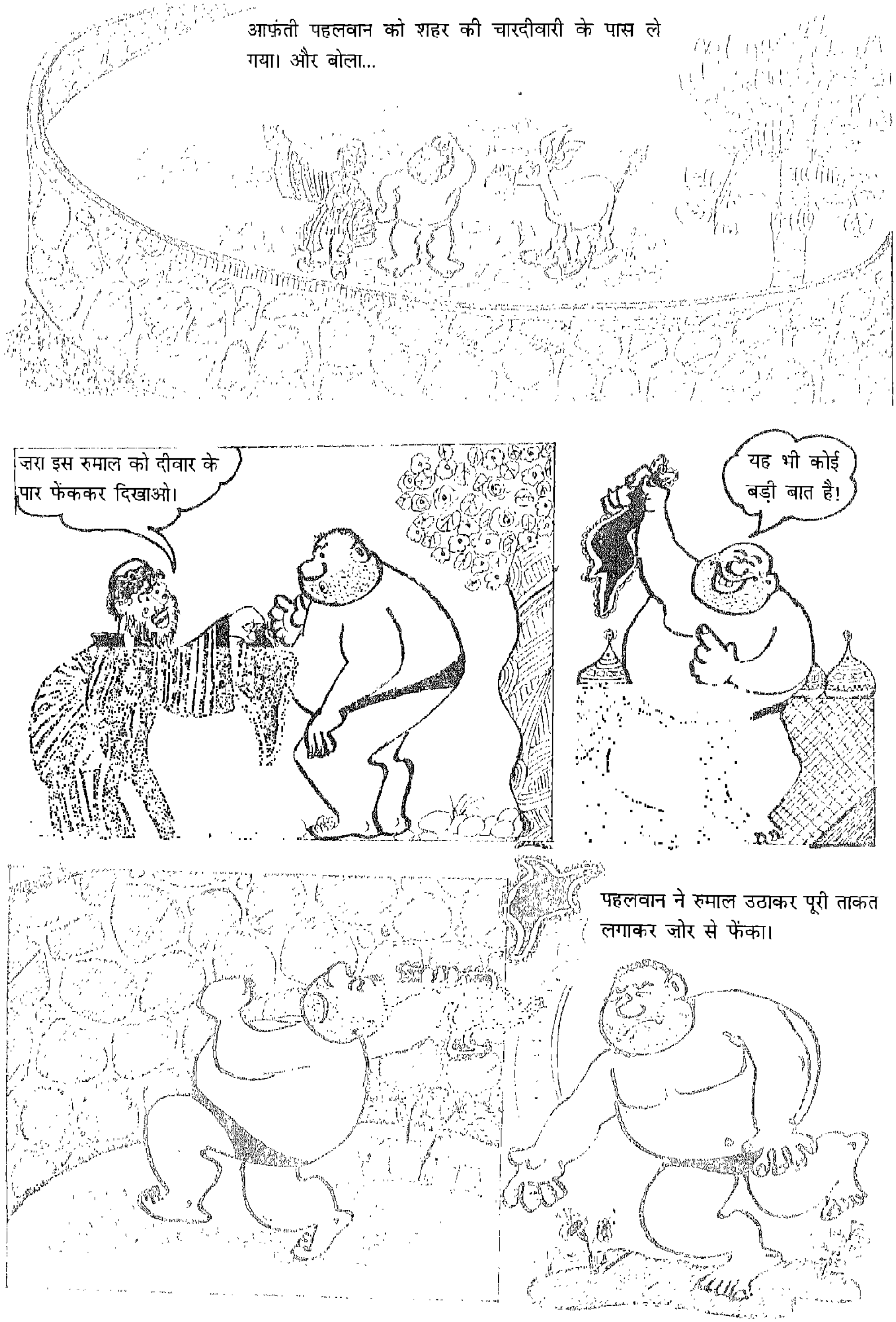

आफ़ंती के शहर में एक पहलवान भी रहता था। एक दिन वह आफ़ंती से बोला,
तुम भले ही अक्ल में बड़े हो, लेकिन ताकत तो मुझमें ही अधिक है।


अच्छा! पर यह तो बताओ, तुम्हारे अंदर कितनी ताकत है?

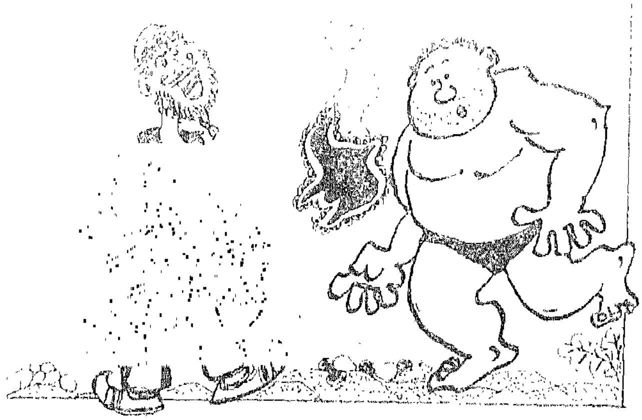

मैं पाँच क्विंटल की चट्टान को सिर्फ एक हाथ से उठाकर आसमान में उछाल सकता हूँ।


अच्छा! आओ मेरे साथ, देखते हैं। कौन अधिक ताकतवर है?


ठीक है।

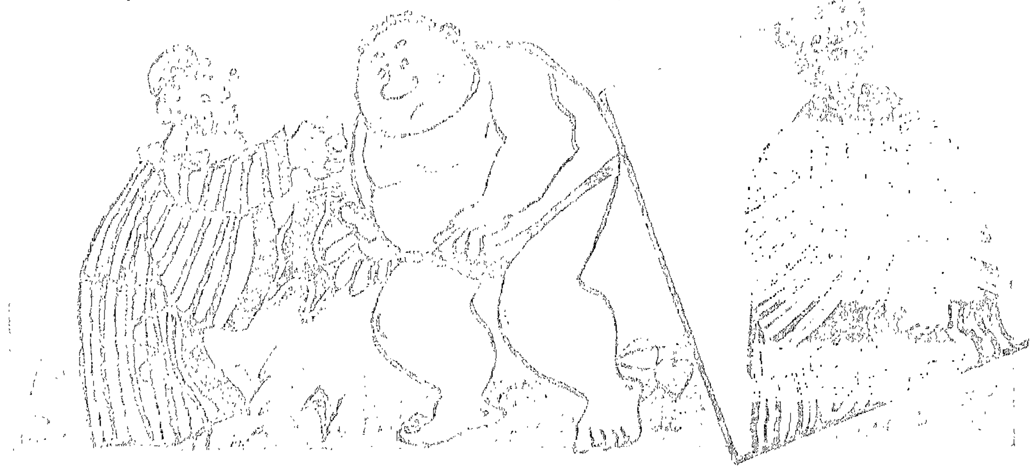

आफ़ंती पहलवान को शहर की चारदीवारी के पास ले गया। और बोला...
जरा इस रुमाल को दीवार के पार फेंककर दिखाओ।
यह भी कोई बड़ी बात है!
पहलवान ने रुमाल उठाकर पूरी ताकत लगाकर जोर से फेंका।

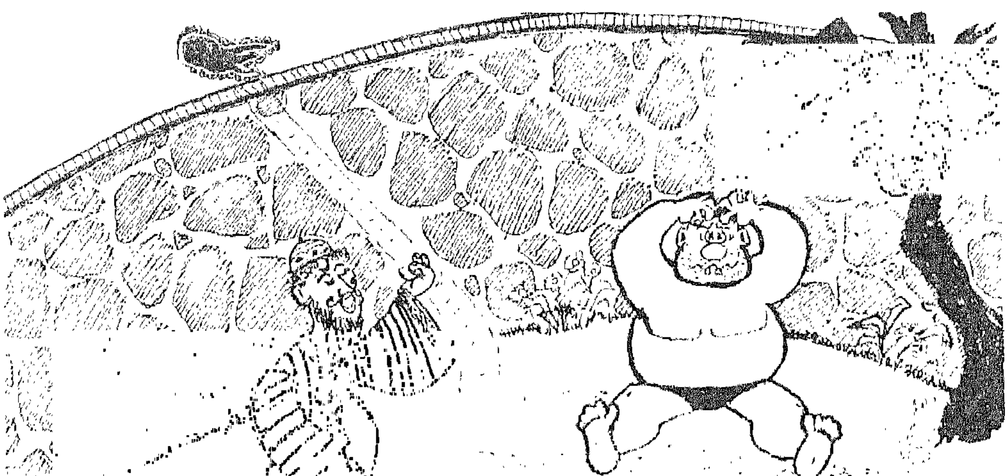
लेकिन रुमाल वहीं गिर पड़ा। आफ़ंती ठहाका मारकर हँस पड़ा।





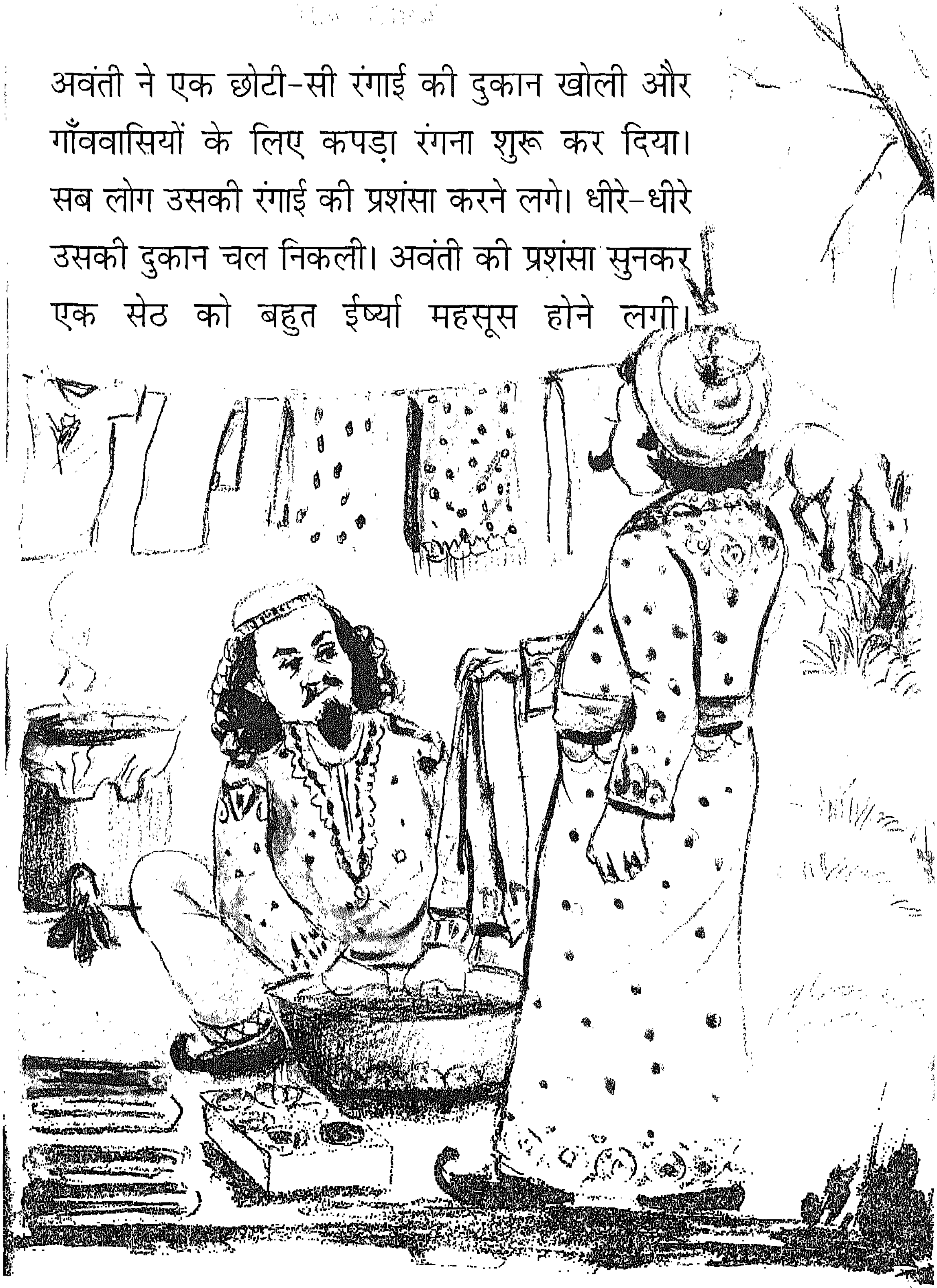
आफ़ंती ने एक छोटा-सा पत्थर उठाया। रुमाल में उसको बांधा और दीवार के पार फेंक दिया।





शिवेंद्र पांडिया

अवंती ने एक छोटी-सी रंगाई की दुकान खोली और गाँववासियों के लिए कपड़ा रंगना शुरू कर दिया। सब लोग उसकी रंगाई की प्रशंसा करने लगे। धीरे-धीरे उसकी दुकान चल निकली। अवंती की प्रशंसा सुनकर एक सेठ को बहुत ईर्ष्या महसूस होने लगी।



अवंती को परेशान करने के लिए वह सेठ कपड़े का एक टुकड़ा लेकर अवंती की दुकान में जा पहुँचा। दरवाज़े के अंदर घुसते ही सेठ बुलंद आवाज़ में बोला – अवंती, ज़रा यह कपड़ा तो अच्छी तरह से रंग दो। मैं देखना चाहता हूँ तुम्हारा हुनर कैसा है। तुम्हारी काफ़ी तारीफ़ सुनी थी, इसीलिए आया हूँ।

अवंती ने सेठजी से पूछा – सेठजी इस कपड़े को आप किस रंग में रंगवाना चाहते हैं?

सेठ ने कहा – रंग? रंग के बारे में मेरी कोई खास पसंद तो है नहीं, पर मुझे हरा, पीला, सफ़ेद, लाल, नारंगी, नीला, आसमानी, काला और बैंगनी रंग कतई अच्छे नहीं लगते। समझे कि नहीं?

अवंती ने जवाब दिया – समझ गया हूँ, अच्छी तरह समझ गया हूँ। मैं ज़रूर आपकी पसंद की रंगाई कर दूँगा!

अवंती ने सेठ का मंसूबा भाँपते हुए उसके हाथ से कपड़े का टुकड़ा ले लिया।

सेठ ने खुश होकर कहा – अच्छा, तो इसे लेने मैं किस दिन आऊँ?

अवंती ने कपड़े को अलमारी में बंद करके उसमें ताला लगा दिया और सेठ से बोला – आप इसे लेने सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार को छोड़कर किसी भी दिन आ सकते हैं।

सेठ समझ गया कि उसकी चाल उल्टी पड़ चुकी है अतः भलाई धीरे से खिसक लेने में ही है। फिर उस सेठ ने दोबारा अवंती की दुकान में घुसने की हिम्मत नहीं की।

आर.एस. त्रिपाठी



कहानी से

- सेठ ने किस रंग में कपड़ा रंगने को कहा?
- अवंती ने कपड़ा अलमारी में बंद कर दिया। क्यों?
- सेठ कपड़ा लेने किस दिन आया होगा?



कौन छुपा है कहाँ?

नीचे के वाक्यों में कुछ हरी-भरी सब्ज़ियों के नाम छुपे हैं। ढूँढ़ो तो ज़रा-

- अब भागो भी, बारिश होने लगी है।
- मामू लीला मौसी कहाँ है?
- शीला के पास बैग नहीं है।
- रानी बोली - हमसे मत बोलो।
- गोपाल कबूतर उड़ा दो।

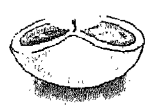


सही जोड़े मिलाओ

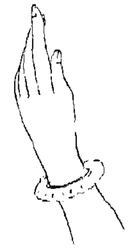
बुलंद
प्रशंसा
बिल्कुल
तारीफ़
ऊँची
ईर्ष्या
अवश्य
ज़रूर
जलन
कतई

मुहावरे

चित्रों को देखो। क्या इन्हें देखकर तुम्हें कुछ मुहावरे या कहावतें याद आती हैं? उन्हें लिखो।

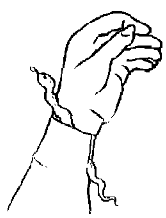


अँधेरा



आरसी

....



आस्तीन



ग्यारह

....

कहो कहानी

विद्यालय, गुरुजी, छुट्टी, बंदर, डंडा, पेड़, केला, ताली, बच्चे, भूख। इन शब्दों को पढ़कर तुम्हारे मन में कुछ बातें आई होंगी। इन सब चीज़ों के बारे में एक छोटी-सी कहानी बनाओ और अपने साथियों को सुनाओ।

उछालो

एक रुमाल या कोई छोटा-सा कपड़ा उछालकर देखो। किसका रुमाल सबसे ऊँचा उछलता है?

रुमाल के साथ बिना कुछ बाँधे इसे और ऊँचा कैसे उछाला जा सकता है?

समझ-समझदारी

रंगाई शब्द रंग से बना है। इसी तरह और शब्द बनाओ –

साफ़	....
चढ़	....
बुन	....

क्या समझे

जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है, उनका मतलब बताओ –

- मुझे बैंगनी रंग <u>कतई</u> अच्छा नहीं लगता। ....
- अवंती ने सेठ का <u>मंसूबा</u> भाँप लिया। ....
- मैं तुम्हारा <u>हुनर</u> देखना चाहता हूँ। ....
- सेठ बुलंद <u>आवाज़</u> में बोला। ....
- सेठ को <u>ईर्ष्या</u> होने लगी। ....
- रंग के बारे में मेरी कोई <u>खास</u> पसंद तो है नहीं। ....

कैसा लगा आफ़ंती

आफ़ंती के बारे में कुछ वाक्य लिखो। तुम उसके कपड़ों, शक्ल-सूरत, पालतू पशु, बुद्धि आदि के बारे में बता सकती हो।

....

....

....

....

....

जोड़े ढूँढो -

दिन - दीन *मेला - मैला*

ऊपर दिए गए शब्दों के जोड़ों में केवल एक मात्रा बदली गई है। किसी भी मात्रा को बदलने से अर्थ भी बदल जाता है। ऐसे और जोड़े बनाओ। देखें, कौन सबसे ज़्यादा जोड़े ढूँढ़ पाता है।

....

....

....

....

कुछ कलाकारी

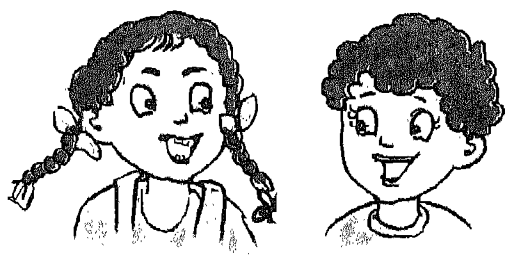
कब आऊँ वाले किस्से को चित्रकथा के रूप में लिखो।

क्या है फ़ालतू

कभी-कभी हम अपनी बात करते हुए ऐसे शब्द भी बोल देते हैं, जिनकी कोई ज़रूरत नहीं होती। इसी तरह इन वाक्यों में कुछ शब्द फ़ालतू हैं। उन्हें ढूँढ़कर अलग करो-

- बाज़ार से हरा धनिया पत्ती भी ले आना।
- एक पीला पका पपीता काट लो।
- अरे! रस में इतनी सारी ठंडी बर्फ़ क्यों डाल दी?
- ज़ेबा, बगीचे से दो ताज़े नींबू तोड़ लो।
- बेकार की फ़ालतू बात मत करो।





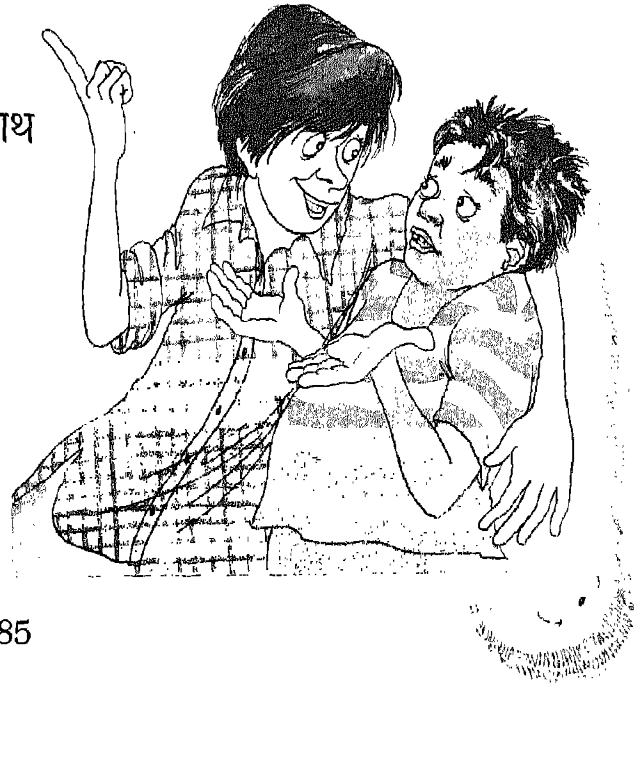
10. क्योंजीमल और कैसे-कैसलिया



इनसे मिलिए – ये हैं, क्योंजीमल। बात-बात पर पूछ देते हैं- क्यों-क्यों-क्यों? भले ही आप से जवाब देते बने या नहीं। पता नहीं क्यों!

और ये हैं उनके दोस्त – कैसे-कैसलिया। ये भी कोई कम नहीं हैं, मौका लगते ही पूछ देते हैं - कैसे-कैसे-कैसे?

भूले-भटके कभी दोनों से एक साथ मुलाकात हो गई तो क्यों और कैसे के बीच ही भटकते रहेंगे आप। क्यों-क्यों-क्यों? कैसे-कैसे-कैसे? पढ़िए और पता कीजिए ।

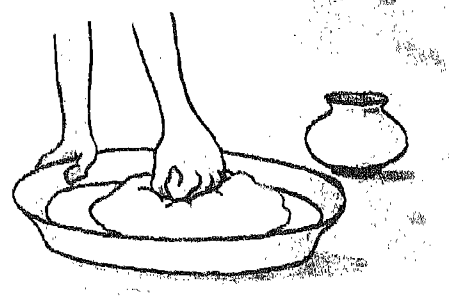




गुरुजी नमस्ते! किधर चले?
नमस्ते! ज़रा बाज़ार जा रहा हूँ।
बाज़ार? क्यों-क्यों-क्यों?
गेहूँ पिसवाना है, इसलिए।
बाज़ार? कैसे-कैसे-कैसे?
साइकिल पर! वैसे निकला
तो पैदल था, पर थैली देख कर
शिवदास ने अपनी गाड़ी दे दी।



अच्छा, गेहूँ पिसवाना है। क्यों-क्यों-क्यों?
अरे, आटा जो चाहिए।
पिसवाना? कैसे-कैसे-कैसे?
चक्की में, भई।
आटा? क्यों-क्यों-क्यों?
क्यों भैया रोटी नहीं बनाएँगे?
रोटी? कैसे-कैसे-कैसे?
अरे आटे को सानेंगे, बेलेंगे, तवे पर पकाएँगे,
आग पर फुलाएँगे ।
सानेंगे? क्यों-क्यों-क्यों?
सुनो-सने आटे में थोड़ा पानी रहता है न?
आग पर तपने से यही पानी भाप बनकर
बिली हुई रोटी को पकाता है,
इसलिए सानेंगे।





सानेंगे, कैसे-कैसे-कैसे?
तुमने कभी देखा नहीं है क्या?
परात पर आटा निकालेंगे, चुटकी भर नमक डालेंगे, फिर धीरे-धीरे एक
हाथ से पानी डालते हुए सानना शुरू करेंगे। पहले-पहले सारा आटा
बिखरेगा, फिर उसे समेटेंगे, और अच्छे से सान लेंगे। समझे?
अच्छा, परात पर! क्यों-क्यों-क्यों? कैसे-कैसे-कैसे?
गुरुजी : तुम लोगों की क्यों और कैसे में तो मेरी चक्की ही बंद हो जाएगी!
बंद हो जाएगी! क्यों-क्यों-क्यों?
बंद हो जाएगी! कैसे-कैसे-कैसे?
लेकिन तब तक गुरुजी
साइकिल पर सवार फुर्र हो चुके हैं।

सुबीर शुक्ला



- गुरुजी थैली में क्या लिए जा रहे थे?
- क्योंजीमल और कैसे-कैसलिया से मिलने पर तुम दोनों के बीच में क्यों भटकते रह जाओगे?
- शिवदास ने गुरुजी की थैली देखकर अपनी गाड़ी क्यों दे दी?

- रोटी को अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग नाम से पुकारा जाता है। कुछ और नाम पता करके लिखो।

  ....

- तुम्हारे घर में **आटा सानने** को क्या कहते हैं?

  आटा गूँधना आटा गलाना आटा मलना

  या कुछ और?

- गुरुजी कौन-से आटे की रोटी खाते थे? अपने साथियों, घर के बड़ों से पता करो कि क्या किसी और चीज़ की रोटी भी बनती है? उनके नाम लिखो। यदि उसका दाना या बाली मिलती है तो उसे भी अपनी कॉपी में चिपका दो।
- रोटी क्या ऐसे बनेगी?

  आटे को सानेंगे, गेहूँ को पिसवाएँगे, आग पर फुलाएँगे, तवे पर पकाएँगे, चकले पर बेलेंगे, गरम-गरम खाएँगे।

  नहीं? तो फिर कैसे?

तो फिर, कैसे? सही क्रम बताओ।

....

....

- गुरुजी ने कैसे-कैसलिया को समझाया कि आटा कैसे साना जाता है। अब तुम घर पर किसी को रोटी बेलते देखो और लिखो कि रोटी कैसे बेली जाती है।
- रोटी बनाने के लिए कितना कुछ काम करना पड़ता है जैसे सानना, बेलना आदि। पता करो और लिखो कि इन्हें बनाने के लिए क्या करना पड़ता है –
    - ✧ चाय बनाने के लिए।
    - ✧ सब्ज़ी बनाने के लिए।
    - ✧ दाल बनाने के लिए।
    - ✧ हलवा बनाने के लिए।
    - ✧ लस्सी बनाने के लिए।



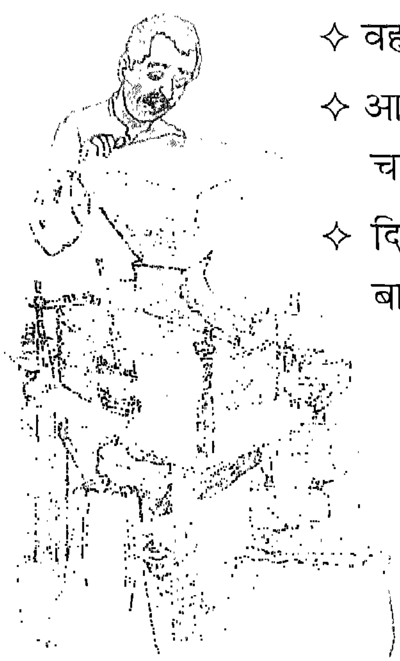
नीचे कुछ आटों के नाम लिखे हैं। उनके दाम पता करो।

नाम	दुकान	[illegible]
मक्की		
बाजरा		
चना		

हम गेहूँ पिसवाने आटा-चक्की पर जाते हैं। हम इन कामों के लिए कहाँ जाते हैं?

- आटा खरीदने ....
- पंचर बनवाने ....
- दूध खरीदने ....
- जूते की मरम्मत करवाने ....
- सुराही खरीदने ....
- कॉपी-किताब खरीदने ....
- बाल कटवाने ....

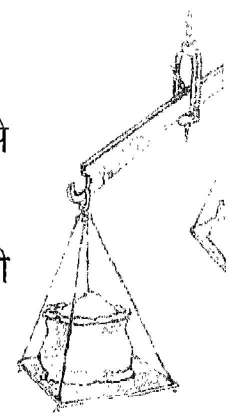
- अपने घर के पास की आटा-चक्की पर जाओ और पता करो कि -

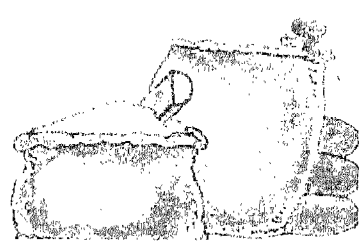


✧ वहाँ क्या-क्या पिसता है?

✧ आटा-चक्की किस चीज़ से चलती है?

✧ दिन में चक्की को कितनी बार रोका जाता है?





नीचे रसोई की कुछ चीज़ों के चित्र बने हैं उन्हें देखकर बताओ कि रोटी बनाने में कौन-कौनसी चीज़ इस्तेमाल नहीं होती। तो ऐसी चीज़ों का इस्तेमाल किस काम के लिए किया जाएगा? लिखो।



....	....
....	....
....	....
....	....

सर्दी आई

सर्दी आई, सर्दी आई
ठंड की पहने वर्दी आई।



सबने लादे ढेर से कपड़े
चाहे दुबले, चाहे तगड़े

नाक सभी की लाल हो गई
सुकड़ी सबकी चाल हो गई।



ठिठुर रहे हैं, काँप रहे हैं
दौड़ रहे हैं, हाँफ रहे हैं।

धूप में दौड़ें तो भी सर्दी
छाँओं में बैठें तो भी सर्दी।



बिस्तर के अंदर भी सर्दी
बिस्तर के बाहर भी सर्दी

बाहर सर्दी, घर में सर्दी
पैर में सर्दी, सर में सर्दी।

इतनी सर्दी किसने कर दी
अंडे की जम जाए ज़र्दी।

सारे बदन में ठिठुरन भर दी
जाड़ा है मौसम बेदर्दी।

सफ़दर हाश्मी



11. मीरा बहन और बाघ

मीरा बहन का जन्म इंग्लैंड में हुआ था। गांधी जी के विचारों का उन पर इतना असर हुआ कि वे अपना घर और अपने माता-पिता को छोड़कर भारत आ गईं और गांधी जी के साथ काम करने लगीं।

आज़ादी के पाँच साल बाद उन्होंने उत्तर प्रदेश के एक पहाड़ी गाँव, गेंवली में गोपाल आश्रम की स्थापना की। उस आश्रम में मीरा बहन का बहुत सारा समय पालतू पशुओं की देखभाल में बीतता था लेकिन गेंवली गाँव के आसपास के जंगलों में बाघ जैसे खतरनाक जानवर भी रहते थे।



पहाड़ी गाँवों में अक्सर बाघ का डर बना रहता है। जंगल कटने के कारण शिकार की तलाश में बाघ कभी-कभी गाँव तक पहुँच जाता है। गेंवली गाँव में एक बार यही हुआ। एक बाघ ने गाँव में घुसकर एक गाय को मार डाला। सुबह होते ही यह खबर पूरे गाँव में फैल गई। गाँव के लोग डरे कि यह बाघ कहीं फिर से आकर दूसरे पालतू जानवरों और किसी आदमी को ही अपना शिकार न बना ले। गाँव के लोग गोपाल आश्रम गए और उन लोगों ने मीरा बहन को अपनी चिंता बताई।

गाँव के लोगों ने अंत में तय किया कि बाघ को कैद कर लिया जाए। उसे कैद करने के लिए उन्होंने एक पिंजड़ा बनाया। पिंजड़े के अंदर एक बकरी बाँधी। योजना यह थी कि बकरी का मिमियाना सुनकर बाघ पिंजड़े की तरफ़ आएगा। पिंजड़े का दरवाज़ा इस प्रकार खुला हुआ बनाया गया था कि बाघ के अंदर घुसते ही वह दरवाज़ा झटके से बंद हो जाए। शाम होने तक पिंजड़े को ऐसी जगह पर रख दिया गया जहाँ बाघ अक्सर दिखाई देता था। यह जगह मीरा बहन के गोपाल आश्रम से ज़्यादा दूर नहीं थी।



रात बीती। सुबह की रोशनी होते ही लोग पिंजड़ा देखने निकल पड़े। उन्होंने दूर से देखा कि पिंजड़े का दरवाज़ा बंद है। वे यह सोचकर बहुत खुश हुए कि बाघ ज़रूर पिंजड़े में फँस गया होगा

लेकिन जब वे पिंजड़े के पास पहुँचे तो क्या देखते हैं – पिंजड़े में बाघ नहीं था!

लोग चकित थे – बाघ के अंदर गए बिना पिंजड़ा बंद कैसे हो गया? लोग मीरा बहन के पास पहुँचे। लोगों ने सोचा कि गोपाल आश्रम पास में ही था, इसलिए शायद मीरा बहन को मालूम हो कि रात में क्या हुआ। पूछने पर मीरा बहन बोलीं –

देखो भाई, मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं सोचती रही कि आखिर बाघ को धोखा देकर हम क्यों फँसाएँ। इसलिए मैं गई और पिंजड़े का दरवाज़ा बंद कर आई।

कहानी से

- कहानी में बाघ को खतरनाक जानवर बताया गया है। नीचे दी गई सूची में सबसे खतरनाक चीज़ तुम्हारी समझ में क्या है और क्यों?

  चाकू, बिजली, टूटा हुआ काँच, आग

- मीरा बहन की बात सुनकर गाँव के लोगों को निराशा हुई होगी। उन्होंने मीरा बहन से क्या कहा होगा? सोचकर गाँव के लोगों की बातें लिखो।

खतरनाक है या नहीं

गेंवली गाँव के आसपास के जंगलों में बाघ जैसे खतरनाक जानवर भी रहते थे। तुम्हारे हिसाब से नीचे लिखे जंतुओं में से कौन-कौन खतरनाक हो सकते हैं? उन पर गोला लगाओ।

भैंस, चीता, बकरी, कुत्ता, बिल्ली, चूहा, साँप, बिच्छू, कछुआ, केंचुआ, तिलचट्टा, कबूतर, भालू

जिनके नाम पर तुमने गोला लगाया, वे कब खतरनाक हो सकते हैं?

- चूहा पकड़ने का पिंजड़ा देखकर बताओ कि वह अपने आप कैसे बंद हो जाता है और एक बार कैद हो जाने के बाद चूहा उससे बाहर क्यों नहीं आ पाता?
- गाँव वालों ने बाघ को पिंजड़े में बंद करने की योजना बनाई थी। किसी आज़ाद पशु या पक्षी को पिंजड़े में बंद करके रखना सही है या गलत? क्यों?

अपने मन से सोचकर लिखो, ऐसा कैसे किया होगा?

- बाघ की खबर पूरे गाँव में फैल गई। कैसे?
- लोग मीरा बहन के पास पहुँचे। क्यों?
- पिंजड़ा बिना बाघ के बंद हो गया। कैसे?

बकरी की कहानी

सोचो, अगर यह कहानी बकरी सुनाती, तो क्या-क्या बताती। उसकी कहानी मज़ेदार होती न?

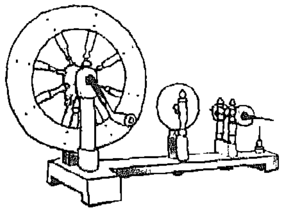
बकरी अपनी कहानी में क्या-क्या बताती?

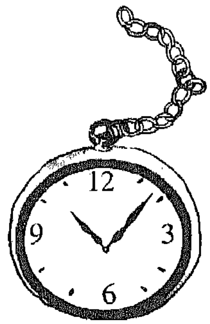
चलो, पकड़ें

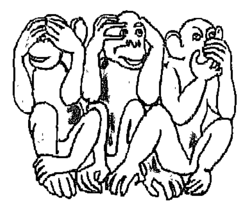
गाँववालों ने बाघ को पकड़ने के लिए एक योजना बनाई थी। कक्कू के घर में रोज़ बिल्ली आकर दूध पी जाती है। कक्कू की मदद करने के लिए कोई योजना बनाओ।

पाठ से आगे

ये सभी चित्र किसी एक व्यक्ति से जुड़े हुए हैं? पता करो कौन?

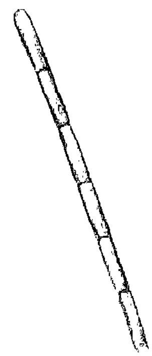












कौन क्या है?

- बाघ, गाय, बकरी, हाथी और हिरण जानवर हैं। नीचे लिखी हुई चीज़ें क्या है? खाली जगहों में लिखो।

✧ अगरतला, अल्मोड़ा, रायपुर, कोच्चि, वडोदरा ....

✧ जलेबी, लड्डू, मैसूरपाक, कलाकंद, पेड़ा ....

✧ नर्मदा, कावेरी, सतलुज, ब्रह्मपुत्र, यमुना ....

✧ बरगद, नारियल, पीपल, चीड़, नीम ....

✧ गेहूँ, बाजरा, चावल, रागी, मक्का ....

✧ कुर्ता, साड़ी, फ़िरन, लहँगा, कमीज़ ....



कोयल कुहू-कुहू, बकरी में-में

जानवरों की बोलियाँ तो तुमने सुनी ही होंगी। कोयल की बोली को जैसे कूकना कहते हैं और मक्खी की बोली को भिनभिनाना, वैसे ही अन्य जानवरों की बोलियों के भी नाम हैं।

नीचे दिए गए खाने में एक तरफ़ जानवरों के नाम हैं, दूसरी तरफ़ बोलियों के। ढूँढ़ निकालो कौन-सी बोली किसकी है?

भैंस	मिमियाना
घोड़ा	रँभाना
हाथी	चिंघाड़ना
बकरी	हिनहिनाना

शेर	रेंकना
गधा	रँभाना
गाय	भौंकना
कुत्ता	दहाड़ना



ठीक करो

हवाई जहाज़ आसमान उड़ रहा है।

तुम्हें यह वाक्य कुछ अटपटा लग रहा होगा। इस वाक्य को फिर से पढ़ो।

हवाई जहाज़ आसमान <u>में</u> उड़ रहा है।

- **अब इसी तरह इन वाक्यों को ठीक करो।**
    - ✧ धूप बैठकर ढोकला खाया।
    - ✧ पुतुल काम करने मना कर दिया।
    - ✧ लता सब मूँगफली खिलाई।
    - ✧ पहाड़ी गाँवों बाघ डर बना रहा है।
- **अब वे सभी शब्द फिर से लिखो जिन्हें तुमने जोड़ा है।**

कहानी की कहानी

कहानी सुनने में हम सब को मज़ा आता है।

तुम्हें घर पर कौन कहानी सुनाता है?

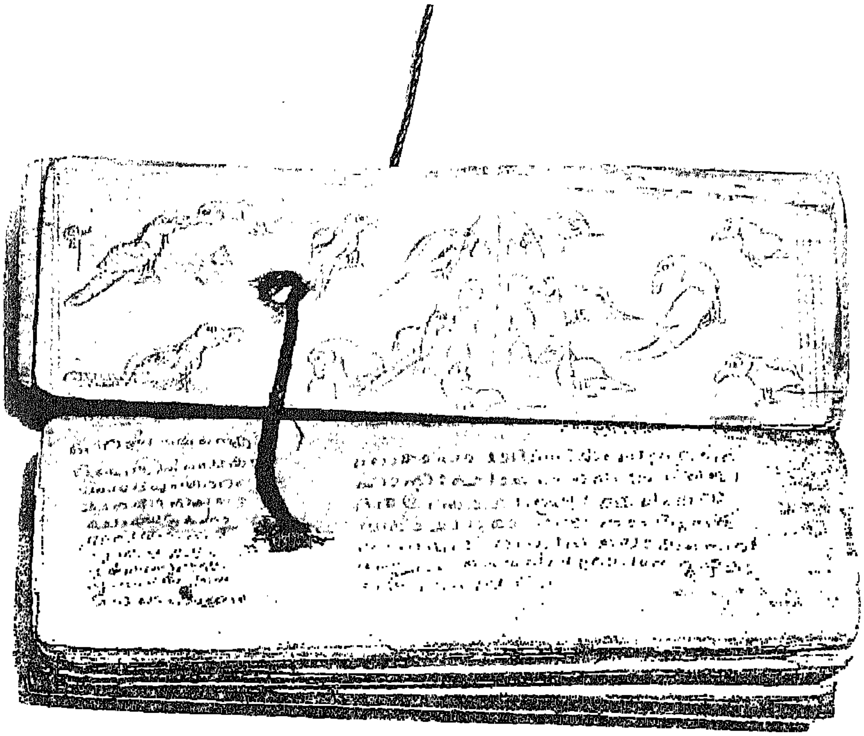
किसकी कहानियाँ सबसे अच्छी लगती हैं?

किसका सुनाने का तरीका सबसे मज़ेदार है? भला क्यों?

बहुत पुरानी बात है। तब भी लोग कहानियाँ सुनते और सुनाते थे - राजा-रानी, परियों की कहानी, शेर और गीदड़ की कहानी। माँ-बाप, बच्चे, दादी-नानी को घेरकर बैठ जाते और बार-बार अपनी मनपसंद कहानी सुनते। बड़े होने पर वे बच्चे अपने बच्चों को कहानी सुनाते। फिर बड़े होकर बच्चे आगे अपने बच्चों को वही कहानियाँ सुनाते। इसी तरह कहानियों का यह सिलसिला आगे बढ़ता। उनके बच्चों के बच्चे, फिर उनके बच्चों के बच्चे उन कहानियों का मज़ा लेते जाते। सुनने-सुनाने से ही कई कहानियाँ आज हम तक पहुँची हैं।

कहानी सुनाने के कई अलग तरीके थे। कोई आवाज़ बदल-बदलकर सुनाता। कोई आँखें मटकाकर। कोई हाथ के इशारों से बात आगे बढ़ाता। कोई गाकर और कोई नाचकर भी कहानी को सजाता। आज भी कई लोग पुरानी कहानियों को नाच-गाकर सुनाते हैं। हर जगह नाच के ऐसे कई अलग-अलग तरीके हैं। *क्या तुम्हारे इलाके में कोई ऐसा कलाकार या कहानी कहने वाला है?*

पंचतंत्र की कहानियाँ सालों से लोग सुनते-सुनाते चले आ रहे थे। फिर लोगों ने सोचा क्यों न इनको लिखकर रख लें। इस तरह भूलेंगी नहीं और सँभली भी रहेंगी। ऐसी कई कहानियों को एक-साथ पोथी में लिख लिया। पोथी का नाम रखा - *पंचतंत्र*।



उस समय लोगों के पास कागज़ और किताबें तो होती नहीं थीं। सोचो, कहानियों को कैसे लिखा होगा?

उस ज़माने में लोग पत्तों पर या पत्थर पर लिखते थे। पेड़ की छाल का भी इस्तेमाल करते थे। खजूर के बड़े पत्ते देखे हैं? उनको छाया में सुखा लेते थे। तेल से उनको नरम बनाकर फिर उन पर कहानी लिखते, पर लिखते किससे? पेंसिल और पेन तो तब थे नहीं। पक्षी के पंख से

ही कलम बना लेते या बाँस को नुकीला बनाकर उससे लिखते। स्याही भी खुद घर पर बनाते थे। क्या तुमने कहीं लकड़ी की कलम देखी है?

पंचतंत्र की कहानियाँ कई सौ साल पहले लिखी गई थीं। दुनिया भर में ये कहानियाँ पसंद की जाती थीं। कई लोगों ने अपनी-अपनी भाषा में इस पोथी को लिखा था। जैसे – उड़िया, बंगाली, मराठी, मलयालम, कन्नड़ आदि।

यहाँ *पंचतंत्र* की एक कहानी की एक पंक्ति दी गई है। यह पंक्ति कई भाषाओं में लिखी है।

<u>सिंह-शृगाल-कथा</u>

अस्ति कस्मिंश्चित् वनोद्देशे वज्रदंष्ट्रो नाम सिंहः ।
किसी वन के एक इलाके में वज्रदंष्ट्र नाम का एक सिंह रहता था ।
କୌଣସି ବଣର ଏକ ସ୍ଥାନରେ ବଜ୍ରଦଂଷ୍ଟ୍ର ନାମକ ସିଂହଟିଏ ରହୁଥିଲା ।.
কোনো বোনের ঐক ভাগে বজ্রদংষ্ট্র নামের ঐকটা সিংহো থাকতো ।
ഏതോ ഒരു കാട്ടി വജ്രദംഷ്ട്രനെന്നു പേരായ ഒരു സിംഹം ഉ ായിരുന്നു

इनमें से तुम कौन-सी भाषा पहचान पाए?

क्या कोई पुरानी पोथी तुमने अपने आस-पास देखी है?

आज हम इन पुरानी पोथियों को सँभालकर रखते हैं। लोगों ने बहुत मेहनत से इन्हें लिखा था। इनमें कहानियाँ संजोकर, बचाकर रखी थीं। वे कहानियाँ हम आज भी सुनते और पढ़ते हैं। इन्हें तुम अपने बच्चों को भी सुनाओगे और पढ़ाओगे और इन्हें तुम्हारे बच्चों के बच्चे भी पढ़ेंगे। पढ़ेंगे न?



12. जब मुझको साँप ने काटा

एक दिन मैंने अपने अहाते में एक छोटा-सा साँप रेंगते देखा। वह धीरे-धीरे रेंग रहा था। मुझको देखते ही वह भागा और वहीं पर पड़े हुए नारियल के एक खोल में घुसकर छिप गया। मैंने पत्थर का एक टुकड़ा उठाया और उससे नारियल के खोल का मुँह बंद कर दिया। उसे लेकर मैं नानी के पास दौड़ गया।

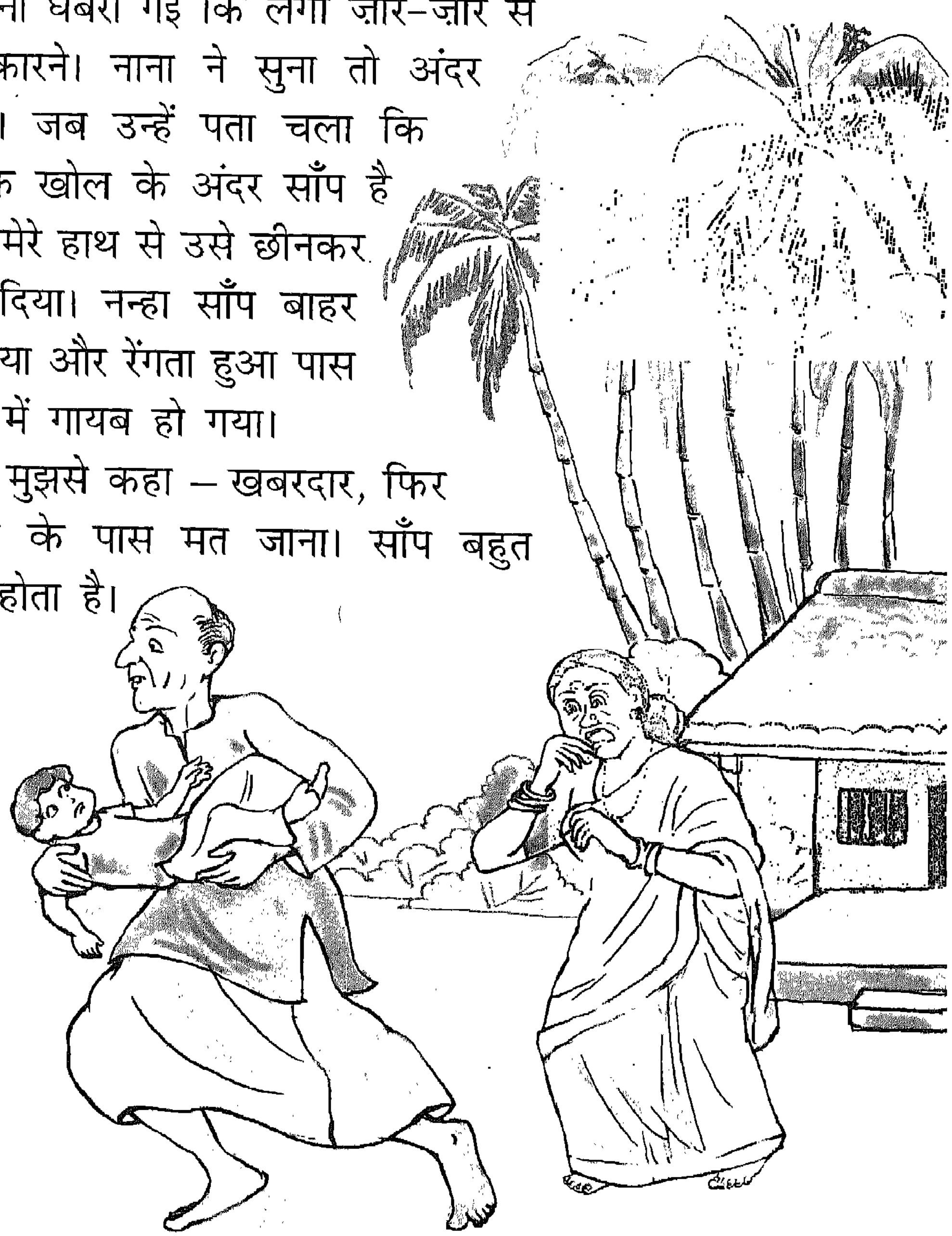


मैंने कहा – नानी, देखो, मैंने साँप पकड़ा है।

नानी चीख उठीं – साँप!

वह इतना घबरा गई कि लगीं ज़ोर-ज़ोर से चीखने-पुकारने। नाना ने सुना तो अंदर दौड़े आए। जब उन्हें पता चला कि नारियल के खोल के अंदर साँप है तो उन्होंने मेरे हाथ से उसे छीनकर दूर फेंक दिया। नन्हा साँप बाहर निकल आया और रेंगता हुआ पास की झाड़ी में गायब हो गया।

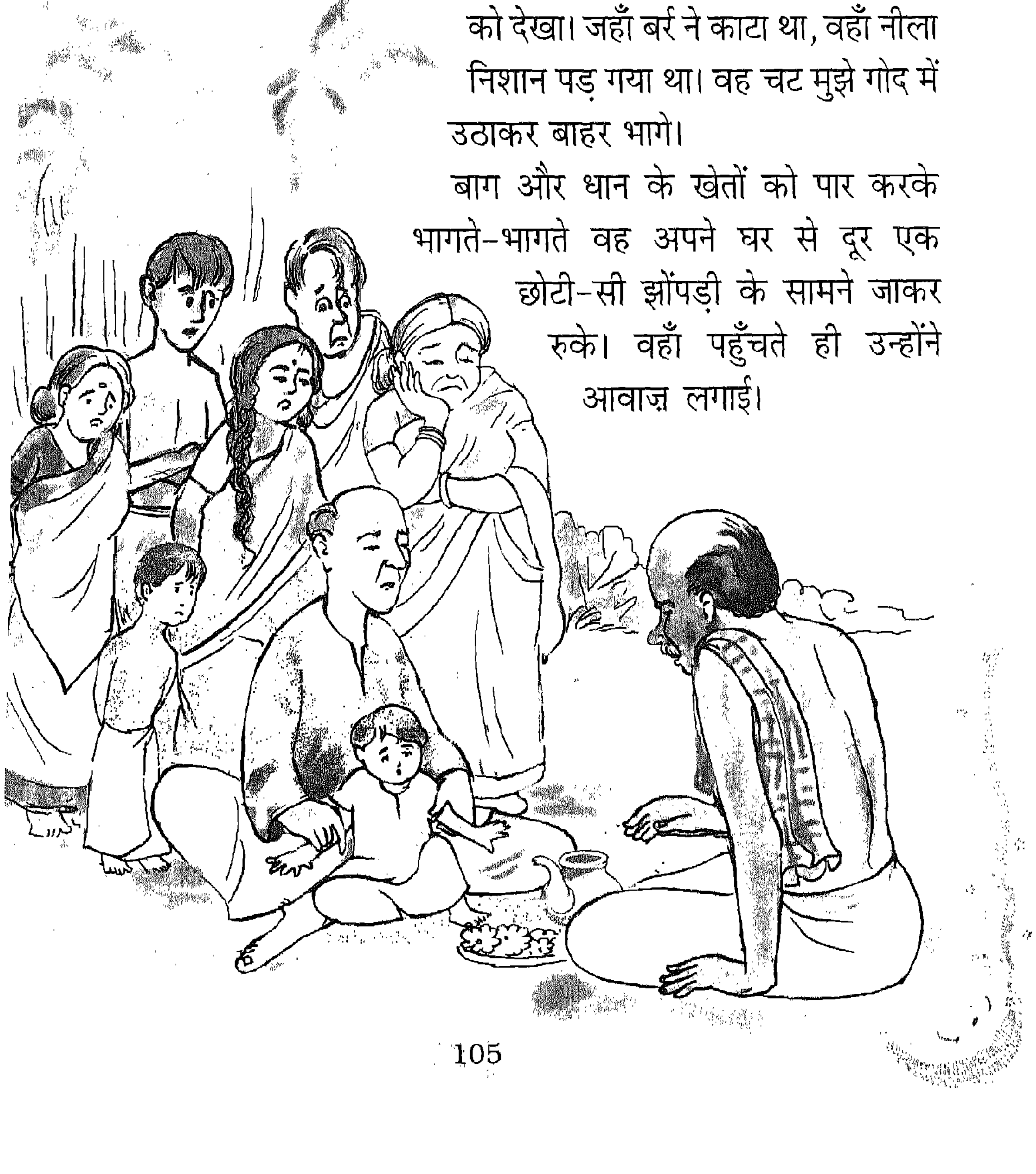
नाना ने मुझसे कहा – खबरदार, फिर कभी साँप के पास मत जाना। साँप बहुत खतरनाक होता है।



उसी दिन शाम को मैं एक बर्र को पकड़ने की कोशिश कर रहा था कि उसने काट खाया। बड़ी ज़ोर से दर्द उठा। मुझे दर्द से कराहते देखकर नानी ने सोचा कि मुझे साँप ने काट लिया है। मैंने दौड़कर नानी को उँगली दिखाई। उन्होंने जल्दी से नाना को पुकारा।

नाना तुरंत दौड़े आए और मेरी उँगली को देखा। जहाँ बर्र ने काटा था, वहाँ नीला निशान पड़ गया था। वह चट मुझे गोद में उठाकर बाहर भागे।

बाग और धान के खेतों को पार करके भागते-भागते वह अपने घर से दूर एक छोटी-सी झोंपड़ी के सामने जाकर रुके। वहाँ पहुँचते ही उन्होंने आवाज़ लगाई।



एक बूढ़ा आदमी बाहर निकला। वह साँप के काटने का मंत्र जानता था। नाना ने उससे कहा – इस बच्चे को साँप ने काट लिया है। इसकी झाड़-फूँक कर दो।

बूढ़ा मुझे झोंपड़ी में ले गया।

उसने मेरी उँगली देखी और बोला – चुपचाप बैठो। हिलना-डुलना मत।

फिर पीतल के बर्तन में पानी लाया और मेरे सामने बैठकर मंत्र पढ़ने लगा।

मैं चाहता तो बहुत था कि उस बूढ़े को बता दूँ कि मुझे साँप ने नहीं, बर्र ने काटा है। पर मेरे नाना मुझे कसकर पकड़े रहे और मुझे बोलने ही नहीं दिया। जैसे ही मैं कुछ कहने को मुँह खोलता, वह डाँटकर कहते – चुप! डर के मारे मैं चुप हो जाता। हमारे पीछे-पीछे हमारी नानी भी कई लोगों के साथ वहाँ आ पहुँची। सब लोग उदास खड़े देखते रहे।

तब तक मेरी उँगली का दर्द जा चुका था। फिर भी मुझे वहाँ ज़बरदस्ती बैठकर झाड़-फूँक करवानी पड़ रही थी। कुछ मिनट बाद बूढ़ा आदमी उठा। उसने उसी बर्तन के पानी से मेरी उँगली धोई और मुझे पिलाया भी। उसने मुझे बोलने से मना कर दिया ताकि दवा का पूरा असर हो। फिर वह नाना से बोला – जय हो भगवान की! अब बच्चा खतरे से बाहर है। अच्छा हुआ, आप समय रहते मेरे पास ले आए। बड़े ज़हरीले साँप ने काटा था।

सब लोगों ने बूढ़े को उसके अद्भुत इलाज के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। घर लौटने के बाद नाना ने उसके लिए बहुत-सी चीज़ें भेंट में भेजीं।

शंकर

कहानी की बात

- नाना मुझे झाड़-फूँक वाले आदमी के पास क्यों ले गए?
- मैं बूढ़े आदमी को क्या बताना चाहता था?
- जब साँप नारियल के खोल में घुस गया तो मैंने क्या किया था? मैंने ऐसा क्यों किया होगा?
- क्या बूढ़े आदमी ने सचमुच मेरा इलाज कर दिया था? तुम ऐसा क्यों सोचते हो?
- मुझे असल में साँप ने नहीं काटा था। फिर मैंने अपनी कहानी का नाम **जब मुझको साँप ने काटा** क्यों रखा है? तुम इससे भी अच्छा कोई नाम सोचकर बताओ।

[illegible]

कहानी में लड़के को बर्र काट लेती है। बर्र का डंक होता है। कुछ और कीड़ों (जंतुओं) का नाम लिखो जो डंक मारते हैं।

....



तुम्हारी बात

- मैं बूढ़े को कुछ बताना चाहता था पर बता नहीं सका। क्या तुम्हारे साथ भी कभी ऐसा हुआ है?
- क्या तुमने कभी साँप देखा है? तुमने साँप कहाँ देखा? उसे देखकर तुम्हें कैसा लगा?
- अपने घर पर पूछो कि अगर किसी को साँप काट ले तो वे क्या करेंगे?



अब बात करें

- तुम क्या करोगी अगर तुम्हें या तुम्हारे आसपास :
  - ✧ किसी को बर्र काट ले?
  - ✧ किसी को चोट लग जाए?
  - ✧ किसी की आँख में कुछ पड़ जाए?
  - ✧ किसी की नाक से खून बहने लगे?

  कक्षा में इन पर बातचीत करो। हो सके तो किसी नर्स या डॉक्टर को कक्षा में आमंत्रित कर बात करो।



ज़रा सोचो तो

- नारियल के खोल जैसी और कौन-सी चीज़ों में साँप छिप सकता था?
- वह खोल अहाते में कैसे पहुँचा होगा?



घर के हिस्से

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। उन शब्दों में से कुछ शब्द घर से संबंधित हैं। उन पर घेरा लगाओ।

अहाता	आँगन	बरामदा	ज़ीना	अटारी
आला	घेर	सीढ़ी	छत	सड़क
रसोई	छज्जा	दालान	अस्तबल	रहट
नहर	पुलिया	जोहड़	डाकघर	टाँड
	कमरा	मुँडेर		

क्या समझे!

नीचे लिखे वाक्यों का मतलब बताओ –

- साँप पास की झाड़ी में गायब हो गया।

  ....

- वह चट मुझे गोद में उठाकर भागे।

  ....

- अब बच्चा खतरे से बाहर है।

  ....

- नाना ने उसके लिए बहुत-सी चीज़ें भेंट में भेजीं।

  ....

कैसे कहा

- अलग-अलग निशानों से पता चलता है कि बात कैसे कही गई होगी। अब नीचे लिखे वाक्यों में सही निशान लगाओ। अब इन्हें बोलकर देखो। (।) (!) (?)

✧ नानी चीख उठी साँप

✧ साँप धीरे-धीरे रेंग रहा था

✧ क्या तुम बाज़ार चलोगी

✧ चुपचाप बैठो हिलना-डुलना मत

✧ तुम्हें यह कहानी कैसी लगी

✧ अहा कितनी मीठी है

क्या कहोगे

तुम लड़के को क्या कहोगे? कारण देकर बताओ।

निडर, नादान, होशियार, शरारती, डरपोक, शर्मीला

(याद रखो वह खोल में साँप लेकर भागा था।)

साँप धीरे-धीरे रेंग रहा था।

यहाँ धीरे शब्द का दो बार इस्तेमाल किया गया है। ऐसे ही और कुछ शब्द लिखो और उनसे वाक्य बनाओ।

चलते-चलते ....

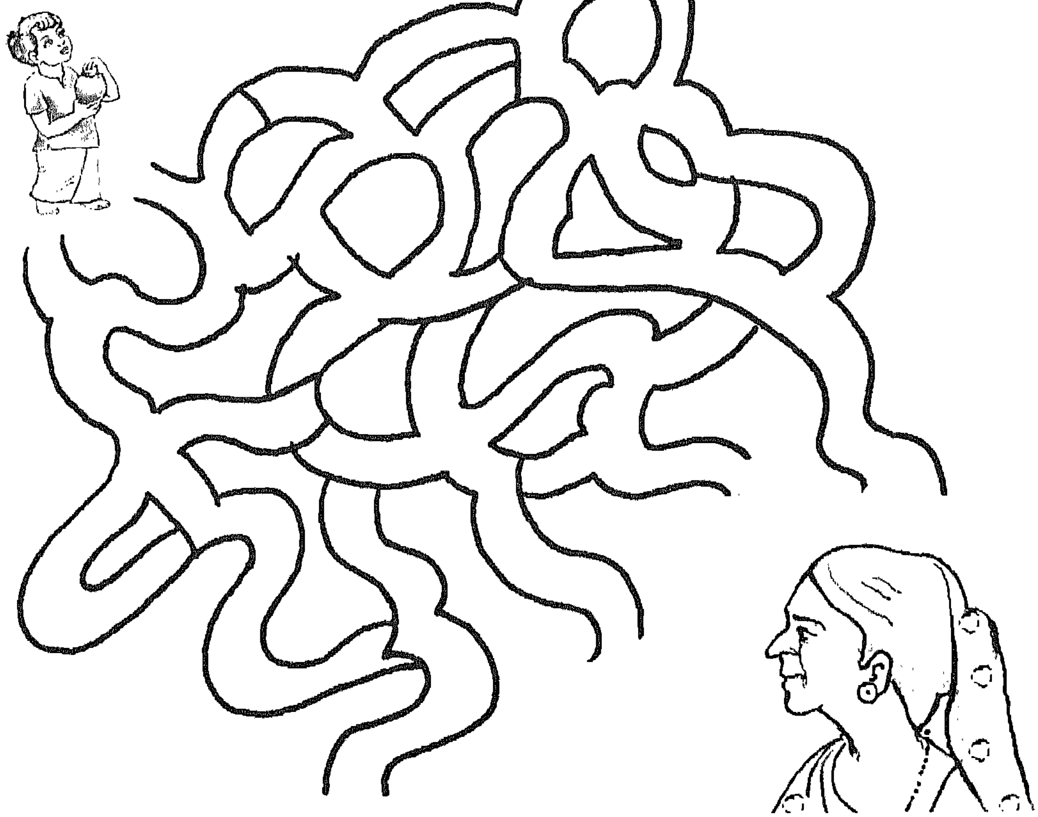
पीछे-पीछे ....

....

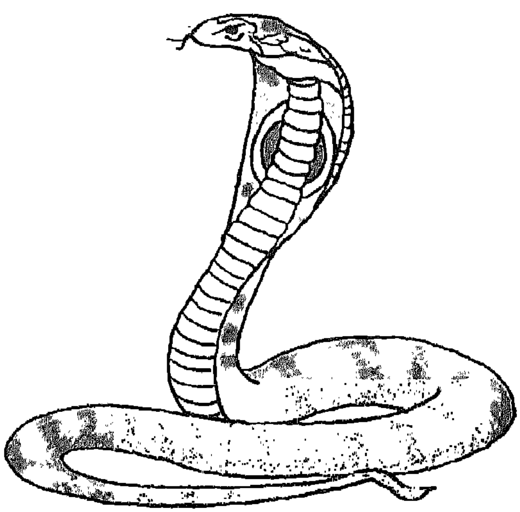
....

....

भूलभुलैया



- साँप अपना भोजन चबाते नहीं हैं। वे भोजन साबुत निगलते हैं।
- साँप कभी बढ़ना बंद नहीं करते।
- साँप नाक से नहीं सूँघते। सूँघने के लिए साँप जीभ का इस्तेमाल करते हैं।
- साँप के कान नहीं होते। इसलिए साँप बीन की धुन सुनकर नहीं नाच सकता। वास्तव में वह बीन बजाने वाले सपेरे से डरकर अपना फन फैला लेता है और लोग समझते हैं वह झूम रहा है।
- साँप दूध नहीं पीते। कुछ सँपेरे साँप को ज़बरदस्ती दूध पिलाते हैं पर इससे साँप मर भी सकता है।
- भारत में लगभग 50 तरह के साँप ज़हरीले हैं पर सिर्फ़ 4 साँपों के ज़हर से आदमी को खतरा होता है।



कैलाश कालोनी,
19 नवंबर 2005

प्यारी मौसी,

नमस्ते, मौसी आप की याद आती है। जब आप नहीं होती तो मुझे रोना आता है। मौसी ज़रूर रक्षाबंधन पर आना। मौसी भाई और बहन कैसी हैं और आप कैसी हो। हम यहाँ ठीक हैं लेकिन छोटे भाई को बुखार आ गया था। अब तो वह ठीक है। मौसी हमारे घर कब आओगी। मौसी जरूर आना हमारे घर हम पार्टी बनाएँगे। ममता और रोहित पढ़ने जाते हैं तो उनसे कहना वो दोनों ध्यान से पढ़ें। राहुल तो रोता है कहता है कि मुझे मम्मी के पास जाना है। हम किसी दिन आएँगे। मौसी मैं पत्र बंद करती हूँ। छोटे भाई-बहन को प्यार देना।

आपकी बेटी,
राधा

अरेरा कालोनी
भोपाल
10 अप्रैल 2005

आदरणीय बुआजी,

नमस्ते।

आशा है आप सब ठीक होंगे। मेरी यहाँ परीक्षा होने वाली है। इस बार माँ ने कहा है कि गर्मी की छुट्टियां में हम सब आपके पास आ रहे हैं। मुझे आपकी बहुत याद आती है। मुनिया दादी और राजू भैया कैसे हैं? हम सब छुट्टियों मे ~~ख~~ खूब खेलेंगे। गाँव मे आम भी ढेर सारे खाएंगे। मै आप सबके लिये यहाँ से क्या लाऊ? बुआ जी जब मैं आऊंगी तो आप मेरे खाने के लिए मालपुआ की तैयारी करके रखना। बाकी बाते मिलने पर करेगे।

आपकी बेटी
महिमा

13. मिर्च का मज़ा

एक काबुलीवाले की कहते हैं लोग कहानी,
लाल मिर्च को देख गया भर उसके मुँह में पानी।

सोचा, क्या अच्छे दाने हैं, खाने से बल होगा,
यह ज़रूर इस मौसम का कोई मीठा फल होगा।

एक चवन्नी फेंक और झोली अपनी फैलाकर,
कुँजड़िन से बोला बेचारा ज्यों-त्यों कुछ समझाकर।

लाल-लाल, पतली छीमी हो चीज़ अगर खाने की,
तो हमको दो तोल छीमियाँ फ़कत चार आने की।

हाँ, यह तो सब खाते हैं – कुँजड़िन बेचारी बोली,
और सेर भर लाल मिर्च से भर दी उसकी झोली।

मगन हुआ काबुली फली का सौदा सस्ता पाके,
लगा चबाने मिर्च बैठकर नदी-किनारे जाके।





मगर, मिर्च ने तुरंत जीभ पर अपना ज़ोर दिखाया,
मुँह सारा जल उठा और आँखों में जल भर आया।

पर, काबुल का मर्द लाल छीमी से क्यों मुख मोड़े?
खर्च हुआ जिस पर उसको क्यों बिना सधाए छोड़े?

आँख पोंछते, दाँत पीसते, रोते और, रिसियाते,
वह खाता ही रहा मिर्च की छीमी को सिसियाते।

इतने में आ गया उधर से कोई एक सिपाही,
बोला – बेवकूफ़! क्या खाकर यों कर रहा तबाही?
कहा काबुली ने – मैं हूँ आदमी न ऐसा-वैसा।
जा तू अपनी राह सिपाही, मैं खाता हूँ पैसा!

रामधारी सिंह दिनकर

कैसे समझाओगे?

- काबुलीवाले को सब्ज़ी बेचने वाली की भाषा अच्छी तरह समझ नहीं आती थी। इसलिए उसे अपनी बात समझाने में बड़ी मुश्किल हुई। चलो, देखते हैं तुम अपनी बात बिना बोले अपने साथी को कैसे समझाते हो? नीचे लिखे वाक्य अलग-अलग पर्चियों में लिख लो। एक पर्ची उठाओ। अब यह बात तुम्हें अपने साथी को बिना कुछ बोले समझानी है—

  ✧ मुझे बहुत सर्दी लग रही है।

  ✧ बिल्ली दूध पी रही है, उसे भगाओ।

  ✧ मेरे दाँत में दर्द है।

  ✧ चलो, बाज़ार चलते हैं।

  ✧ अरे, ये तो बहुत कड़वा है।

  ✧ चोर उधर गया है, चलो उसे पकड़ें।

  ✧ पार्क में चलकर खेलेंगे।

  ✧ मुझे डर लग रहा है।

  ✧ उफ़ ये बदबू कहाँ से आ रही है।

  ✧ अहा! लगता है कहीं हलवा बना है।

सही सवाल

काबुलीवाले ने कहा – अगर ये लाल चीज़ खाने की है, तो मुझे भी दे दो।

सब्ज़ी बेचने वाली ने कहा – हाँ ये तो सब खाते हैं। ले लो।

इस तरह बेचारा काबुलीवाला मिर्च खा बैठा। तुम्हारे हिसाब से काबुलीवाले को मिर्च देखने के बाद क्या पूछना चाहिए था?

भाषा की बात

मुँह सारा <u>जल</u> उठा और आँखों में <u>जल</u> भर आया।

यहाँ <u>जल</u> शब्द को दो अर्थों में इस्तेमाल किया गया है।

जल - जलना, तीखा

जल - पानी

इसी तरह नीचे दिए गए शब्दों के भी दो अर्थ हैं।

इन शब्दों का इस्तेमाल करते हुए एक-एक वाक्य बनाओ पर ध्यान रहे -

- वाक्य में वह शब्द दो बार आना चाहिए
- दोनों बार उस शब्द का मतलब अलग निकलना चाहिए। (जैसे ऊपर दिए गए वाक्य में <u>जल</u>)

  - ✧ हार - ....
  - ✧ आना - ....
  - ✧ उत्तर - ....
  - ✧ फल - ....
  - ✧ मगर - ....
  - ✧ पर - ....

छाँटो

कविता की वे पंक्तियाँ छाँटकर लिखो जिनसे पता चलता है कि

- काबुलीवाला कुछ शब्द अलग तरीके से बोलता था।

  ....

- काबुलीवाला कंजूस था।

  ....

- मिर्च बहुत तीखी थी।

....

- काबुलीवाले को मिर्च के बारे में नहीं पता था।

....

- काबुलीवाले को 25 पैसे की मिर्च चाहिए थी।

....

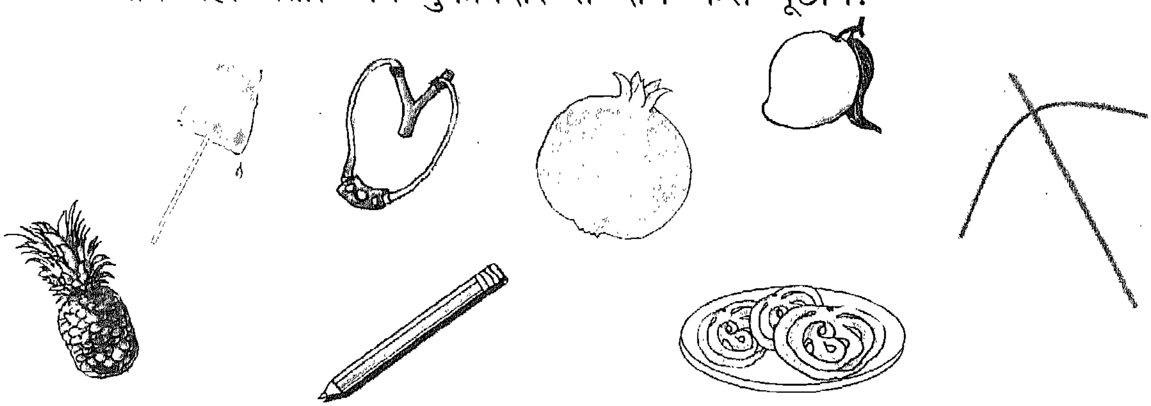
चार आना

- चवन्नी मतलब चार आना।
  चार आना मतलब 25 पैसे।
  तो एक रुपए में कितने पैसे?

अब बताओ –
अठन्नी मतलब .... आने।
इकन्नी मतलब .... आना।
दुअन्नी मतलब .... आने।

तुम कैसे पूछोगे?

तुम बाज़ार गए। दुकानों में बहुत-सी चीज़ें रखी हैं। तुम्हें दूर से ही अपनी मनपसंद चीज़ का दाम पता करना है, पर तुम्हें उस चीज़ का नाम नहीं पता। अब दुकानदार से दाम कैसे पूछोगे?



बातचीत के लिए

- काबुलीवाले ने मिर्च को स्वादिष्ट फल क्यों समझ लिया?
- सब्ज़ी बेचने वाली ने क्या सोचकर उसे झोली भर मिर्च दी होगी?
- सारी मिर्चें खाने के बाद काबुलीवाले की क्या हालत हुई होगी?
- अगले दिन सब्ज़ी वाली टमाटर बेच रही थी। क्या काबुलीवाले ने टमाटर खाया होगा?

आगे-पीछे

कुंजड़िन से बोला बेचारा ज्यों-त्यों कुछ समझाकर

इस पंक्ति को ऐसे भी लिख सकते हैं –

बेचारा ज्यों-त्यों कुछ समझाकर कुंजड़िन से बोला।

अब इसी तरह इन पंक्तियों को फिर से लिखो -

- हमको दो तोल छीमियाँ फ़कत चार आने की।

  ....

- वह खाता ही रहा मिर्च की छीमी को सिसियाते।

  ....

- जा तू अपनी राह सिपाही, मैं खाता हूँ पैसा।

  ....

- एक काबुलीवाले की कहते हैं लोग कहानी।

  ....

कविता रचो

अपने मन से बनाकर एक कविता यहाँ लिखो।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

मुँह में पानी

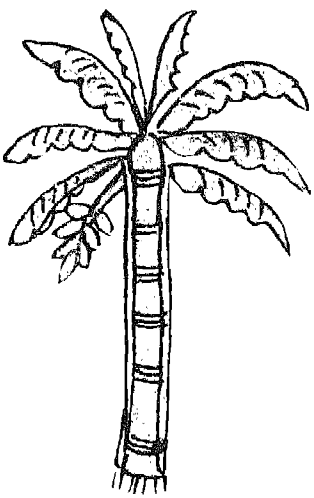
- लाल-लाल मिर्च देखकर काबुलीवाले के मुँह में पानी आ गया। तुम्हारे मुँह में किन चीज़ों को देखकर या सोचकर पानी आ जाता है?

....

....

तुम्हें चाहिए : पाँच-छह कागज़, अलग-अलग मोम के रंग

कैसे करना है: अलग-अलग पेड़ चुनो जैसे केला, बबूल, आम, बाँस, नारियल, जामुन। अब किसी एक पेड़ के तने पर अपना कागज़ रखो। उस पर किसी मोम रंग को ऊपर से नीचे की तरफ़ घिसो। तुम्हारे कागज़ पर उस पेड़ के तने की छाल की छाप आ गई न! इसी तरह दूसरे पेड़ों के साथ करो।



इन कागज़ों को अपनी कॉपी में चिपकाना मत भूलना



बच्चों को बताएँ की यह चित्र बिहार की मधुबनी शैली में बना है।

15. सबसे अच्छा पेड़

तीन भाई थे। एक दिन सुबह के समय तीनों नए घरों की तलाश में निकल पड़े। गरम-गरम धूप में वे सड़क पर चलते चले गए। थोड़ी देर में आम का एक बड़ा पेड़ आया। उसके नीचे ठंडी छाँह थी। तीनों भाई उसके नीचे आराम करने लगे।



पेड़ के पके आम तोड़-तोड़कर वे मीठा-मीठा रस चूसने लगे। बड़े भाई ने कहा – भाई मुझे तो यही जगह पसंद है। आम के पेड़ से बढ़कर क्या हो सकता है? आम कच्चे होंगे, तो हम अचार बनाएँगे। और जब वे पक जाएँगे, तो हम मीठे-मीठे आम खाएँगे। कुछ आम हम बाद में खाने के लिए सुखाकर रख लेंगे।

पहले भाई ने आम के पेड़ के नीचे एक झोंपड़ी बनाई और वह वहीं ठहर गया। लेकिन उसके भाई वहाँ नहीं ठहरे, वे आगे चल पड़े।

चलते-चलते उन्हें केले के कुछ पेड़ मिले। तभी आसमान से एक काला बादल गुज़रा।

टप-टप....... पानी बरसने लगा। दोनों भाइयों ने केले का एक-एक पत्ता काट लिया, उसके साए में उन पर पानी नहीं गिरा। ज़रा देर में बादल चला गया। बारिश रुक गई।

दूसरे भाई ने कहा – बड़ी भूख लगी है।

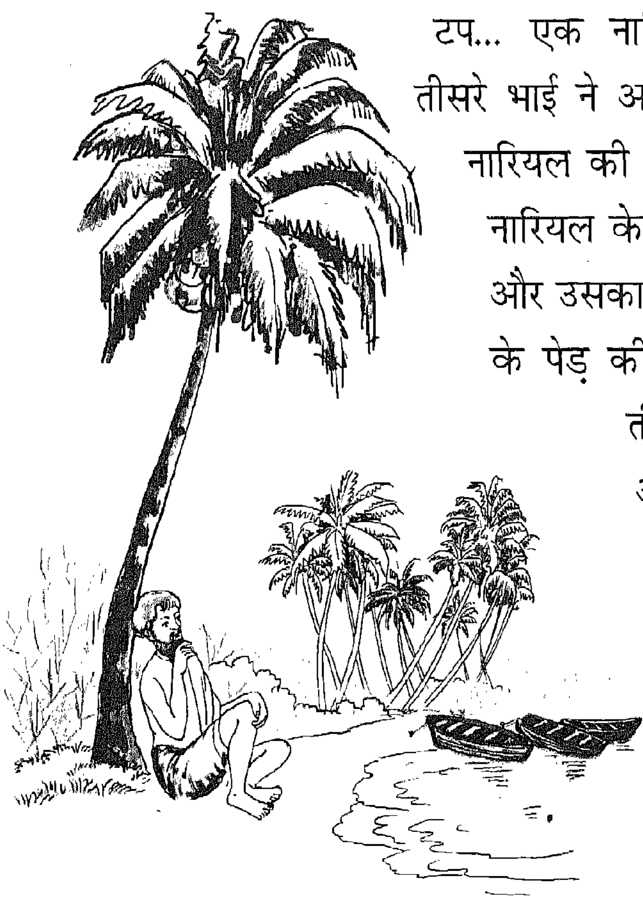
मुझे भी – तीसरे भाई ने कहा। दोनों ने केले का एक पत्ता चीरा, उन्होंने एक-एक टुकड़े पर खाना परोसा और दोनों ने भरपेट खाना खाया। इसके बाद एक-एक केला भी खाया।



दूसरे भाई ने कहा – मैं तो यहीं घर बनाऊँगा। केले के पेड़ से अच्छा क्या होगा, बढ़िया केले खाने को मिलेंगे। उनकी सब्ज़ी बनाएँगे। कुछ केले हम बेच देंगे। उनके पैसे से हम चावल खरीद लेंगे और केले के पत्ते भी काम आएँगे।

इसीलिए दूसरे भाई ने वहीं अपनी झोपड़ी बना ली।

मगर तीसरा भाई आगे बढ़ता चला गया। चलते-चलते उसे नारियल का एक पेड़ मिला। पेड़ बड़ा लंबा और पतला था। तीसरे भाई ने कहा – कैसी प्यास लगी है!



टप... एक नारियल ज़मीन पर टपक पड़ा। तीसरे भाई ने अपना चाकू निकाला। खर-खर.. नारियल की जटाएँ साफ़ हो गईं। फिर उसने नारियल के छिलके में छोटा-सा छेद किया और उसका ठंडा-मीठा पानी पीया। नारियल के पेड़ की छोटी-सी छाँह!

तीसरा भाई उसी छाँह में बैठ गया और सोचने लगा –

आम का पेड़ बहुत बढ़िया होता है और आम भी बड़ा अच्छा फल है। केले का पेड़ बड़े काम का होता है और केला खाने में अच्छा होता है।

पेड़ नीम का भी अच्छा है। उसकी दातुन बड़ी अच्छी रहती है। घर में कोई बीमार हो, तो लोग नीम की टहनियाँ दरवाज़े पर लटका देते हैं। मेरे पास नीम का पेड़ हो, तो मैं उसकी टहनियाँ बेच सकता हूँ और पेड़ मुझे ठंडी छाँह भी देगा और अगर कहीं मेरे पास रबड़ का पेड़ होता, तो मैं अपना चाकू निकाल कर पेड़ की छाल में एक लंबा चीरा लगा देता। चीरे के तले में एक प्याला रख देता। पेड़ के दूधिया रस को मैं प्याले में भर लेता। रस को पकाकर मैं रबड़ बना लेता। रबड़ मैं बेच देता। रबड से लोग गुब्बारे, टायर और तरह-तरह की चीज़ें बना लेते।

अच्छे पेड़ों की क्या कमी है! नारियल के पेड़ की ही सोचो। नारियल की जटाओं को काटकर मैं मोटी डोरियाँ बना सकता हूँ और डोरियों से मैं मज़बूत चटाइयाँ भी बना सकता हूँ। रस्सियों और चटाइयों को मैं शहर के बाज़ार में बेच सकता हूँ। मैं नारियल का पानी पी सकता हूँ। मैं नारियल की गरी खा सकता हूँ और कुछ गरी सुखाकर मैं खोपरा भी तैयार कर सकता हूँ, खोपरे को पेरकर मैं गोले का तेल निकाल सकता हूँ। गोले का तेल साबुन और कितनी ही चीज़ें बनाने के काम आता है। नारियल के छिलके को साफ़ करके कटोरे और प्याले बना सकता हूँ। ठीक तो है, मेरे लिए तो यही पेड़ सबसे अच्छा है। मैं तो इसी के नीचे घर बनाऊँगा।

इसलिए तीसरे भाई ने नारियल के तले अपनी कुटिया बनाई और मज़े से रहने लगा।

तुम्हारे लिए कौन-सा पेड़ सबसे अच्छा है?

ज. भारतदास

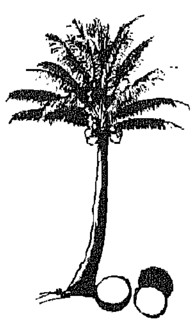
ज़रा सोचो तो

- तीनों भाई किस मौसम में घर की तलाश में निकले?
- तुम्हें कैसे पता चला?
- कौन-सा महीना होगा?
- घर की तलाश पर निकलने से पहले वे कहाँ रहते होंगे?

- इन मौकों पर तुम किस पेड़ के पत्ते का इस्तेमाल करोगी –
  - ✧ मेहमान को खाना खिलाने के लिए ....
  - ✧ बारिश में भीगते समय छाते की तरह ....
  - ✧ सीटी बजाने के लिए ....
  - ✧ रंग बनाने के लिए ....
  - ✧ गर्मी से परेशान होकर पंखा करने के लिए ....

क्या लगाओगी?

तुम्हें अगर पेड़ लगाना हो तो तुम कौन-सा पेड़ लगाओगी?
तुम वही पेड़ क्यों लगाना चाहोगी?



मैं अपने बगीचे में .... का

पेड़ लगाऊँगी क्योंकि ....

....

पहचानो और मिलाओ

यहाँ कुछ पत्तियों के बारे में कुछ वाक्य दिए गए हैं। वाक्यों को सही चित्र से मिलाओ।

पत्ती पहचान पा रही हो तो उसका नाम भी लिख दो।

- लंबी पतली पत्ती जो आगे से नुकीली है।

  ....



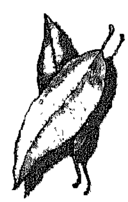
- नीचे से गोल आगे जाकर नुकीली हो जाती है।

  ....



- जिसके किनारे लहरदार हैं।

  ....



- गोल पत्ती

  ....



आओ करें खोज

रबड़ के पेड़ की छाल पर चीरा लगाने से दूधिया रस निकलता है। पता करो किन पेड़ों या पौधों के पत्ते को तोड़ने पर दूधिया रस निकलता है। अब पत्तों को सुखाकर चिपकाओ।

- ✧ जिनसे दूधिया रस निकलता हो।
- ✧ जो चिकनी होती हों।
- ✧ जिन पत्तियों की नसें उभरी हुई होती हैं।

कैसे पड़े नाम?

हम दाँतों को मंजन से माँजते हैं। इसीलिए मंजन को मंजन कहते हैं। अब सोचो और लिखो इनके नाम ये क्यों हैं?

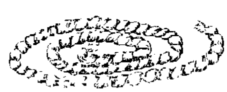
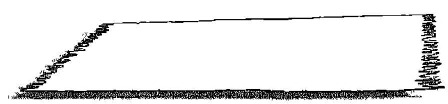
दातुन ....

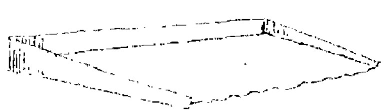
छलनी ....

मथनी ....

पहचानो तो

इनमें से कौन-सी चीज़ किससे बनी है?




सही जगह पर (✓) का निशान लगाओ।

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सबसे घना			
सबसे ऊँचा			
चढ़ने में सबसे आसान			
सबसे मोटा तना			
सबसे बड़े पत्ते			
सबसे मीठा फल			
फल खाना सबसे आसान			

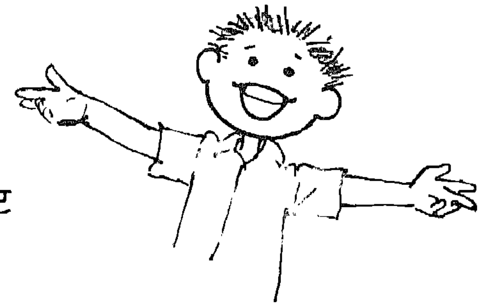
[illegible]

[illegible]	[illegible]
....	....
....	....
....	....
....	....

[illegible]

- किन फलों को छिलके के साथ नहीं खा सकते?
- कौन-से फल हर मौसम में मिलते हैं?

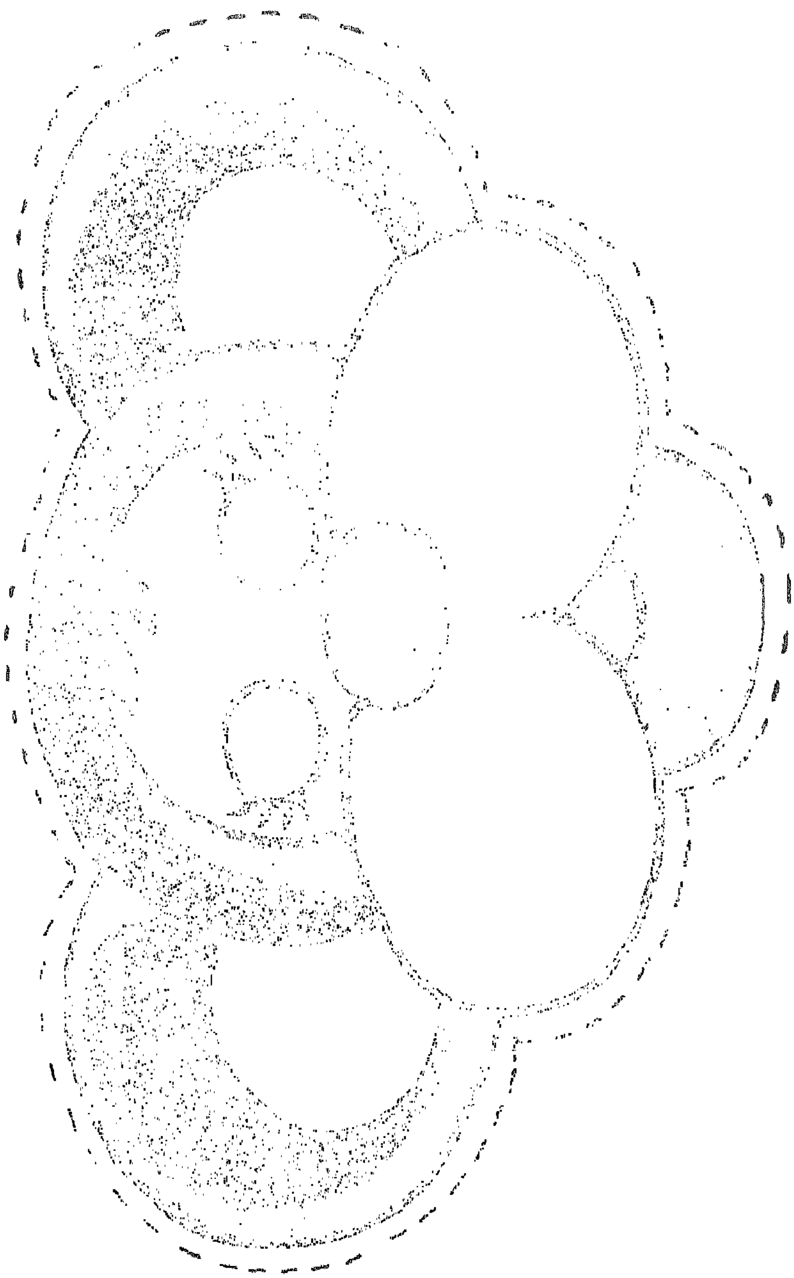
ज़रूरी सामान : रंग-बिरंगी पेंसिल, शार्पनर (छीलनी), कार्डशीट या पोस्टकार्ड, गोंद और स्केच पैन





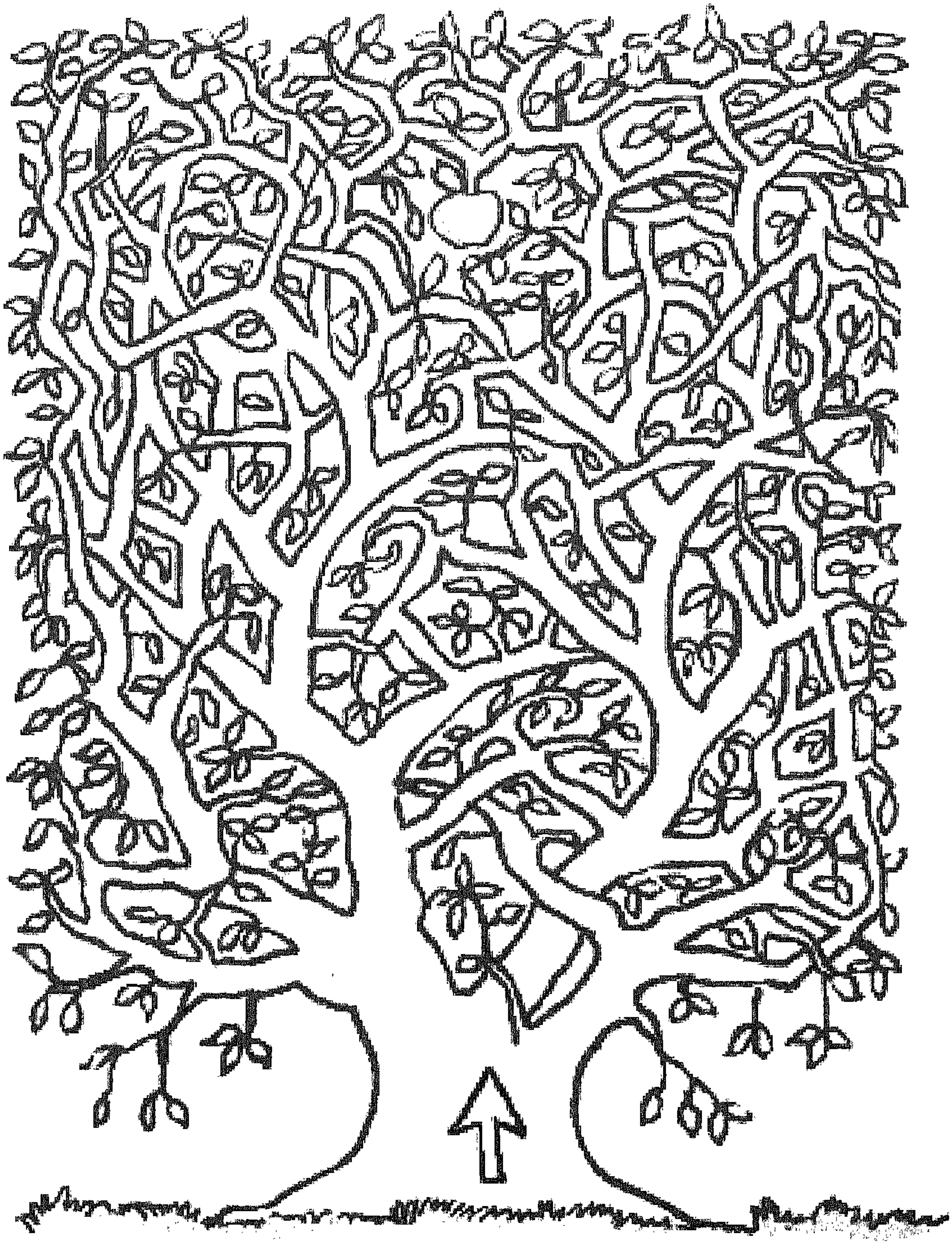
अपने आसपास के पेड़-पौधों से छोटी-छोटी फूल-पत्तियाँ इकटठी करो। इन्हें किसी मोटी किताब में अलग-अलग पन्नों के बीच दबाकर रख दो। एक-दो दिन बाद जब वे लगभग सूख जाएँ तो उन्हें मनचाहे कागज़ या कार्ड बनाकर उस पर चिपका दो। चिपकाने के लिए सादा पोस्टकार्ड भी ले सकते हो। स्केच पेन से जो भी संदेश तुम लिखना चाहती हो, लिख दो।

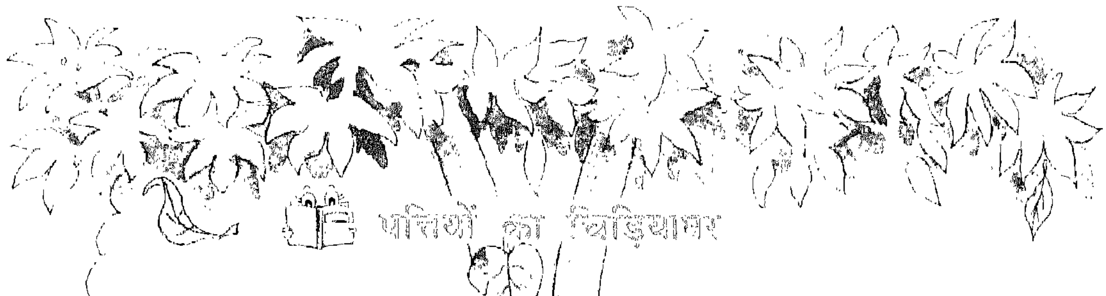
ऐसे ही सुंदर-सुंदर कार्ड बनाकर अलग-अलग अवसरों पर अपने संगी-साथियों को भेजो।



बच्चों से ऐसा मुखौटा बनाने के लिए कहें। इसी प्रकार से अन्य जानवरों के मुखौटे बनाए जा सकते हैं। इन मुखौटों को पहनाकर उनसे अभिनय करवाएँ।

फल तक कैसे पहुँचोगे?





पत्तियों का चिड़ियाघर

पेड़ों के कपड़े हैं पत्ते
पेड़ उन्हीं को पहने रहते
पेड़ों के बस्ते में होते
खेल खिलौने सस्ते सस्ते।

पत्तों का भी है संसार
पत्तों के हैं कई प्रकार
हर पत्ते का है आकार
केले बरगद और अनार।

पत्तों को छूकर तो देखो
उनसे हाथ मिलाओ तुम
हँसी-खेल में, बातचीत में
उनको मित्र बनाओ तुम।

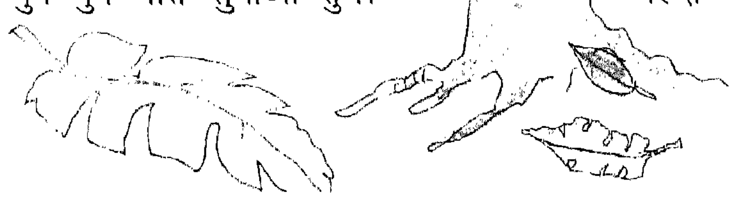
अखबारों की तह के भीतर
उनको नींद सुलाओ तुम
अगर नींद से जाग उठें तो
गुन-गुन गीत सुनाओ तुम।

इन सूखे पत्तों से खेलो
मिलकर इन्हें सजाओ तुम
ये सारे दिलचस्प नमूने
कागज़ पर चिपकाओ तुम।

पीपल पेट, पूँछ डंडी की
पैर कनेर के, इमली की नाक
हरी घास की लंबी मूँछ
कहीं बबूल, कहीं पे ढाक

होते हैं बेजान न पत्ते
उनकी होती खास जुबान
कोई पत्ता लगता चेहरा
कोई है चोटी की शान

पेड़ों के पत्तों से बच्चो
बनता सुंदर चिड़ियाघर
सैर करो तुम आज उसी की
जल्दी आओ करो सफ़र।

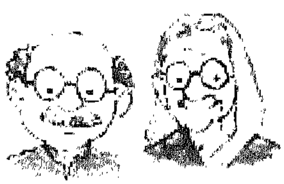


अरविंद गुप्ता

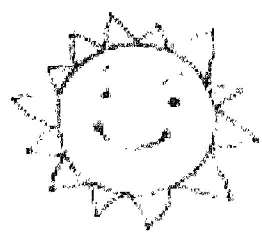
नाना-नानी के नाम



उधम करूँ पर रोक न एक,
तनिक किसी की टोक न एक।
झिलमिल करती बाग में घाम
सुबह सुनहरी चहके शाम।
गरमी की ये सभी छुट्टियाँ
नाना-नानी जी के नाम।



मामी मूर्ख बनाएँ एक,
नानी कथा सुनाएँ एक।
दिनभर गपशप और आराम,
मम्मी जी का बस यह काम।
गरमी की ये सभी छुट्टियाँ
नाना-नानी जी के नाम।



गरम कचौड़ी सुबह को एक,
दूध जलेबी पहले एक।
थोड़े जामुन, ज़्यादा आम,
काले-काले पीत ललाम।
गरमी की ये सभी छुट्टियाँ
नाना-नानी जी के नाम।



चिढ़ाते रहते मामा एक
फुलस्टॉप न कॉमा एक।
मौसी करतीं प्यार तमाम,
इन सबको मैं करूँ प्रणाम।
गरमी की ये सभी छुट्टियाँ

नाना-नानी जी के नाम।।

गोपीचंद श्रीनागर